

पुस्तक,

गुरुदेव श्री मांगीसाहनी म सा का दिव्य जीवन

सम्बद्ध

मुनि हस्तिमल्ल (मेवाड़ी)

प्रकाशक

बीर वर्धमान पुस्तकालय कुंवारिया (राज),

बीर संबत्

२४९२-विक्रमाब्द. २, २२ अश्वय तृतीया सन् १९६५-४-

अन्यत्र प्रवेश

१२५० प्रतिष्ठा - राज संस्करण

डाक सर्वे

१ रु- २५ मय पैसे—

मुद्रक

बसंत प्रिंटिंग प्रेस अवन्ति घणामाई दमास,

श्री कांटा रोड, अहमदाबाद ।

प्रामिस्थान

श्री जैन ज्ञान भण्डार, महसोकी पीपड़ी, बावा-कांठरोसी (राज)

सप्रेम भेट

श्रीमान् \_\_\_\_\_

की सरक से

उपपत्रमे

## समर्पण

उस प्रकाश पुञ्जको,  
जिनके अमर सन्देशों ने, सेवक-को उठाने में प्रेरणा दी ।

जिनके आशिर्वाद से,  
मैंने सयम पथ पर बढ़नेका सोहसा किया ।

जिनका पवित्र नाम लेकर,  
मैं सफलता की राह में बढ़ रहा हूँ ।

जिनके पवित्र कर कमलों से,  
आचार की दीक्षा और विचार की,  
ज्योति पाकर मैं धन्य-धन्य हो गया ।

उन परमश्रद्धेय गुरुदेव श्री!

“ माङ्गीलालजी महाराज सा. को

“ सविनय ”

सभक्ति

समर्पित

मुनि हस्तिमल्ल (मैवाड़ी)

— श्री

प्रश्न—क्या है, बतलाइये ।

उत्तर—यह है, पत्र सीधिये

## गुरुदेव का दिव्य जीवन

विषय	पृष्ठ संक
समर्पण	C
अष्टमे संयमी जीवन	E
वर्षावास ओर संकट की मादी	F
दानवीर दातामोक्षी सृष्टि	G-H
प्रकाशक की ओर से	I
प्राक्कथन	१ — ३
पृ श्री एकसिंघवासकी म की	१ — ९
सम्प्रदायका संश्लिष्ट परिचय	
भाष्यार्थनामावलि	तिलका
वलि—कथ का पहा	९ — १०
राजस्थान देश—	११ — १३

जन्म स्थान—	१३ — २३
स्मरणाक्षलि अष्टकः	तिरङ्गा
चरित्र नायकजी की शिक्षा और दीक्षा—	२३ — २५
शिक्षा और गुरु वियोग	२५
चातुर्मास सहित वर्णन	२६
मुनि जोधराजजी म का वियोग	४० — ४१
सत्ता का त्याग	५५ — ५६
जीवन प्रेरक सन्त का वियोग	५८
सभीको छोड़ चले	११७
गुरु स्वीकृति स्थान पर ही चातुर्मास	११८
जीवनके विशिष्ट प्रसंग	११९—१२८
गुरुगुण यशोगान विभाग २	१२९
जिन्दगी जीत गये	१६०
परम पूज्य गुरुदेव	१६३
श्रद्धाक्षलि विभाग ३	१६९ — १९६
शुद्धिपत्र	

# जन्म से संयमी जीवन, मं स्रि स प रि च य रे स्वा ।

मातृभूमि—मेवाड़देश

अन्मभूमि—राबकरेड़ा

पितृनाम—धीमान् गन्धीरमन्त्री :

मातृनाम—धीमगनकुंवरबाई

वश—बीसा भोसवाड़

गोत्र—संघेती

अन्मसंस्कृ—विक्रम स १९६७ पौषी अमावस्या गुरुवा

अन्म नाम—मांगीश्वरजी

दीक्षा संवत्—वि स १९७८ वैशाख शुद्धा तीर्थ गुरुवार

दीक्षा वय—दशवर्ष ४ माह तीन (३) दिन

मुनि नाम—धी बुद्धिचन्द्रजी अपर नाम (मांगीश्वरजी) महाराज

दीक्षास्थान—रायपुर (मेवाड़) छेत्रेदीचन्द्रजी बगूड़ के घर

दीक्षा गुरु—पूज्य पद्मिदासजी म सा गुरु सेवा का संयोगनौबर्ष,

बाईमास बल्लमनगरमें काव्यर्ष सं १९८७ श्रावणमास

विषागुरु—मेवाड़ केसरी मुनि श्री बोपरामजी महाराज सा

अध्ययनः—सिमित संस्कृत प्राकृत एव सम्पूर्ण आगमों का वाचन  
और थोकड़ोंके ज्ञाता

कलावृत्ति—शास्त्रीय व्याख्यान, लेखनकला, पात्ररंगाई आदि

युवाचार्य पद—वि. स. १९९३ जेष्ठ माह, लावासरदारगढ (मेवाड)

विद्यागुरुवर्यकी सेवा—२० वर्ष ५ माह, आश्विन शुक्ला पंचमी  
शुक्रवार कुंवारिया में स्वर्गवास

पदत्याग—वि सं २००५ मिंगसर, माह जूनदा (राजस्थान)

विहारस्थल—मेवाड, मालवा, मारवाड, हाड़ोती, गुजरात, झालावाड,  
महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, बम्बई, देहली, आगरा, ग्वालियर,  
भोपाल, इन्दौर उज्जैन

हस्त दीक्षाएँ—नौ को दीक्षाएँ दी

पदवियों से विरक्त—मुनिपद के अलावा शास्त्रीयपद और लौकिक-  
पदवी का त्याग

चातुर्मास सख्या—नौ चौमासे पूज्यश्री के साथ (१२) बारह मेवाड़  
केशरीमुनिश्री जोधराजजी म सा. के साथ, शेष २१  
एव ४२ चातुर्मास-सर्वायु ५२ वर्ष ५ माह १५ दिन।

स्वर्गवास—वि. सं. २०२० जेष्ठ सुदी १४ गुरुवार सहाड़ा  
(राजस्थान)

शिष्यगणः—मुनिश्री हस्तीमलजी म पुष्कर मुनिजी, मुनिश्री कन्हैया-  
लालजी म ठाणा ३

जहाँ क्रिये गये चातुर्मासीक गांव और सम्यत् की यादी

## चा तु र्मा स

गाँव	संख्या	विक्रम संवत्
रामपुर (राज)	दो	वि सं ७९ + ८५"
देवगढ़ "	दो	" ८० + ८९"
पद्मासोही "	एक	९०"
बामछा "	एक	९१"
कुंवारिया "	तीन	८१ + ९८ × २००२"
भाकोला "	एक	" ८२"
ऊँठास "	दो	" ८३ + ८७
छोटी सादही "	एक	" ८४"
मावसी "	एक	८५"
सरदारगढ़ "	दो	" ८८ + ९२
देसवाड़ा ,	दो	" ७८ + ९३
समणोर "	एक	" ९४"
सादही (मारवाड) "	एक	" ९५"
गोखुदा "	एक	" ९६"
समवाड़ "	एक	" ९७"
नाई (उदयपुर) "	तीन	" ९९ + २००१ +

गाँव	संख्या	विक्रम संवत्
वाघपुरा ,,	तीन	२००० + २००५- २०१३
मसूदा ,,	एक	२००३"
रेलमगरा,,	एक	२००४"
रामपुरा (म प्र.)	दो	२००६ + २०१०
उज्जैन ,, "	एक	२००७"
लक्ष्कर ,, "	एक	२००८"
बम्बई चपोकली (१) दो (१) बम्बई मलाड़		२०११ + २०१२"
बनेड़िया (राज)	एक	२०१४"
राजकरेड़ा ,,	एक	२०१५"
भीम ,,	एक	२०१६"
कनकपुर ,,	एक	२०१७"
पलानाकलां,,	एक	२०१८"
भादसोड़ा,,	एक	२०१९"
गाव २७	चातुर्मास ४२	

जन्म, संयम ओर स्वर्ग, इन तीनमें एक गुरुवार का योग मिला



## दानवीर-दाताओं की सूचि

- ३५० श्री श्वेताम्बर स्वा जैन संघ "राज करड़ा" (राजस्थान)
- १५ श्री श्वेताम्बर स्वा जैन श्री संघ "पड़ासौली" --
- १३५ श्री श्वेताम्बर स्वा जैन श्री संघ "बाणपुरा" --
- १०१ श्री प्यारचन्दजी मिसरीसासजी संघेती "रुनकरड़ा" --
- १०१ श्री राजमसजी घनराजजी नौकरवा "कटाळी" --
- १०१ श्री भासीरामजी घनराजजी-कौठारी "छन्नीपुस्तकर्मदार" --  
 अमदाबाद (गुज)
- १०१ शा कजोडूमसजी बोलियाजी सुपुत्री "टम्बाईजी "रायपुर" राज
- १०१ श्री मैईससजी तेजमिहजी बुळिया "रायपुर" --
- १०१ श्री पनाससजी भंवरसासजी बडोझ "रायपुर" --
- १०१ श्री जोराबरसजी धर्मचन्दजी रूंगरवास 'रायकरड़ा' --
- १० श्री नानासासजी शंकरसासजी रूसाड "फतानाकर्म" --
- ७५ श्री श्वेताम्बर स्वान्तवासि जैन श्री संघ "आमेसर" --
- ७१ श्री घनराजजी मोहनससजी कौठारी "मट्टण" --
- ७० श्री श्वेताम्बर स्वान्तवासि जैन संघ "शीवपुर" --
- ५१ श्री श्वेताम्बर स्वान्तवासि जैन संघ "कासदेह" --
- ५१ श्री मुरासासजी उदबसासजी बाबेस "कटाळी" --
- ५१ श्री राजमसजी जेमीचन्दजी नौकरवा --
- ५१ श्री मौरीरामजी शान्तिसासजी माठ मीम --

- ५१ श्री सोहनलालजी भंवरलालजी गुडलिया,, ”
- ५१ श्री कन्हैयालालजी बाफना की धर्मपति सोहनबाई “शम्भूगढ़”, ”
- ५१ श्री उदयलालजी जेठमलजी ओस्तवाल “भीटा” ”
- ५१ श्री नाथूलालजी रोशनलालजी कछारा कुंवारिया ”
- ५१ श्री चीमनलालजी रीखचन्दजी जीरावला अमदाबाद (गुज) ”
- ५१ श्री स्वर्गीयश्रीमति रुपाबाई की पुण्यस्मृतिमें ” ”
- ५१ श्री भैरूलालजी बगीलालजी झगंडावत डबोक ”
- ५१ श्री दौलतरामजी चांदमलजी मारु शम्भूगढ़ ”
- ५१ श्री बहोतलालजी के सुपुत्र भंवरलालजी अर्जुनलालजी  
डालचन्दजी बडालमिया सगेसरा ”
- ५१ श्री ख्यालीलालजी विजयसिंह दलाल नाई ”
- ५१ श्री छगनलालजी इन्द्रमलजी मादरेचा काकरवा ”
- ५१ श्री मिश्रीलालजी रमेशचन्द्र कौठारी बली ( जसाखेड़ा )
- ५० वकील सा श्री चून्नीलालजी भवरलालजी पोरवरणा (वलभनगर)
- ४६ श्री श्वेताम्बर स्था जैन श्री सध “खेमली” ”
- ३१ श्री कंवरलालजी शोभालालजी आंचलिया मौतीपुर ”
- ३१ श्री चाँदमलजी माधुलालजी रांका भादसोड़ा ”
- ३१ श्री गणेशलालजी अम्बालालजी सिंघवी गौराणा (राज) ”
- ३१ ” जमनालालजी गहरीलालजी डागा रायपुर ”
- २५ ” जवाहरमलजी रोशनलालजी गन्ना भीम ”
- २५ ” वरधीचन्दजी गोकूलचन्दजी महता ” ”
- २५ ” कन्हैयालालजी सिंघवी महेला की पीपली ” ”

- २५ " पासीरामजी देवीलालजी हींगड हास मु बरणोत्रा "
- २५ " मगनलालजी मुखलालजी छोडा सिन्दू "
- २५ , प्रतापलालजी राजमलजी बया "छीपाका भाकोला "
- २५ " कन्हैयालालजी गरोमलालजी चौधरी कौस्त्यारी "
- २१ " मनोहरलालजी कौठारी नाई "
- २१ " नानालालजी बालचन्द्रजी ओस्तवाल मगलबाद "
- २१ " गहरीलालजी महताकी धर्मपति सोहनबाई,  
पंक्तिधितपके उपलक्षमें, अमदाबाद
- २१ " कन्हैयालालजी पान्दमलजी परमार पासा "
- २१ " बयन्तिलाल गोर्धनदास तुर्लिया मयङ्कुमारनी बस  
सुरीमा अमदाबाद
- २१ , कजोडीमलजी मोहनलालजी सातेड गण्ड ( राज )
- २१ " सन्तोक्चन्द्रजी प्यारचन्द्रजी सहस्रोत देवगड "
- २१ " मोहनलालजी मदनलालजी संचेती राजकरेडा "
- २१ , कजोडीमलजी सुबालालजी ठाठड गण्ड "
- २० " येताम्बर स्वा जैन धी संघ कोबला "
- ११ , पन्दनलालजी हीरालालजी माड मीम ,
- ११ तेजपालजी फठलालजी सीमार माबली "

इस ग्रन्थ के प्रकाशनमें उपरोक्त सज्जनोंने इन्स की सहायता देकर इस पुष्पकाम में अपना हार्दिक सहयोग प्रकट किया है एतदर्थ इनका सन्मन्त्र आभार प्रकट करता हूँ ।

## व्यवस्थापककी ओर से

स्व० पूज्य गुरुदेव श्री मांगीलालजी महाराज साहब का जीवन चरित्र आपके हाथों में है। यह चरित्र कैसा बना इसके निर्णय का भार आप पर है। पुस्तक के स्थाई महत्व को ध्यान में रखकर इस पुस्तक में अच्छे कागज और सुन्दर टाईपों का भी उपयोग किया है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक पं० मुनि श्री हस्तीमलजी महाराज हैं। आपका जन्म वि सं १९७९ चैत्र शुक्ल तेरस को हुआ। पलाना कला (मेवाड) ग्राम के निवासी श्रीमान् नानालालजी दुगड वीसा ओसवाल के आप पुत्र हैं। आपकी माता का नाम लहरबाई अपर नाम मोतीबाई है। गुरुदेव का सम्पर्क पाकर आपने सोलह वर्ष की अवस्था में वि सं १९९६ की माघ कृष्ण प्रतिपदा के दिन पलाना में दीक्षा अंगीकार की।

दीक्षा लेने के बाद गुरुदेवकी सेवामें रहकर काफी अनुभव प्राप्त किया। आपकी गुरुभक्ति अद्वितीय और असीम है। सामाजिक उत्थान और संगठन के लिए आप सतत प्रयत्न शील रहते हैं। साथ ही जैन धर्म का प्रचार, साहित्य सृजन, जैनेतरों को प्रबोध आदि प्रवृत्तियों की ओर सदा से आपश्रीका विशेष लक्ष्य रहा है। आपने स्वर्गीय पूज्य गुरुदेव की २४ वर्ष तक निष्ठापूर्वक सेवा की है। उस सेवाका ही यह प्रताप है कि आपकी समाज में अच्छी प्रतिष्ठा है। आपने अनेक प्रान्तों में विहार का जैन धर्मका अच्छा प्रचार

किया। आपके प्रिय गुरु, आता मुनि भी कन्हैयालालजी म० एवं  
 विनय शिष्य श्री पुन्य मुनिजी महाराज भी अच्छे सेवामात्री और  
 विद्या रसिक सन्त है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में श्रीमान् पारबन्दजी सा संघेटी जो  
 कि परित्रनायकजी के संसार पक्ष में काका के माई छगत ह उनमें  
 सहयोग अत्यन्त सराहनीय रहा साथ ही छत्री पुस्तक मण्डार के  
 मास्त्रि श्रीमान् धनराजजी साहब पुनक इत्य व्यसाही एव अनेक  
 छुम प्रवृत्तियों के सर्वक श्रीमान् राजमठ जी सा कोठारी इन  
 सम्बन्धों के सौम्य आग्रह और तनमन धन के सहयोग से इस ग्रन्थ का  
 प्रकाशन हो सका है। तथा इस ग्रन्थ के प्रकाशन का श्रेय सहायता  
 देनेवाले दानी महानुभावों को अधिक है जिनके सत् प्रयास से एवं  
 धन के अनुभवों से यह परित्र प्रकाशित हो सका है। अतः इन  
 सबका मैं अत्यन्त आभारी हूँ।

—दीरालाल कन्हैयालाल जैन।

# ज्ञान और वैराग्य से परिपूर्ण

## पुस्तके

### मननपूर्वक अवश्य पढिये

रचयिता—पं० मेवाड़ी मुनि श्री चौथमलजी म० सा०

यशोधर चरित्र	३७ नये पैसे
विद्या विलास चरित्र	२५ " "
हंसवच्छ चरित्र	२५ " "
अमर चरित्र ऋषिदत्ता चरित्र	३७ " "
विक्रम-हरिश्चन्द्र	२५ " "
भीमसेण हरीसेन	३१ " "
प्रद्युम्न चरित्र	४४ " "
विपाक सूत्र रास	५० " "
चन्द्रसेन लीला	३१ " "
चन्दनशाला चरित्र	१५ " "
नवरत्न किरणावली	५० " "
अनमोल मणि मंजूषा	५० " "
लीलापत झणकारा	२६

सैतली पोष्टिका	१५	०
कमल कुसुम कविका	१७	०
महेश्वरदत्त कवि	१७	०

बनेक एक बिरहे, - माई पेपर पर प्रकाशित

पत्रों से अपने स्वनिर्देशित को

सुशोभितकर, ज्ञान छीबिये

महामंथ लवकार मू० ५० नये पैसे

श्रीराम सुपन-माठ मंगल मू० २५ नये

सोमल सुपन (बन्धुगुप्त महाराज के)

मू० १४ २५ नये

हाक बर्ष पूरक होगा

पुस्तकें व श्रीपत्र मंगल का पत्रा-

भी दिनज्ञान मण्डार

मू० १० महलों की पीपली

बाप-बांकेली (राजस्थान)

## प्राकथन

किसी भी राष्ट्र की महानिधियों में संतों के व्यक्तित्व और कृतित्व का विशिष्ट महत्त्व रहता आया है। वस्तुतः राष्ट्रका वास्तविक उत्थान संतों की स्नेहसिक्त वाणी का ही परिणाम है। जनता के हृदय पर स्वभावतः संतों की सयम शील वृत्ति सदैव घर किये रहती है। जिसके परिणामस्वरूप जनता को मानवता-मूलक सद्भावना के सुदृढ़ सूत्र में बाँधे रहते हैं। संतों का निश्छल व्यवहार, निरपेक्ष वाणी और उनकी सम्यकमूलक साधना जीवन की नैतिक अनमोल धरोहर है।

जैन-संस्कृति व्यक्ति मूलक न होकर गुणमूलक परंपरा के प्रति आस्थावान है। इसलिए बहुत प्राचीनकाल से ही जैन धर्मावलम्बियों में गुरुपद का स्थान सदा से ऊँचा और आदरणीय रहता आया है। समान राष्ट्र और धर्मका नैतिकता मूलक भार मुनियों के सुदृढ़ स्कन्धों पर रहता आया है। राजस्थान की लोकचेतना और क्रांतिकारी धर्म भावनाओं को प्रोत्साहन देने में शताब्दियों से जैनमुनियों ने जो योग दिया है वह आज भी अनुकरणीय है। राजस्थान की ही नहीं अपितु समस्त भारत की लोकसंस्कृति पर इन प्रबुद्ध चेतनाओं का आज भी अक्षुण्ण प्रभाव है। उनकी वाणी और सयमशील वृत्ति से जनता आज भी आस्थावान है।

गुरुदेव श्री मागीलालजी महाराज राजस्थान के ऐसे ही महान संतों में से एक थे जिनके व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव न केवल मेवाड़ तक ही सीमित है अपितु सम्पूर्ण राजस्थान, मध्य-प्रदेश जैसे सुविस्तृत प्रदेशों में भी इनके प्रति श्रद्धानिष्ठ व्यक्तियों



का अभाव नहीं है। इनकी संयमशील वृत्ति, अतुल्यमूलक सुमधुर वाणी और निष्कपटता आदि कुछ ऐसे गुण थे जिनमें से एक भी जीवन में साकार हो जाय तो मनुष्य तब परात्म पर पहुँच सकता है। मझे ही मुनि श्री मांगीलालजी म० बहुत प्रसिद्ध मुनियों में न रहे हो पर उनमें जो साधुता को शोभित करने वाले महाम गुण थे उनका अभाव मझे ही था न हो पर इनके समकक्ष बहुत कम व्यक्ति हैं। यह तो निःसंकोच स्वीकार करना ही पड़ेगा। सच बात तो यह है कि वे साधक थे। संयम उनकी आत्मा में रमा हुआ था। प्रशंसा और प्रसिद्धि को वे पीतृगतिक वस्तु मानते थे। आर्य और अनार्य के प्रति उनकी आत्मा समान थी। वे आत्मा के उपासक थे। सतत स्वाध्याय आत्मचिन्तन और मनन उनके जीवन की मौलिक विशेषताएँ थीं। मानवरूप में साक्षात् बहती हुई ज्ञानगंगा थे। ज़िपर भी गय, अश्वमेध, मनन, एव चिन्तन के सूत्रों और उच्चैः हुए क्षेत्र हरे-भरे हो गये। मध्य प्रदेश उत्तर प्रदेश राजस्थान और विरोपतः मेवाड़प्रदेश के जन-जीवन में महा-मेघ के समान शत-शत धाराओं में बरस कर बिछेर दिया। अनेक स्थानों पर बलिप्रथा के रूप में प्रचलित पशु हत्या बन्द कराई, अश्वबिरबास और अज्ञानता के अधार पर फैले हुए सुसुप्तोन्नत मृतप्रेतचारु सर्षीले पीति रिवाज का आपने हृदय से अन्मूलन किया। उनकी सरलताने अज्ञान-मूलक कई मामों के अज्ञानों का समेटा। समस्याओं का समाधान मिला। वर्षों के द्वेषान्ति को मुक्ति मिली। सबकुछ मिलाकर कहा जाय कि उनका सम्पूर्ण जीवन सम, दम और अम की त्रिवेणी पर आधारित था। यह कहना मुक्ति संगत जान पड़ता है कि मनुष्य जिनके उपासना करण आया है वह वैसा ही बन जाता है। जैन परम्परा में भीतरागत्य का ही महत्त्व है। इसीलिये अमण्य-संस्कृति त्याग प्रधान रही है। निवृत्ति मूलक प्रवृत्ति

उसका आदर्श है । सयम उसका प्रशस्त पय है । तात्पर्य यह है कि व्यक्ति उत्थान पतन के लिए स्वय दोषी है । उनके विकास अवरोध में कोई साधक बाधक नहीं किन्तु यह निश्चित है कि महापुरुषों का गुणानुवाद जीवन को सुगधित बनाता है । उनके जीवन के एक-एक प्रस ग से मानव को बडी भारी प्रेरणा मिलती है । इसलिए मानव-जीवन के विकास में सन्तों के जीवन चरित्र का सदा से ऊंचा स्थान रहता आया है । सन्तों का जीवन मानव-जीवन की एक ऐसी प्रयोगशाला है जिसके परीक्षण का इतिहास अतीत की सीमा से परे है । इन्हीं महान्, प्रेरणाओ से सश्रद्धा उत्प्रेरित होकर गुरुदेव के जीवन के किञ्चित प्रसगों का आलेखन इस छोटी सी पुस्तिका में किया है । आशा है पाठकगण इसका समुचित आदर करेंगे ।

शुभेच्छुक { ख्यालीलाल जैन "उदयपुर"  
गहरीलाल

## पूज्य श्री एकलिंगदासजी म. की सम्प्रदाय का संक्षिप्त परिचय

भगवान महावीर के निर्माण के पश्चात् जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया वैसे-वैसे साधु परम्परा में भी बहुत कुछ मतभेद होता गया । इसी मतभेद के कारण उनके निर्वाण के ६५० वर्ष बाद अनेक गच्छ स्थापित हो गये । गच्छों की अनेकता के कारण उनकी परम्पराएँ भी विविध होने से अनेक प्रकार की हो गई हैं । गच्छों का विविध जाल फैल जाने पर भी उनमें प्रकाण्ड दार्शनिक सिद्धान्तवेत्ता प्रभावशाली और विविध विषयों के ज्ञाता अनेक आचार्य हो गये हैं । जिन्होंने अपनी महत्वपूर्ण कृतियों से जैन वाड मय की समृद्धि में सम्म-रणीय योगदान दिया है । भगवान महावीर द्वारा प्ररूपित तत्त्व ज्ञान तथा आचार शास्त्र ऐसी ठोस भूमि पर स्थित था कि उसे

लेकर इतने वर्षों बाद भी कोई खास प्रस्थेम्बनीय मत भेद नहीं हुआ। जैसा कि वैदिक धरान या ब्राह्मण परम्परा में दृष्टि गोचर होता है या बौद्ध परम्परा में भी दिखाई देता है। परन्तु निम्नोक्त बाह्य क्रियाकारणों को ही धर्म मानकर समय-समय पर अनेक गच्छ गहन होते गये। क्रियाकारण धर्म का अंग बन जाने से धीरे धीरे सध में शिथिलता आने लगी। फल स्वरूप वह अनेक विह्वलियों का आगार बन गया। कठोर सध का पालन करने वाले साधु प्रायः चैत्यवासी हो गये। यहाँ तक कि यह वाद अपनी पराकाष्ठा तक आ पहुँचा। जो साधु समाज पहले खंगल, अरखव वन, उद्यान या धर्मशाला आदि जहाँ कहीं स्थान मिल जाता वहाँ सुखपूर्ण निवास करता था; वह अब मठों की तरह स्थापन बनाकर रहने लगा। साधु समाज यति रूप में परिचलित हो गया। यह यति समाज अनेक प्रकार के आराम का सेवन करने लगा। बहुत से यति गृहस्थों की तरह आवास बनाकर रहने लगे। भगवान का लोकाभ्युदयकारी पवित्र उपदेश बिस्मृत हो कर दिया गया था। धर्म का शुद्ध स्वरूप सर्वथा क्षुण्ण हो गया था।

ऐसे समय एक महान् कान्तिकारी श्रेष्ठ पुरुष का जन्म हुआ। यह बिलम्ब पुरुष श्री लोकाशाह के नाम से सारे स्थानवासी समाज में विख्यात है। उनके जन्म गुजरात प्रान्त में स्थित सिरोही राज्यान्तर्गत 'अरुडबाड़ा' नामक प्रान्त में विक्रमसंवत् १४८२ की कार्तिक पूर्णिमा को हुआ। उनके पिता का नाम 'हेमामाई' एवं माता का नाम 'गंगाबाई' था। श्रीमान लोकाशाह अपने समय में धार्मिक सरकारों से सपन्न एक असाधारण पुरुष थे। आपकी बुद्धि अत्यन्त निर्मल तथा महण शक्ति अद्भुत थी। अक्षर भी मोठी की तरह सुन्दर लिखते थे। धर्मकुरासता के साथ अपनी अद्भुत सूक्ष्म क कारण

राजदरवार में भी उनकी बहुत प्रतिष्ठा थी। अपने जीवन को धर्ममय बनाने के लिए उन्होंने उच्च धार्मिक ज्ञान प्राप्त किया। अक्षर सुन्दर होने से उस समय के यति समुदाय ने इन्हें जीर्ण आगमों की प्रतिलिपि करने का कार्य सौंपा। जैसे-जैसे ये प्रतिलिपि करते गये वैसे-वैसे वे आगमों के अर्थ की गहराई में उतरने लगे। इस परिशीलन से उन्होंने देखा कि आगम प्रतिपादित साधुओं के आधार तथा वर्तमान यति समाज के आचार में वही समानता कहीं है। दोनों में आकाश पाताल का अन्तर है। यह विषमता उन्हें बहुत खटकने लगी। फिर तो वे अपनी बुलंद आवाज से शास्त्रोक्त आचार का प्रतिपादन करने लगे। उनके शुद्ध आचार का दर्शन कर धीरे-धीरे उनके अनुयायियों की संख्या भी बढ़ने लगी।

यद्यपि 'लोकशाह' गृहस्थ थे फिर भी शासन की अभिवृद्धि करने में रत रहते थे। आपके प्रेरणादायी पवित्र उपदेश से प्रेरित होकर एक साथ ४५ मुमुक्षु साधकों ने ज्ञानऋषि के समीप स १५३१ में जैन दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा अंगीकार करने के बाद उन महापुरुषों ने अपने उपकारी पुरुष के प्रति कृतज्ञता प्रगट करने के लिए अपने गच्छ का नाम 'लोकगच्छ' रखा। सन् १५४२ में धर्मप्राण लोकशाह का स्वर्गवास हो गया।

इन ४५ महापुरुषों द्वारा आरब्ध लोकगच्छ उत्तरोत्तर प्रगतिपथ की ओर प्रयाण करने लगा। इनके शुद्ध आचार और विचार से प्रभावित होकर अनुयायी वर्ग में केवल श्रावक श्राविकाओं की संख्या ही नहीं बढ़ी वरन् साधुओं की संख्या भी उत्तरोत्तर बढ़ने लगी। देखते-देखते ७०-७५ वर्ष के अल्पकाल में यह संख्या ११०० तक जा पहुँची।

इस नवदीक्षित साधुओं के शुद्ध आचार से लोकगच्छ

की छितनी प्रबल वेग से उभरि हुई बतने ही वेग से अलान्तर में पुन साधुओं के शिबिल आचार के कारण उनमें हास के चिन्ह दृष्टिगोचर होने लगे । सबम अधिक फूट न इस हास में अपना योगदान दिया ।

लोकगण्ड के पट्टपर श्री मानत्री ऋषित्री म दूसरे श्री रूपत्री ऋषि एव जीवात्री म थे । श्री जीवात्री महागुरु के तीन शिष्य थे । एक श्री तुंबरत्री, श्री पृथिवरनिहत्री, एव श्री मन्त्रत्री म सा० । श्री जीवात्री महागुरु के स्वगवास के बाद यह संप्रदाय तीन विभागों में विभक्त हो गया । १-गुजराती लोकगण्ड, २ नागोरी लोकगण्ड और ३-उत्तरार्द्ध लोकगण्ड ।

लोकगण्ड के इससे पट्ट पर मति बजांगत्री हुए थे । वे शास्त्र के गहन अध्ययी थे । ऋषित्री ऋषि ने इन्हे मन्त्रम्या-महण का क्रियाद्वार किया था । सोलहवीं सदी के उत्तरार्द्ध एव सतरहवीं सदी में पाँच महापुरुष विशेष प्रख्यात हुए, जिन्होंने लोकशास्त्र द्वारा प्रख्यात धर्मश्रुति को पुनः शान्तिमय बनाया और उनके सिद्धान्त को एक नया मोड़ दिया । यदि उसी नये मोड़ को ही वर्तमान खानकवासी संप्रदाय का प्रारम्भ माना जाय तो अधिक मुक्ति स गत रहेगा । वे पाँच महापुरुष थे १-पूज्य श्री बाबराजत्री म २-पूज्य श्री धर्मसिंह की म सा ३-पूज्य श्री लखत्री ऋषित्री म०मा ४-पूज्य श्री हरत्री ऋषित्री म मा

पूज्य श्री धर्मदासत्री म० सा० अपने युग के एक महान् उद्देश्य विचारक एवं क्रियाकारी थे । ज्ञान और क्रिया आचार एवं विचार दोनों की ही आपने उत्कट, कठोर और प्रबल साधना की । शिबिलाचार की धन-घटाएँ जिनमि भिन्न कर सुखाचार का सूर्य पुनः गगनागन में अपने पूर्ण तेज से चमकने

लगा। आपने दूर-दूर तक की विहार यात्रा करके शुद्ध धर्म और शुद्धाचार का व्यापक प्रचार एवं प्रसार किया।

धर्म वीर 'लोकाशाह' द्वारा प्रेरणा प्राप्त स्थानकवासी परम्परा के क्रियोद्धारक मुनिवरों के सम्बन्ध में प्रसंगवश यहाँ एक स्पष्टीकरण कर देना आवश्यक है। इन महापुरुषों ने कोई नया धर्म खड़ा नहीं किया, और न उनकी ओर से ऐसा कोई दावा ही कभी किया गया है। पुरातन परम्परा में हीन आचार का उचित सशोधन करना, शिथिल क्रिया को कठोर तथा प्रखर बनाना, समाज में विशुद्धाचार की नये सिरे से स्फूर्ति चेतना और जागृति पैदा करना ही उनका एक मात्र ध्येय था। साधु-जीवन में जो एक प्रकार की जड़ता और आडम्बर प्रियता उत्पन्न हो गई थी, उन्होंने उसी को दूर का पथ कर शुद्ध साधु चर्या प्रशस्त किया। इसी को क्रियोद्धार कहा जाता है। क्रियोद्धार की इस आत्मालक्षी विशुद्ध प्रक्रिया में न किसी के प्रति द्वेष था और न किसी के प्रति मनोमालिन्य था। न किसी के प्रति पक्षपात की भावना थी और न किसी वर्गविशेष के प्रति अहित-कामना ही। यह तो केवल भगवान महावीर के विशुद्ध धर्म की एक-मात्र पुनर्जागृति थी।

पूज्यश्री धर्मदासजी म० सा० के पाचवे पट्टधर शिष्य छोटे पृथ्वीराजजी म० सा० हुए। मेवाड़ संप्रदाय की शाखा उन्हीं से सन्बन्ध रखती है। आचार्य श्री छोटे पृथ्वीराजजी महाराज के पट्टधर पूज्य दुर्गादासजी म० सा० हुए। उनके पट्टधर पूज्य गुरुदेव श्री हरिरामजी महाराज सा० हुए। उनके पाट पर पूज्य श्री गगारामजी महाराज बिराजे एवं उनके पट्ट पर पूज्यश्री नारायणदासजी महाराज सा० हुए। उनके पट्ट पर पूज्य श्री पूरणमलजी महाराज हुए। उनके पट्ट पर पूज्य तपस्वी जी श्री रोड़ीदासजी महाराज हुए।

पूज्य रोहीदासजी महाराज का तप बड़ा कठोर था। एक वर्ष में दो मास चमन एवं प्रतिमास दो अठ्ठाई तप करते थे। बेड़े-बेड़े की तपस्या से निरन्तर क्रिया करते थे। उन्होंने ऐसे कई अभिग्रह किये थे किन्तु दो अभिग्रह तो बड़े ही विचित्र एवं कठोर थे। इनके अभिग्रह में श्याम आहार से तो आहार करना, एवं दूसरे अभिग्रह में सांठ (बैल) आहार से तो भोजन करना, ऐसा से रखा था। ये दोनों अभिग्रह सरयपुर में मकसूर हुए। मेवाड़ में सातसौ गाँवों के लोगों को धर्मशील बनाया था। ये मकर तपस्वी एवं महान प्रचारक सन्त थे। इनके पद पर सरसिंहदासजी महाराज हुए। आप आगम शास्त्रों के सर्वज्ञ विद्वान् थे। आपकी आगम विषयक भारखाएँ तत्कालीन साधु संघ में सर्वाधिक प्रामाणिक एवं अबाधित मानी जाती थी। आपके पद पर पूज्य श्री मानमल्लजी म सा चिराज। आपका जन्म इबगड़ (महारिया) में हुआ। पिता का नाम तिलोकचन्दजी एवं माता का नाम बन्नाबाई था। आपका जन्म सं १८६३ में हुआ। नौ वर्ष की अवस्था में आपने दोहा प्रहस्य की। आप मकर शास्त्र एवं तत्कृत आचार पालने वाले सन्त थे। आपकी बचनसिद्धि के चमत्कार की गाथाएँ मेवाड़प्रान्त में काफ़ी प्रचलित हैं। सरयपुर के महाराजा सरबनसिंह आपके परम सन्त थे। आपका संवत् १९४२ कार्तिक सुदी पंचमी को भावद्वारे में स्वर्गवास हुआ।

आपके प्रधान शिष्य कबिबर पंडित मुनि श्री रिकचचन्दजी महाराज हुए। एवं आपके शय्य दीक्षित क्रियोद्धारक मुनि श्री बेनाचन्दजी महाराज हुए। इनके पद पर सिष्य से हमारे चरित्रनायक श्री मीगीलालजी म० सा० के गुरु पूज्य श्री एक श्लिगदासजी म० सा०।

पूज्य एकश्लिग दासजी म० सा० पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा० के चारखण्ड पाठ पर आचार्य पद पर चिराजमान हुए।

आप मेवाड़ में परमत्यागी और तपस्वी मुनिराज थे। सवत् १६१७ में आपका जन्म औशवाल वश में हुआ। आपके पिता का नाम शिवलालजी एवं माता का नाम सुरताबाई था। आप संगेसरा (मेवाड़) के रहनेवाले थे। तीस वर्षकी युवावस्था में वि० स० १६४७ में आकोला (मेवाड़) में गुरुवर्य श्री वेनीचन्द जी महाराज के समीप प्रव्रज्या ग्रहण की। आपने अल्प काल में ही शास्त्रों का गहन अध्ययन कर लिया था। आपकी तेजस्विता, वाक्यपटुता और क्रियाशीलता को देखकर मेवाड़ संप्रदाय के समस्त साधु साध्वियों ने सर्वसम्मति से राशमी ग्राम में वि. स. १६६८ में आपको आचार्य पद से विभूषित किया। आप अपने समय के एक अच्छे प्रभावशाली सन्त थे। आपने अपने जीवनकाल में अनेक परोपकार के काम किए, उन सबका उल्लेख स्थानाभाव के कारण संभव नहीं है। किन्तु उनके जीवन के एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग का उल्लेख उपेक्षणीय नहीं किया जा सकता।

### बलि-बन्ध का पट्टा

राजकरेड़ा-कालाभेरूँजी के सामने प्रतिवर्ष हजारों पशुओं की बलि होती थी। गुरुदेव ने अपने उपदेश द्वारा उसे सदा के लिये बन्द कर दिया। राजकरेड़ा के राजा साहब ने अमरपट्टा लिखकर पूज्य श्री को भेंट किया। अमरपट्टे की प्रतिलिपि इस प्रकार है।

॥ श्री गोपालजी ॥

॥ श्री रामजी ॥

पट्टा नंबर ३० सावत

सोध श्री राजाबहादुर श्री अमरसिंहजी बचना हेतु कक्षा राज करेड़ा समस्त महाजना का पचा कसै अपर च राज ओर पच मिलकर भैरु जी जाकर पाति मागी के अठे बकरा व पाड़ा बलिदान होवे जीरे बजाये अमरिया कोधा जावेगा। बीहरी पाती बगम- सो भैरुजी ने पातो दी दी, के मजूर है। ई वास्ते मारी तरफ से



आ बात मजूर होकर बजाप जीव, बलिदान के अमरियो कीरा  
 जावेगा। और दोषमराज और पच मिलकर धरमशास्त्रा मैरुकी  
 के बनावणी की थी, सो धरमशास्त्रा होने पर ई बातरी परसखि  
 काम कर दी जावेगा। एक अमुमन लोगो को भी खवास  
 रेवेगा क धटे जीव हिंसा मही होवे है। और जीव हिंसा न हो  
 बाकि मोपा को भी हुकुम दे दी हो है। इवास्ते माने आ खतरा  
 जीव देवाणी है। १६७४ हुती भाइवा सुरी। १।

६ केराटीमल चौठारी खवला हुकुम सु खतरा लीज दी थी।

इस प्रकार आपक उपेरा के प्रभाव से अनेक धार्मिक  
 काम हुए। आपका बि सं १६८७ में कैंठास्त्रा (बस्लमनगर) प्राम  
 म अमरान पूर्वक स्वर्गवास हो गया।

आपक अनेक शिष्य प्रशिष्य थे जिनमें मेबाइकेरारी जोधराजजी  
 म० मा० प्रखर वक्ता एवं शास्त्रज्ञ मन्त थे। आप जाति के छात्र-  
 शीष थे। आपके संयमी जीवन में भी छात्रवृत्ति की मूलक मिलती  
 थी। आप तगरियों गाँव के निवासी मोतीमिह जी के पुत्र थे।  
 आपकी माता का नाम चम्पाबाई था। आपने बि सं १७२६ में  
 बीजा प्रहय की थी। आप सम्प्रदाय में अग्रगण्य थे। हमार चरित्र  
 नायक जी के विद्यागुरु एवं अण्ड मार्गदर्शक थे। चरित्रनायक  
 जी के आप बड़े गुरु भ्राता होते थे। आपने ४२ वय तक संयम  
 की आराधना कर बि सं १६६८ में कुँबारियों गाँव में स्वर्गवासी  
 हो गये। पूरव एकलिंग चासजीम० सा० के दृष्टे शिष्य  
 मांगीलालजी म सा की विषयजीवन-पुस्तिका पाठकों के  
 हाथ में है।







राजस्थान सांस्कृतिक दृष्टि से एक महान प्रान्त रहा है। भार-

तीय सांस्कृतिक और सभ्यता के मुख को उज्ज्वल करने वाली प्रचुर विभूतियों से यह भूखण्ड सदैव परिपूर्ण रहा है। यहाँ की समाज-मूलक आध्यात्मिक क्रान्तियों ने समय-समय पर देशव्यापक जनमानस को प्रभावित किया है। सन्तों की समन्वयात्मक अन्त-मुखी साधना से राष्ट्र का नैतिक स्तर समुन्नत रहा है। उनके आदर्श, उपदेश और सयम-प्रवाह ने जो उत्कर्ष स्थापित किया, उससे शताब्दियों तक मानवता अनुप्राणित होती रहेगी। सन्तों का औपदेशिक साहित्य आज प्राचीन होकर भी नव्य और भावनाओं से परिपूरित है। समीचीन तथ्यों का नूतन मूल्यांकन भावी पीढ़ी को प्रशान्त बना सकता है। राजस्थान की भूमि की विशेषता है कि उसने एक ओर अजेय योद्धाओं को जन्म दिया तो दूसरी ओर ऐसे सन्त भी अवतरित हुए जिनकी सयमिक गरिमा आज भी स्वर्णिम पथ का सफल प्रदर्शन करने में सक्षम है, जिनकी तपश्चर्या की ध्वनि मुमुक्षु साधक को कर्णगोचर हो रही है। उनकी प्रकाश-किरणों और चिन्मय-चेतना ऐसा स्फुल्लिग जो सहस्राब्दी तक अमरत्व को लिये हुए है।

राजस्थान का एक भाग-मेदपाट-मेवाड़ के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें उदयपुर राज्य का भी समावेश होता था। इसका स्वर्णिम अतीत अत्यन्त गौरवास्पद रहा है। वीरों की कीर्तिगाथा से यहाँ की भूमि परिष्कावित होती रही है। नारी जाति का उच्चतम आदर्श यहाँ की एक ऐसी विशेषता थी जो अन्यत्र दुष्प्राप्य है। मेवाड़ का इतिहास वीरों की भव्य परम्परा का प्रकाशभूज है जिनकी आभासे अन्तर्मुखी जीवन को भी प्रकाशित किया है। यह बिना किसी संकोच के कहा जा सकता है कि मेवाड़ की संस्कृति के निर्माण और विकास में जैनों का योग सबसे अधिक और

उल्लेखनीय रहा है। प्राचीन इतिहास इस बातका साक्षी है कि एक समय या जब कि सम्पूर्ण परिचयी भारत को मेवाड़वासी जैनो ने ही संस्कृति के एक सुदृढ़ सूत्र में बाँध रक्खा था। यहाँ का जनजीवन आज भी जैन संस्कृति के मूल्यवान् स्वरूप में प्रभावित है। परंपरागत मुनिसमाज के सततविहार ने और भी जन-हृदय को संस्कृति की शक्ति में प्रकाशित किया। उपविहारी जैनमुनियों का सम्बन्ध शोषणों में रहनेवाले मनुष्यों में जगाकर राजमहलों में निवास करने वाले शासक वर्ग तक व्यापक था। उनकी साधनामिकता बाणों सभी को समानरूप से मार्गदर्शन कराती थी। उनका जोड़ और आध्यात्मिक बल इतना अनुकरणीय था कि अहिंसा का आलोक स्वयं स्फुरित हुआ करता था। मेवाड़, मेवाड़ ही क्यों? सम्पूर्ण भारत को ही तो यहाँ भी जैन मुनियों का सतत विहार होता रहा है वहाँ अहिंसा के मौखिक स्वरूप जैसे हैं। स्वभावतः जन हृदय में सुकुमार भावनाओं ने घर बनाया है। सौम्य, समत्व और नैतिकता ने अपनी निष्ठा द्वारा धर्म को आराम का वास्तविक अंग मान लिया है। इन पंथियों के लेखक का विनम्र अनुभव रहा है कि जब-जब देश का नैतिक परातल गिरा है और अहर्मण्यता का प्रभाव बढ़ा है तब-तब जैन सन्तों ने अपनी अनुभवमयी बाणी से देश को ऊपर उठाया है और नैतिक चरित्र की सृष्टिकर जनानुपम का पथ उन्मूलन किया है। यह उनका संयममय जीवन का ही प्रबल प्रताप है। जैन संस्कृति का मेवाड़ पर गहरा प्रभाव पड़ा है किन्तु हमका सही पर्यवेक्षण अपेक्षा है। पर इतना तो निरसंकोच कहा ही जा सकता है कि यहाँ की सन्त परंपरा ने इस बीर-भूमि को सर्वाधिक प्रभावित किया है।

आगामी पंथियों में एक ऐसी ही महारथी सन्त का स्वरूप परिचय कराया जा रहा है जिसने मेवाड़ को पुरुषभूमि को

अपने जन्म से पवित्र कर भारतीय जनमानस को आध्यात्मिक चेतना से परिप्लावित किया। वे हैं युवाचार्य श्री मांगीलालजी महाराज सा०। यद्यपि महापुरुषों का जीवन-काव्य, व्यापक-सत्य से इस प्रकार अनुप्राणित होता है कि उसकी गरिमा को शब्दों की सीमा में नहीं बाँधा जा सकता, तथापि गुरुभक्ति वश यह प्रयास किया जा रहा है, ताकि उनके सुरम्य जीवन के अनुभवों से हम लाभान्वित हो सकें, प्रेरणा लेकर आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त बना सकें। उनके जीवनका एक पवित्र क्षण भी यदि हमारे जीवन में साकार हो जाय तो हम अपने को वन्द्य मानेंगे। इसी महती भावना से उत्प्रेरित होकर गुरुगुण सकीर्तन का यह प्राप्त अवसर मैं हाथ से नहीं जाने देना चाहता। महापुरुषों के गुणस्तवन से आत्मा निर्मल-पथ-गामिनी बनती है। आत्मा में गुणों का प्रकाश फैलता है, यह एक सनातन सत्य है।

### जन्मस्थान :—

रत्नगर्भा मेढ़पाट-मेवाड़ की भूमि में प्रकृति सदैव अठ खेलियाँ करती रही है। यहाँ के गिरि-कन्दराओं में आत्मस्थ सौन्दर्य को उद्बुद्ध करनेवाली शक्ति और कला के उपादान विद्यमान हैं। इसलिए प्रकृति के गोद में पलनेवाली सरकृति की अजस्र धारा का प्रवाह निरन्तर बहता रहता है। उसके कण-कण में केवल भौतिक शक्ति का ही स्रोत नहीं बहता, अपितु आध्यात्मिक शक्ति का प्रवाह भी परिलक्षित होता है। एक ओर मेवाड़ वीर-भूमि है तो दूसरी ओर <sup>दुःख</sup> त्यागभूमि भी है। देश की रक्षा के लिए यहाँ के वीरों ने अपने आपको होम दिया। इसी प्रकार मानवता के नाम पर पनपने वाली अमानवीय वृत्ति के विरुद्ध झूँझने वाले भी इसी मिट्टी में उत्पन्न हुए जिनकी साधना आज भी हमें मार्गदर्शन कराती है। यद्यपि मेवाड़ की सन्त परम्परा के स्वर्णिम अतीत पर जितना चाहिए

उतना विचार नहीं किया गया है तथापि बिना मित्रक के यह कहा जा सकता है कि यहाँ की वास्तविक गरिमा सग्त जीवन में ही प्रस्तुत हुई है।

महापुरुषों की जन्मभूमि भी पक्षधरके लिये हुए रहती है। आन्ध्रदेशीय महामुनि श्री मांगीलालजी महाराज का जन्मस्थान भीलवाड़ा जिलान्तर्गत राजा जी का करेड़ा है। नगर के साथ राजाजी शब्द का प्रयोग विरोध महत्त्व का परिचायक है। कारण कि इस नाम का एक और नगर भी मेवाड़ में ही विद्यमान है, जिसे 'मोपालसागर' के नाम से संबोधित किया जाता है। विवक्षित राजाजी का करेड़ा अपना विगत गौरव आज भी सुरक्षित रखे हुए है। यहाँ के शासक देवगढ़-महारियावाले जसवंतसिंह के पुत्र रावत गोपालदास के बश यह थे, जिनको जयपुर शासन की ओर से राजा बहादुर की सम्मानित उपाधि प्राप्त थी। चरित्रमयकजी के समकालीन करेड़ा के राजा अमरसिंहजी का अपने इलाके पर बड़ा दबदबा था। उनकी बाक से किसी भी डाकुओं के बल की उनके राज्य पर डालने की हिम्मत नहीं होती थी। वे प्रजाको पुत्रवत् समझते थे और अपने इलाके को सदा समृद्ध बनाने में लगे रहते थे। चरित्र नायकजी के काम सा गणेशलालजी जोगालाल जी का इनके साथ पतिष्ठ संबंध था। आधिक श्रेय-देन के कारण राजा साहब इनकी बात का बड़ा सम्मान रखते थे। करेड़ा कल्पि आज अपनी आर्थिक दशा के कारण बहुत बिराह नगर तो नहीं रहा पर जैन सत्कृति की दृष्टि से तो हमका अपना महत्त्व आज भी पचावत् है। यहाँ भोसवासों की अच्छी संध्या है। मुनियों के वाहुमांसारि होते रहते हैं। लोगोमें धर्मप्यान की भावना प्रचुर मात्रा में पाई जाती है।

करेड़ा का सचेती बंरा अपनी कीर्तिमयी गौरव गाथा

के कारण उस जिले में प्रसिद्ध रहा है। इसी वंशमें श्रीमान् गम्भीरमलजी उत्पन्न हुए जो आर्थिक दृष्टि से तो अधिक संपन्न नहीं थे, पर धार्मिक और नैतिकता के कारण उनकी प्रतिष्ठा उच्च शिखर पर थी। सचमुच मानव का मूल्य केवल अर्थमूलक ही नहीं होता, उनकी प्रतिष्ठा के आधार होते हैं — उनके जीवन के नैतिक और निर्मल गुण। वे ही तो आदर्श की स्थापना कर भव्य परंपरा का निर्माण कर सकते हैं। संचेती-कुलभूषण गम्भीरमलजी का स्वभाव अत्यन्त कोमल और नम्र था। सरलता की तो वे साक्षात् मूर्ति ही थे। कहना चाहिए जैन जीवन ही उनके जीवन का आधार था। अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए दूसरों का उत्पीड़न उनके लिए असह्य था। उनका अपना व्यवसाय था, पर क्या मजाल कि उसमें भी किसीका शोषण हो जाय। न्याय पूर्वक उपार्जित वित्त ही उनके लिए ग्राह्य था। उनका यह सौभाग्य था कि उनकी धर्मपत्नी श्री मगनबाई भी परम विवेकवती सन्नारी थीं। पति की सेवा ही उनके जीवन का आदर्श था। सामाजिक मर्यादा पारिवारिक शील-शिष्टता और लोक लाज का पूरा ख्याल रखती थी।

पति और पत्नी का पारस्परिक सद्भाव ही कुटुम्ब और समाज में सुख और शान्ति का संचार कर सकता है। जिस परिवार में यह सुख नहीं है, वह, समाज में घोर अशान्ति पैदा करता है। यहाँ तक की पड़ोस के परिवारों की शान्ति भी खतरे में पड़ जाती है। और कलह और कल्याण में छत्तीस का नाता है। कलह का कुफल सन्तानों को भी भोगना पड़ता है। श्रीमान् गम्भीरमलजी एवं उनकी धर्मपत्नी मगनबाई अपने परस्पर के सद्भाव पूर्ण पारिवारिक जीवन से अत्यन्त सतुष्ट थे। दोनों का जीवन सन्त समागम और धर्म-



ध्यान में व्यतीत हो रहा था। इस आदरा जीवन में कमी थी तो कवच नहीं कि इन्हे कोई सम्भाम नहीं थी।

नारी जीवन की महती आर्शोदा रहती है पुत्र की। कुलरक्षा के लिए कुलदीपक अपेक्षित ही है। श्री मगनबाई के मन में यह चिन्ता सदैव रहा करती थी। पुण्योद्भव संवि० स १९६७ पौष कृष्ण अमावस्या गुरुवार को संपत्ता मगनबाई की रत्नकुची से एक बालक अवतरित हुआ। माता-पिता की प्रसन्नता का पार नहीं था। विस्तृत परिवार एवं स्नेही गण को इससे अपार हर्ष हुआ। माता पिता ने पुत्र जन्म की खुरी में वस समय की स्थिति और प्रया के अनुसार जन्म-महोरसव किया। स्वजन सम्बन्धीजनों को प्रीतिमोहन आदि से सम्मानित किया और बालक की शीर्षायु के लिए बुद्धजनों के आशीर्षकों का सनम स्वागत किया। प्रसूति-क्षण के बाद इस होनहार बालक का नामकरण-संस्कार निष्पन्न हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से बालक का नाम 'मांगीलाल' रखा गया। आयु का बहुत सा भागव्यवृत्ति करने पर जीवन में पहली बार ही मांगीलाल जैसे शिशु-रत्न को पाकर उसे आदर्श वसुधि श्री गम्भीरमल्लजी एवं जनकी पत्नी मगनबाई को कितना हर्ष हुआ होगा इसका माप ठे बोधी कर पाये होंगे। हाँ, यह ठे भिस्तान्नेह है कि करेदा ग्रँव की जिस भूमि को बालक मांगीलाल के चरणकमलों ने चिह्नित किया वह भूमि व्याज आर्य संस्कृति की एक विशेष परम्परा के लिए पवित्र तीर्थ स्थान चितमा ही महत्व रखती है।

यह एक दार्शनिक सिद्धान्त है कि यह जीवितमा अमृत शक्तियों का महाकार है। अमृत गुण सम्पदाओं का आकर है। परन्तु इस सत्तागत शक्तियों वा गुणों का वसमे कब और कैसे विकसित होगा ? कौम जीव किस समय कहाँ उत्पन्न होकर कैसे

विकास करेगा ? यह सब तो भविष्य के गर्भ में निहित है । इसका प्रत्यक्ष अनुभव तो समय आने पर ही होता है । जब-कि वह व्यक्त दशा को प्राप्त करे । इससे पूर्व तो उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती । कौन जानता था कि ' राजकरेडा ' नामके गाँव में आकर बसे हुए एक साधारण ओसवाल परिवार में जन्म लेने वाला 'भांगीलाल' नामका यह बालक भविष्य में श्रमण-संस्कृति की एक विशिष्ट परम्परा के युवाचार्य के रूप में विश्व-विश्रुत होगा । यह किसे खबर थी कि मगनबाई जैसी ग्रामीण माता ने जिस बालक को जन्म दिया है भविष्य में वह उसी की गुणगरिमा के प्रभाव से वर्तमान युग में वैसी ही ख्याति प्राप्त करेगी जैसी कि अतीत युग में स्वनाम धन्य त्याग-रत्न पुत्रों को जन्म देने वाली माताओं ने प्राप्त की है ।

माता पिता अपनी एक मात्र और चिर प्रतीक्षित सन्तान होने से इसे बड़े लाड़-प्यार से रखने लगे । साथ ही उनके समस्त परिवार के वे एक ही आशा-स्तम्भ थे ।

मानवजीवन अनेक प्रकार की विषम परिस्थितियों का केन्द्र है । इसमें अनेक तरह के उतार चढ़ाव दृष्टिगोचर होते ही रहते हैं । जीवनयात्रा में इष्ट वियोग और अनिष्ट संयोग यह जीव के स्वोपार्जित शुभाशुभ कर्मों के ही परिणाम हैं । इसी नियम के अनुसार यह मानव सुख-दुःख का अनुभव करते हुए अपनी भव-स्थिति को पूरा करता है । श्रीमान् 'गम्भीरमलजी' की आशालता अभिपल्लवित भी न होने पाई थी कि कराल-काल (मृत्यु) की भयकर अग्नि में वह भस्म हो गई । जब भांगीलाल पाँच वर्ष के भी नहीं हुए थे । तभी इनकी मृत्यु हो गई । इन्हे अपने प्रिय पुत्र की साहस पूर्ण बालचर्या में

बीज रूप से रही हुई, गुण सन्तति के भावी विकास को देखने का पुनीत अवसर नहीं मिला मन्त्र । पिता की मृत्यु से बालक मांगीक्षाएँ एवं उनकी मातृभी मगनवाई पर बय्य टट पड़ा । अब इन्हे चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दृष्टिगोचर होने लगा । नारी का गर्भ, सुख, अमिताभा, उसका सब कुछ उसके सोमाम्भ पर निर्भर है । यदि वह सुहागिन बनी रही तो वह इस लोक को स्वर्ग मानती है । यदि को सुभाकर कहती है । और दुःख में भी फूली-फूली फिरती है । यदि उसके सोहाग-बाग इरा-भरा और फूला-फूला म रहा तो उसके लिए वह अनोखा संसार उठना ही निस्तार हो जाता है कि जितना योगिनों के लिए भी नहीं होता ।

भारतीय-परिवार को स्वर्गीय सुखों का लीलास्वयं बनाने-वाली आर्ष-कुलांगना के अनेक रूपों में फली और बननी का रूप सर्वापेक्षा और महिमा-मन्डित है । किन्तु जिस समय हिन्दू परिवार की विधवा पर दृष्टि पड़ती है, उस समय सारी कामनाओं का मत्स्य रमाकर बैठी एक तरुण-तपस्विनी ही ध्यान में आती है । उसके चारों ओर सर्वेन्द्रिय सुखों की चितागिन पचकती रहती है । उसकी बालसामों की लोल-झरे किसी किनारे तक नहीं पहुँचने पाती । उसकी अमिताभों की अन्धक आँधी हृदय में हाहाकार मचा कर उठत बवंडर की भाँति उसके मस्तिष्क में चढ़ जाती है । संवमशीलता का कैसा निष्पूर निदर्शन है । सहिष्णुता की कैसी गगनाकार सीमा है । अन्धकार का कैसा अलौकिक आवरण है ? सामाजिक शत्रु का कितना मर्यादक चित्र है ।

पति की अचानक मृत्यु से, 'मगनवाई' को का असह्य दुःख हुआ वह अकल्पनीय है । इस अपार दुःख के बीच अगर

कोई सहारा था तो वह अपने पुत्र का ही । देहातों में मुश्किल से ऐसे कुछ इने-गिने परिवार मिलेंगे जिनमें विधवाओं पर वस्तुतः उतना ही ध्यान दिया जाता हो जितना सधवाओं को सहज सुलभ है । हाँ देव ! आँगन और घर में चारों ओर लालसाओं की ज्वाला धधक रही है, नाना प्रकार के मंगलमोद महोत्सव मनाये जा रहे हैं पर किसी व्यक्ति के हृदय को बेचारी करुण-कातर विधवा की मर्म वेदना छूने भी नहीं पाती । वह दूर ही से सब कुछ देख कर मन ही-मन आह भरती और चुपके से आँसू पोंछ कर परिवार वालों के सुख सवर्धन में हाथ बटाती है । आखिर क्या करे ? हिन्दू परिवार में विधवा का कुछ दायभाग भी तो नहीं । उससे भरमुँह मीठी बात बोलने वाला कोई सहृदयी भी तो नहीं है । ताने और तिरस्कार के सिवा उसे समाज से और कुछ भी प्राप्त नहीं होता ।

पति के स्वर्गवास के बाद 'मगनबाई' को श्वसुर पक्ष की ओर से साधारण सहारा ही मिल सका । पुत्री की यह स्थिति देख कर उसके पिता पोटला निवासी श्रीमान् 'अमरचन्द'जी तातेड़ ने उसे अपने घर पर ही रहने का बहुत आप्रह किया । किन्तु इस धैर्यशील नारी के हृदय का स्वाभिमान जाग उठा । उसने दूसरों के सहारे जीना दीनता की निशानी समझा । परमुखापेक्षी रहने के बजाय स्वाश्रय में जीवन व्यतीत करना ही श्रेयस्कर माना । उसने पिता के आप्रह को विनम्र शब्दों में अस्वीकार कर दिया । वह अपने घर रह कर ही चर्खा सिलाई आदि श्रम से अपना और पुत्र का निर्वाह करने लगी ।

परिवार के अन्य सदस्य मगनबाई को साधारण स्त्री समझकर प्रस्ताव करने लगे कि इस होनहार बालक को निकटवर्ती

परिवार का सदस्य को गोद दे दो वही इसका लासन-पालन करेगी। माता चाहे कितनी ही निष्ठुर हो पर क्या वह अपने छाड़ले को किसी को सौ पन को सँवार हो सकती है ? जब कि मगनबाई तो एक समझदार महिला थी। उसने आगन्तुक बन्धुओं को स्पष्ट कह दिया कि यह बालक किसी के भी गोद में नहीं जायगा। क्या मैं इतनी दुर्बल हूँ कि एक बालक की परिचर्या नहीं कर सकती ? उसका मातृद्वय जाग उठा, और मन में निश्चय कर लिया कि इसे लूब पढ़ा-लिख्य कर तैयार किया जाय चाँकि यह बालक मानो पीढ़ी के लिए कुछ आदर्श उपस्थित कर सके।

संसार में समाज का निर्माण माता ही करती है। प्रत्येक मनुष्य बहुत कुछ अपनी माता का बनावा हुआ है। व्यक्तियों के समूह से समाज बनता है और व्यक्तियों को माता बनाती है। इस तरह माता ही समाज बनाने वाली है। यदि माताएँ चाहे तो आदर्श समाज बना सकती है। मातृ शक्ति की महिमा अपार है।

सम्मान को विद्याग और और शान्ति बनाना माता का ही काम है। माता ही पुत्री को आदर्श गृहिणी और बननी तथा पुत्र को सहाचारी एवं यशस्वी बना सकती है। मर और नारी के बीचम तथा अभिष्य का निर्माण माता ही करती है। माता की महिमा पिता से भी बड़ा है। क्योंकि वह सम्मान को नव मास तक अपने गर्भ में धारण कर के उसे अपने रक्त के रस से पोषती है और फिर संसार में पैदा कर के जबतक जीती है तबतक पालती है। माता का कोमल-कोढ़ ही शक्ति का निचेतम है। माता का इक्षय बच्चे की पाठशाळा है।

माता के धर्म-संस्कार प्रतिदिन जागृत हुए जा रहे थे । उनके जीवन का यही लक्ष्य रह गया था कि बालक को अधिक से अधिक शिक्षित और सत्कारी बनाना और अपना शेष जीवन धर्म ध्यान में बिताना । तदनुसार सामायिक प्रतिक्रमण और सन्त-सती समागम में माता का काल-क्षेप होता था । मेवाड़ संप्रदाय की सतियों का आवागमन राजकरेड़ा में होता रहता था । यहाँ यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि माता की निष्ठा स्थानकवासी संप्रदाय की थी । और उसी के उपकार का परिणाम था कि सचेती परिवार में धर्म के सुदृढ़-संस्कार आरोपित हुए थे । बाल्यकालिक धर्म संस्कार सतियों के समागम और निर्मल उपदेश-श्रवण से और भी प्रबलतम होने लगे । धर्म-भावना हृदय में हिलोरे लेने लगी । चरित्र नायक की माता मगनवाई मेवाड़ संप्रदाय की सती शिरोमणि प्रवतीनी 'श्री फूलकुँवरजी की सुशिष्या श्री शृंगार कुँवर जी के परिचय में आई । इनके धार्मिक उपदेशों ने माता तथा मोंगीलाल के हृदय में त्याग और वैराग्य की भावना उत्पन्न की । पुण्योदय से जैन धर्म के महान् आचार्य संयम मूर्ति श्री एकलिंग दास जी म० सा० का नगर में पदापण हुआ । ये त्याग और करुणा की प्रतिमुर्ति थे । इनके वैराग्य पूर्ण उपदेश सुनकर श्री मगनवाई का हृदय वैराग्य से भर गया । इन्हे अत्र सांसारिक वृत्ति अखरने लगी । परिणाम की निर्मल धारा यहाँ तक पहुँची कि ससार-त्याग के लिए उद्यत हो गई । वैराग्य पूर्वजन्म के अर्जित कर्मों का फल है जो करोड़ों इन्सानों में एकाध को ही प्राप्त होता है । वस्तुतः ससार के बाह्य पदार्थ एव परिवर्तन मानव को ससार से विलुब्ध नहीं बना सकते, वरन् उसके अपने ही संस्कार जीवन-मोड़ के कारण बन जाते हैं । श्री मगनवाई में धार्मिक संस्कार थे ही, पूज्य श्री के उपदेश से उन संस्कारों ने मूर्त रूप

ले लिया। उसने पूज्य गुरुदेव के [समक्ष] दीक्षा ग्रहण करने की मांगना प्रकट की। दीक्षा लेने के पूर्व उसे बालक मांगीलाल की भी व्यवस्था करनी थी। उसने सोचा-बालक संसार में रह कर बहुत दुःखा तो आर्थिक उन्नति करेगा, अपने परिवार की वृद्धि कर उसका भरण-पोषण करेगा। पर यदि वह आत्मकल्याण के प्रशस्त पथ पर अप्रसर होगा तो संसार में अपने कर्मों का छद्म करेगा। और भ्रमण-संस्कृति की धारा को वेग देगा। यही सोच उसने अपने पुत्र मांगीलाल को बैठा कर उसके सामने दीक्षा लेने की अपनी मांगना प्रकट की। और कहा कि-बोल! अब तेरी क्या इच्छा है? क्या तुम्हें किसी के गोप्य जाना है या मेरे साथ दीक्षा लेनी है? इसपर भी बालक मांगीलाल ने उत्तर दिया कि-मां, तुमसे बढ़कर मेरा हितैषी इस संसार में अन्य कौन हो सकता है। मां तो हमेशा अपने बालक का हित ही चाहती है। तुमने अपने रक्त से सींच कर मेरा भरण-पोषण किया है, बड़ा किया है। मैं अपना सर्वस्व देकर भी तेरे उपकार से उद्यत नहीं हो सकता। आपने अपने लिए जो आत्मकल्याण का मार्ग अपनाया है, मैं भी उसी मार्ग पर चलना चाहता हूँ। अगर आप दीक्षा लेना चाहती हों तो मैं भी दीक्षा-ग्रहण करूँगा। धर्म है वह माता और पुत्र जिनके हस्ते ऊँचे विचार थे। इस कहते हैं त्वायंत्याग का प्रत्यक्ष उदाहरण। माता की सच्ची हितैषिता इसी में है कि बालक को उन्नत-पबगाभी बनाये।

उस समय पूज्य एकलिंगदासजी म सा० कोरीबल (मेवाड़) में बिराज रहे थे। माता अपने पुत्र मांगीलाल को साथ में ले कोरीबल में गुरुचर्यों में आई। गुरुचर्यों में मांगीलाल को समर्पण कर उस विद्वित बनाने की अपनी सहमति प्रकट की।

और साथ में स्वयंने भी दीक्षा लेने की भावना प्रकट की। उस अवसर पर कोशीधल का संघ एकत्र हुआ। उनके सामने माता ने मागीलाल की दीक्षा का आज्ञा-पत्र लिख कर दे दिया।

## चरित्रनायकजी की शिक्षा और दीक्षा:—

अब मागीलाल की व्यवहारिक शिक्षा समाप्त होकर आध्यात्मिक क्षेत्र में काम आने वाली शिक्षा प्रारंभ हुई। अब उनका जीवन वैयक्तिक न होकर समष्टि का रूप बनने लगा। अब परिवार की सम्पत्ति न बन कर लोककल्याण का दीपस्तंभ बनने जा रहा है। माता सतुष्ट थी कि चलो हमारे कुल का एक बालक जनकल्याण का निमित्त तो बन रहा है।

माता मगनबाई और पुत्र मागीलाल ने सतियों के समीप गाँव घासा में प्रतिक्रमण सूत्र, पच्चीस बोल, आदि सीखने प्रारंभ किये। क्योंकि दोनों को अब तो विशाल दायित्व ग्रहण करना था। उन दिनों पूज्य गुरुवर का चातुर्मास भारत विख्यात तीर्थ यात्राद्वारा में था। ससार में यह अटल नियम देखा गया है कि अच्छे काम में सौ विघ्न आते हैं। यहाँ तक कि पारलौकिक क्षेत्र भी इसके प्रभाव से बच नहीं पाता। इधर तो माता और बालक अपने उस स्वर्णदिन की प्रतीक्षा में थे। कब वह स्वर्णघड़ी आवे कि हम सयम ग्रहण कर आत्मकल्याण के पवित्र मार्ग पर आगे बढ़ें, पर उधर सचेती परिवार में ही जो मागीलाल के पितृव्य श्री छोगालालजी सा० कुछ और ही सोच रहे थे। वह यह नहीं चाहते थे कि मगनबाई और मागीलाल ससार को छोड़ कर सयम पथ के पथिक बने। इन्होंने उनके शुभकाम में बाधाएँ खड़ी करना शुरू कर दिया। बालक मागीलाल को एव उनकी माता को अनेक प्रलोभन दिये।



यहाँ तक की मांगीलास की माँ से अलग रह कर उसे अपने ज्ञान पान बखामूपण आदि से उसके मन को लुमाने के अनेक प्रयास भी किये । किन्तु उन्हें इसमें सफलता नहीं मिली । जिनके मन में ज्ञान-मूलक वैराग्य की तरफ बढती हैं तो संसार की कोई शक्ति नहीं जो उसे आत्मकट व्य-पक से विचलित कर सके । इस बीच श्रीमान् भोगालासजी सा० अत्यन्त हो गये । और इसी में उनकी मृत्यु हो गई । श्री मान भोगालासजी सा० की मृत्यु से इनका मार्ग प्रशस्त बन गया, अब इनका आत्मकल्याण के मार्ग में रोड़ा अटकाने वाला कोई नहीं रहा । अबसर पाकर श्री मगनबाई अपने पुत्र मांगीलास को साथ ले रायपुर गई जहाँ पूज्य गुरुदेव श्री एकलिंगरामजी म० सा० बिराज रहे थे ।

रायपुर (मेवाड़) क्षेत्र गुरुमक्ति और गुरु भक्तों का स्थान होने के कारण बड़ा प्रसिद्ध रहा है । यहाँ के लोग बड़े बदार और धर्मप्रेमी हैं । यहाँ जैनों की बस्ती बड़ी तादात में है । यहाँ सन्त सतियों के पातुर्मास प्राय हुआ करते हैं । पूज्य गुरुदेव श्री एकलिंगरामजी म० सा० ने यहाँ के समाज को नया जीवम नूतन चेतना प्रदान की थी । उस महीन संसार की फिरफों से जिनका रोम-रोम प्रकाशित हुआ उनमें से कर्मठ मठ श्रीमान् सीतारामजी चोरडिया देवीचन्द्रजी बनवट श्री धेरूलासजी सा० बोलियाँ आदि का नाम अतीव विख्यात है । ये समाज का प्रमुख थे । इनमें गुरु मक्ति कूट-कूट कर मरी थी । ये अबल अपने इलाक में ही प्रसिद्ध नहीं थे बल्कि आसपास के गाँव-निवासी इनका बड़ा आदर रखते थे । श्री मगनबाई ने अपने पुत्र के साथ दीक्षा ग्रहण करने की भावना आचार्य श्री के सामने रखी । उस समय सीतारामजी चोरडिया और देवीचन्द्रजी सा० बनवट भी उपस्थित थे । वे इन दोनों के

तीव्र वैराग्य भाव से बड़े प्रभावित हुए। इन्होंने इन दोनों को दीक्षा देने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। फलस्वरूप शुभ मुहूर्त में सं १९७८ वैशाख शुक्ला तीज गुरुवार के दिन बड़े ठाठ बाट से इनकी दीक्षा विधि समाप्त हो गई। मांगीलाल आचार्य श्री के शिष्य बने और मगनबाई महा सतीजी श्री फूलकुंवरजी की शिष्या बनी।

## शिक्षा और गुरु वियोग :—

गुरु महाराज इनकी बाल्यकालिक प्रतिभा से पूर्णतया प्रभावित थे। अतएव इन्हे सेवारत प० मुनि श्री 'जोधराजजी' महाराज सा० को सौंपा, और निर्देश दिया कि इनकी शिक्षा का दायित्व आप पर है। प. मुनि जोधराजजी म० इस समय मेवाड़-संप्रदाय के मुनियों में विद्वान् शास्त्रज्ञ एवं सयमशील सन्त माने जाते थे। अपने उग्र तप और त्याग के कारण इन्हे लोग 'मेवाड़-केशरी' भी कहते थे। आचार्य महाराज सा० का विश्वास ये सम्पादित कर चुके थे। इनके सानिध्य में रहकर मुनि मांगीलालजी शास्त्राध्ययन करने लगे। साथ ही पूज्य गुरुदेव की सेवा भी बढ़ी तत्परता से करने लगे। नौ वर्ष तक मुनि मांगीलालजी ने पूज्य गुरुदेव की सेवा की। सवत् १९८७ का श्रावण कृष्ण बीज को पूज्य गुरुदेव श्री एकलिंगदासजी म० सा० का स्वर्गवास हो गया। गुरुदेव के स्वर्गवास से इनके दिल पर जो आघात लगा वह अवरुणीय है। वे अनाथ से हो गये। पर क्या किया जाय ? तीर्थ कर और चक्रवर्ती जैसे महा शक्तिशाली भी इस काल-कराल से नहीं बच सके। सभी को एक दिन इस पथ का अनुगामी बनना है यह, समझकर सयम की साधना में तन्मय हो गये।

ऐसे महान पंडित एवं वैज्ञानी गुरुदेव का सग स्नेह सादर्य पाकर कौन कर शक नहीं बनगा । परित्र-मायक जी तो त्रिद्यासु, विनयी, सुसंस्कृत प्रतिभासपत्र, परिभमी, गुरु आता पालक थे ही । आप गुरु महापत्र जी को निभा में बराबर उनक रथगा रोह्यकाल पर्यन्त बने रहे और स्वाध्याय, विद्याध्यास में अति उन्नति की । गुरुदेव द्वारा प्रदत्त समय की उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुए स.प. १६८७ का चातुर्मास उठाता व्यतीत कर मामागुप्त विहार करते हुए मध्य बीबोको उपदेशामृत का पात्र कराते हुए आगामी चातुर्मास का लावासरदारगढ़ पधारे ।

#### स० १६८८ का लावासरदारगढ़ का चातुर्मास -

यह मेवाड़ प्रांत का छोटा सा गाँव होते हुए भी यहाँ के भावकों की धार्मिक भावना प्रसन्ननीय है । यहाँ की आम जनता जैन मुनियों के प्रति अटूट भक्त्य रक्षती आयी है । गुरुदेव के चातुर्मास से लोगों में धार्मिक भावना लूब बढ़ी । यहाँ बान दया तपस्या आदि अनेक शासन प्रभावक कार्य हुए । महाराज भी के स्वास्थान आदि का आम लोगों ने लूब काम उठाया । मध्याह्न में शास्त्र-वाचन एवं तात्त्विक चर्चाप चलती थी । यहाँ का चातुर्मास पूरा कर लोगों को आत्मकल्याण का प्रशस्त मार्ग बताने के लिए अम्यत्र विहार कर गये ।

#### स० १६८९ का देवगढ़ चातुर्मास -

देवगढ़- मद्यारिया का अपना ऐतिहासिक महत्व है । यहाँ के शाराक दत्त कहलाते थे । वे वीर और परम धर्मी थे । चण्डपुर से ६८ मील पर बस हुए इस नगर में जैन समाज

बड़ी संख्या में वर्षों से निवास करता आया है । कई जैन मुनियोंने यहाँ निवास कर न केवल स्थानीय जन-मानस को धार्मिक दृष्टि से ही उद्बुद्ध किया है, अपितु अवकाश के क्षणों में जन प्रबोध कारी साहित्य रचकर माता सरस्वती के मन्दिरमें ग्रन्थरूपी पुष्प भी चढाये हैं । महाराज श्री का यही चातुर्मास-होने से जनसाधारण में धर्म की अनुपम जागृति हुई । आम-पास के गाँवोंकी जैन जनता भी प्रचुर मात्रा में दर्शनार्थ आती रहती थी । अजमेर के लोढा साहब की प्रेरणा से श्री नानक राम जी महाराज की सप्रदाय के पं० मुनि श्री हगामी लालजी महाराज साहब को अपने साथ रख कर समय-आराधना में पूर्ण सहयोग दिया । यह उनके उदार हृदय का प्रत्यक्ष उदाहरण है । इस चौमासे की विशेषता यह रही कि जैन समाज के लोग तो महाराज श्री की अमृतश्रावणी वाणी से लाभान्वित होते ही रहे, पर वहाँ के रावजी भी व्याख्यान का बराबर लाभ लेते रहे । दर्शनार्थियों में अजमेर के श्री लोढाजी भी पधारे थे ।

### श्रमण सम्मेलन की ओर प्रस्थान-

भारत में ऐसे सन्तों की कमी नहीं है जो साप्रदायिकता से अलग रहकर शुद्ध आत्मोत्थान के पथ पर चलना चाहते हैं । किन्तु उनके सामने ऐसा कोई मार्ग नहीं है । यदि त्याग-प्रधान श्रमण-संस्कृति में विश्वास रखने वाले कुछ सन्त ऐसा मार्ग बना लेवे जहाँ व्यक्ति साप्रदायिकता से दूर रह कर कल्याण कर सके तो साप्रदायिक सीमाएँ अपने आप शिथिल होने लगेगी । मुनि श्री मागीलालजी म० सा० इसी सिद्धान्त में विश्वास रखते थे । और वे सप्रदाय से भी अधिक श्रमण सघ-ठन को ऊँचा मानते थे । चातुर्मास समाप्त होते ही ये मेवा -

केशरी पं मुनि भी जोधरात्रजी म० सा० के साथ अत्रमेर सम्मेलन में प्रतिनिधि बनकर विहार कर गये । अत्रमेर में अनेक मुनि और आचार्यों के दर्शन समागम का लाभ मिला । उनछे विनम्रता और वैनयिक वृत्ति से सम्मेलन का मुनि समाज बहुत प्रभावित रहा । अत्रमेर मुनि सम्मेलन के सम्बन्ध में मुझे यहाँ विस्तार से प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं है, कारण कि सम्मेलन की रिपोर्ट में पूरा विवरण दिया गया है । उस लिखकर पृष्ठपथ्य करना नहीं चाहता ।

स० १६६० का वर्षोवास पद्मसौली -

अत्रमेर सम्मेलन के परचात् मेवाड़ के उप मण्डल प्रान्त में बदनीरा प्रदेश में खारी नदी के सुरम्य तट पर यह मगर अवस्थित है । यहाँ पर गुरुदेव भी जोधरात्रजी म० सा० एवं चरित्रनायकजी के कारण पढ़ने से बड़ाशुभों के हृदय में धार्मिक-भावनाओं का उत्पन्न उमड़ पड़ा । इनकी विद्वत्ता पूरा भाव गर्भित व्याख्यान शैली से जनता गहगह हो गई । इस गाँव के लिए कई वर्षों के बाद सन्तों का यह पहला चातुर्मास था । आसपास के लोग बड़ी संख्या में महाराज भी के दर्शन के लिए आते थे । गाँव के लोग उनका हृदय में स्वागत करते थे । बड़ा सा गाँव होने पर यहाँ जो धार्मिक कार्य एवं उपरपर्या हुई वह गुरुदेव के विद्वत्पूण वाणी का ही परिणाम था ।

स १६६१ का चातुर्मास कामला -

पद्मसौली का चातुर्मास समाप्त कर गुरुदेव ने मेवाड़ मूमि को पावन करने के लिए अन्यत्र विहार कर दिया । मार्ग में उन्होंने अनेक सभ्य जीवों को बर्माभिमुख किया ।

रायपुर संघ के सत्याग्रह से इस वर्ष का चातुर्मास रायपुर में करने का विचार किया था। गुरुदेव के आगमन की रायपुर-संघ चातक की तरह प्रतीक्षा कर रहा था। गुरुदेव ने भी चातुर्मास के लिए रायपुर की ओर विहार कर दिया। किन्तु भावी भाव प्रबल है। जेष्ठ की वर्षा से मावली से थामला पधारते हुए रास्ते में चिकनी मिट्टी के कारण गुरुदेव श्री जोधराजजी म० सा० का पैर फिसल गया और साघातिक चोट आ जाने से बड़ी कठिनाई से वे थामला गाँव में प्रवेश कर सके। यहाँ तक कि बैठना चलना-फिरना कत्तई स्थगित हो गया। छ माह तक असह्य वेदना का भारी उदय रहा। अनुकूल औषधियाँ और मर्दन का क्रम चलता रहा। स्थानीय श्रावकों की उत्साह भरी सेवा के परिणामस्वरूप श्री जोधराजजी म० सा० ने पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त कर लिया। शारीरिक अस्वस्थता के कारण गुरुदेव का चातुर्मास यहीं रहा। चातुर्मास के बीच लोगोंने धार्मिक उत्साह लगन और सेवा का आदर्श उपस्थित किया, वह अन्य गाँव वालों के लिए एक उदाहरण था। यहाँ तपश्चर्या आदि प्रचुर मात्रा में हुई। यहाँ के ठाकुर साहबने भी समय-समय पर गुरुदेव श्री का उपदेश सुनकर अपनी भक्ति का अपूर्व परिचय दिया। यहाँ तक कि उन्होंने स्थानक बनाने के लिए अपनी ओर से जमीन तक मुफ्त में दे दी। गुरुदेव ने पूर्ण स्वास्थ्य लाभ कर यहाँ से विहार कर दिया।

स० १६६२ का चौमासा लावा मरदारगढ -

आठ माह तक शेष काल में विभिन्न ग्राम नगरों में जिनवाणी का प्रचार करते हुए चातुर्मासार्थ अथाढ़ शुक्ला में नगर में पदार्पण किया। आज्ञा प्राप्त कर जैन मन्दिर के अग्रभाग में विराजे। यहाँ इनके भाषणों का इतना व्यापक प्रभाव रहा

कि वेछ पन्धी भाई भी बड़े बाब से व्याख्यान अवण कर अपने को घन्य मानने लगे।

मेवाड़-सप्रदाय के आचार्य भी एकसिंघाशासत्री म० सा० का ऊँठाका में स्वर्गवास होने के कारण जैन समाज इनके रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए बहुत चिंतित था। संघ में एक योग्य और संयमशील आचार्य की आवश्यकता थी। संघ की उन्नति के लिए नेता का होना अनिवार्य होता है।

इस जातुमांस में आचार्य के स्थान पूर्ति की चर्चा बोरों पर चली। इन दिनों मुनिवर भी जोषराजजी म० सा० और मुनि भी मोठीलालजी म में पारस्परिक बैममरण चल रहा था। मुनि भी जोषराजजी म सा अमण संरक्षित के अनुकूल विचारों के प्रति पूर्ण निहायान थे। स्वभाव से भी वे सरल और विनम्र थे। संयम मार्ग की तनिक भी शिथिलता वह सहन नहीं कर सकते थे। स्वयं भी संयम में रह रहते थे और इस दृष्टि से मुनिबों पर भी जनका कड़ा निर्यंत्रण रहता था। जब लोचका से संयम प्रहण कर अरमकन्याय के पक्ष पर चल रहे हैं तो उसमें शैथिल्य क्यों ? इसी बात को लेकर गुरुवर भी जोषराजजी म० सा में एवं मुनि भी मोठीलालजी म सा में मतभेद था। इसी मतभेद को मिटाने के लिए दोनों का आपसी मिलन हुआ। एक दूसरे के बाब की भ्रान्तिबों मिठी-और गुरुवर भी जोषराजजी म सा की सरलता से प्रभावित हो मुनि भी मोठीलालजी म सा ने संघ-संघठन में रहन्य स्वीकार किया और संघ शैथिल्य को दूर करने वाले निबनों को स्वीकार किये। दोनों के आपसी मतभेद के दूर होने से संघ में आनन्द छा गया। अन्त में चतुर्विध संघने मिलकर मुनि भी मोठीलालजी म० सा को आचार्य पद एवं मुनि भी

मांगीलालजी म० सा० को युवाचार्य पद प्रदान किये गये । यह "लावासरदारगढ" का सौभाग्य था । आगामी चातुर्मास सब मुनिमण्डल साथ ही करे' ऐसा तय हुआ । समयवृत्ति विशुद्ध जिनाज्ञानुकूल रखेंगे ऐसा आपसो लिखित निर्णय हुआ । । 'लावासरदारगढ' में पद महोत्सव के पश्चात् डेलवाड़ा का सघ आगामी चौमासे की विनती के लिए आ पहुँचा और उसे स्वीकृति दी गई ।

स० १९६३ का वर्षावास देवकुल पाटक डेलवाड़ा -

मेवाड़ के जैन इतिहास में डेलवाड़ा का प्राचीन नाम देवकुल पाटक मिलता है । इस नगर का इतिहास बहुत उज्ज्वल रहा है । यहाँ विपुल जैन साहित्य संस्कृत, प्राकृत भाषाओं में विभिन्न मुनियों द्वारा रचा गया । लावासरदार गढ के निर्णयानुसार सब मुनि सामूहिक रूप से चौमासे के लिए पधारे । यहाँ मुनियों में आपसी शान्ति की बजाय वैमनस्य और भी बढ़ गया । प० मुनि श्री जोधराजजी म० सा० ने पूज्य श्री मोतीलाल जी म सा को संघ एकता के समय ली गई प्रतिज्ञा को पालने का बार-बार अनुरोध किया । विनम्र प्रार्थना और बार-बार विनय पूर्वक मोतीलाल जी म सा को अपने आचार धर्म पर दृढ़ रहने का आग्रह किया । किन्तु इसका असर इनपर विपरीत ही पड़ा । परिणामस्वरूप चातुर्मास समाप्ति के बाद मुनि श्री जोधराज जी म सा ने आहार पानी आदि का सम्बन्ध-विच्छेद कर अलग विहार कर दिया ।

सन्त तो समाज के ही एक अंग होते हैं । उनके आस-पास के लोगों का समाज पर उनका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है । दीपक, आत्म-निर्वाण के लिए जलता है किन्तु उसकी तप-पूत ज्योति से निकटवर्ती स्थान प्रकाशित होता है । दीपक को



मझे ही इसका ज्ञान न हो। और यदि कभी उस निष्कल्वर्ती स्वान में कोई मिला वातावरण उत्पन्न हो गया हो तो उसके परिग्राम से दिये की ज्योति कैसे अक्षिप्त रह सकती है। इसके सिवाय भारतीय जन साधारण में धर्म-भावना का संस्कार परम्परा से चला आ रहा है। सद्गुरु और सत्त उनका स्त्रिय ईश्वर पुरुष होते हैं। अतएव उनके आचार विचार का मक्ति भाव पर्वक यथाशक्ति अनुकरण करने में वे अपने को धर्म मानते हैं। 'यथाचारिति श्रेष्ठः लोक तद्गुरुवर्तते' यह सिद्धान्त सर्व विदित है। जिन्हें हम अपना नेता या आचार्य मानते हैं उन के आचार विचारों का प्रभाव अवरुध ही शिष्यगण पर पड़ता है। आचार्य जितना आचार विचार में श्रेष्ठ होगा उसका संप भी उतना ही श्रेष्ठ होगा। अगर आचार्य में कृषण है तो उसका असर संप पर अवश्य पड़ता है। इसी ज्योदेस्य को लक्ष्य में रखकर जोषराजजी ने सा० उनसे पूछा हो गये।

स० १९६४ का चातुर्मास कामधौर -

धीरे धूमि हल्दीघाटी के नाम से शाब्द ही कोई धीरे-पूजक भारतीयों को अपरिचित होगा। महाराणा प्रताप के साथ हल्दीघाटी का जो सम्बन्ध रहा है उसे लिखने की आवश्यकता नहीं है। इसी घाटी की सुरक्ष्य तलहटी में वह नगर बसा हुआ है। शाताब्दियों से यह कामधौर गुलाब के पुष्प उत्पादन का केन्द्र रहा है। मुगलकाल से ही यहाँ के गुलाब बाग विख्यात रहे हैं। आज भी गुलाबजल, गुलाबइत्र और गुड कण्ड के लिए देश विख्यात स्थान है। बौद्ध इतिहास की दृष्टि से भी इसका स्थान कम महत्वपूर्ण नहीं है। आचार्य सर्वोत्तमजीने यहाँ कई वर्षोंवास व्यतीत कर बौद्ध संस्कृति को प्राप्त

वित्त पुष्पित किया था। खमणौर में प्रतिलिपित जैन साहित्य प्रचुर परिमाण में अन्यत्र उपलब्ध है।

इस इतिहास-प्रसिद्ध नगर में पू गुरुदेव के पदार्पण से जनता की भावना प्रबल हो उठी और चातुर्मास की विनति होने लगी। गुरुदेव ने श्रावकों की उत्कृष्ट भावना देखकर चातुर्मास की विनति मानली। महाराज श्री की भव्य व्याख्यान शैली से प्रभावित दिगम्बर श्रावक श्री तोलारामजीने अपने निवास में ही चातुर्मास करवाया। बिना किसी भेद भावना के सर्वसाधारण जन आपके दिव्य उपदेशों का पानकर अपने को कृतकृत्य मानते थे। खमणौर के आसपास के कई गांवों के लोग गुलाब और उनसे बनी हुई चीजों का व्यापार करते थे। कई श्रावकों की गुलाब व इत्र की बड़ी-बड़ी भट्टियाँ चलती थीं किन्तु गुरुदेव के प्रभाव पूर्ण उपदेश से श्रावकों ने इस महारम पूर्ण व्यापार को सदा के लिए त्याग दिया। कइयोंने मद्य, मांस आदि व्यसनो का परित्याग किया। श्रमण-संस्कृति के भौतिक तत्वों का महाराजश्रीने ऐसी प्रभावशाली शैली में प्रतिपादन किया कि आज भी उसकी ध्वनि गूँज रही है। यहाँ का प्रभावशाली चातुर्मास पूर्ण कर म सा श्री ने मारवाड़ की ओर विहार कर दिया।

स० १६६५, का चौमासा सादड़ी (मारवाड़)

सयमकी साधना में पद-पद पर परिषदों का सामना करना पड़ता है। वही साधुजीवन की कसौटी है। मेवाड़ से विहार कर अरावली की पहाड़ियों में बसे कई छोटे बड़े गावों को पावन करते हुए विचर रहे थे। मार्गमें कई तरह के

परिष्कार सहज करने पड़े। बाजी, सांढेराव पाली, जोधपुर आदि नगरों को फरसते हुए गुरुदेव पानेराव सावकी पचारे। वहाँ के सभ ने गुरुदेव का भावमीना स्वागत किया। महाराजगी की धर्मदेशना से लोगों में धर्मोत्साह बढ़ा। परियामस्वरूप संघने चातुर्मास की मास भिनी विनति की। गुरुदेवने स्वीकृति फरमा दी।

राजस्थान के जैन इतिहास में सावकी का बहुत महत्व पूर्ण स्थान रहा है। विराल राणकपुर का मन्दिर भी इसी के समीप है। सावकी में जैन समाज का बहुत प्राचीन काल से ही वर्चस्व बसा आ रहा है। मुनि विजयविजयजी और महोपाध्याय मधु विजयजीने—अपनी मूर्खबान संस्कृत साहित्यिक रचनाओं में इसे और भी धमर कर दिया है। सुप्रसिद्ध मवाद के दानवीर मामाराह के लघु भ्राता 'साराधन् राह' यहाँ के शास्त्र वे। वे लोकराह के सिद्धान्त को मानने वाले थे। वे लोकराह में इतने अधिक प्रिय थे की बमकी मत्सु के बाद बमकी और उनकी पत्नी की बि स १६४८, में बावली में एक प्रतिमा स्थापित की गई थी। यह प्रतिमा आज भी उपलब्ध है। स्थानक-बासी समाज की यहाँ विराल संस्था है। विराल जन समुदाय होते हुए भी धर्म के मामलों में अद्भुत सघटन है। महाराजगी के पधारने से जनता में धार्मिक भावना तुगुनी बढ़ गई। चातुर्मास काल में उपवास आदि उपरचर्यों के साथ—साथ दया, पौष आदि भी प्रचुर मात्रा में हुए। निकटवर्ती प्रान्तों की जनता भी प्रचुर मात्रा में दरनाब आई। चरित्रनाबकी का मारबाह का यह प्रथम चातुर्मास अत्यन्त सफल और प्रभावपूर्ण रहा।

चातुर्मास के अन्तर आपका बिहार पुन मेवाह की ओर हुआ। देवगढ़ महारिया में आपको कारख बरा विरोध

रुकना पडा। होली चौमासा भी आपका यही हुआ। उस अवसर पर गोगुदा का संघ चौमासे की विनति के लिए आया। उनकी विशेष श्रद्धा देख गुरुदेव ने आगामी चातुर्सास की स्वीकृति फरमा दी।

इसी अवसर पर मैं पलाना से गुरुदेवकी सेवामें पहुँचा। मैंने दीक्षा लेनेकी अपनी इच्छा व्यक्त की। मेरी दृढ भावना देखकर गुरुदेवने मुझे साथ में रखना स्वीकार कर लिया। मैंने प्रतिक्रमण, पञ्चीस बोल आदि धार्मिक अभ्यास प्रारभ कर दिया। साथ ही दीक्षा के लिए माता-पिता आदि कुटुम्बी-जनों से आज्ञा प्राप्त करने का प्रयास भी प्रारभ कर दिया। किन्तु माता-पिता का विशिष्ट मोह होने से उन्होंने मुझे दीक्षा लेने की आज्ञा प्रदान नहीं की। ससार में मोह का आवरण प्रबल होता है।

देवगढ़ से विहार कर गुरुदेव राजकरेड़ा, रायपुर, होते हुए 'कुँवारियों' पधारे। जहाँ पूज्य श्री घासीलालजी म० सा० का प्रेम पूर्ण मिलन हुआ। मैं भी उस समय गुरुदेव के साथ ही था। पूज्य श्री घासीलालजी म० सा० ने मेरे उत्कट वैराग्य भाव को देखकर मेरे माता पिता से मेरे लिए दीक्षा की अनुमति प्राप्त करवाने के लिए अपने शिष्य मुनि श्री समीरमलजी म०सा० ठानादो को युवाचार्य श्री मागीलालजी म० के साथ मेरे गाँव पलाना पधारे। वहाँ पर मेरे पिताजी श्री नानालालजी दुगढ़ को गुरुदेवने बहुत समझाया। किन्तु गुरुदेव के उपदेश का मेरे पिताजी पर किञ्चित् भी असर नहीं पडा। इस अवसर पर मैंने भी पिताजी को कई तरह से समझाने का प्रयास किया। परन्तु इस मामले में हममें से किसी को

भी सफलता नहीं मिली। पिताजी के हठाग्रह से मेरी बेराम्य भावना थीर भी प्रबलतम हो गई। मैंने गृहस्थ बेरा में भी साधु भी वृत्ति पासने का निश्चय किया। मैं गुरुदेव की सेवामें था। उनसे यामञ्जीवन ब्रह्मचर्य पालने का व्रत ले लिया। सच्चिद पद्म का सवन सदा क लिए छोड़ दिया। साथ ही कई छोटे-बड़े नियम ग्रहण किये। इधर पूज्य गुरुवर्य भी मांगोलालजी म० सा भी मुनि लोभराजजी म सा० से कुँवरियों आकर मिल गये।

यहाँ स क्रमरा काकरोली पधारे जो प्रसिद्ध वैष्णव तीर्थ है। यहाँ पर जैन दिवाकरजी म भी श्रीबलजी म० सा एवं पूज्य भी धामीशालजी म सा का सम्मिलन हुआ। सब मुनिमंडल आनन्द के साथ एक-दूसरे से मिले। यह अपूर्व अक्षर था। स्थानीय भावक समाज पर इसका अच्छा असर पड़ा। यहाँ स महाराज भी कोठारिबाँ, नाबझारा समणौर होकर बाटी पधारे। तदनंतर अषाढ़ शुक्ला द्दमिी क दिन चातुमासार्थ गोगुवा में बड़े समारोह के साथ प्रवेश किया।

स १६६६ का चौमासा गोगुवा -

मवाड़ के इतिहास में गोगुवा की अपनी स्वतंत्र बगल है। यह सी ऐतिहासिक घटनाएँ इस नगर में घटी हैं। यहाँ क शासक मन्त्रा सरकार रहे हैं और 'राज' उनकी उपाधि थी। राजजादा सुरेंद्र भी यहाँ रहा था। जैन साहित्य क १७ वीं शताब्दी क प्रन्थो म इसका नामोल्लेख मिलता है। यह मवाड़ के प्राचीन स्थानकवासी संप्रदाय के केन्द्रों में रहा है।

अधिक मास होने से उपरचर्चादि बर्मकार्य विपुल परिमाण

में हुए। व्याख्यान में जनता ने खूब उत्साह के साथ भाग लिया। जीव दया का प्रचार भी अपेक्षाकृत अधिक हुआ। चातुर्मास के पूर्ण होते ही गुरुदेव ने वहाँ से विहार कर दिया।

क्रमशः विहार करते हुए गुरुदेव का 'सिन्धू' नामक गाँव में आगमन हुआ। जहाँ पलाणा का भावुक सघ दर्शनार्थ गुरुदेव की सेवामें आ पहुँचा। अच्छा अवसर जान कर मैंने पलाना सघ से मेरी दीक्षा की आज्ञा प्राप्त करवाने के लिए सघ से प्रार्थना की। सघ के साथ मैं पलाना गया और वहाँ पर पिताजी को समझाने का पुनः प्रयत्न किया किन्तु परिणाम सतोष जनक न आ सका, कारण कि पिताजी को विरोधियों ने ऐसा बहका रखा था कि इनकार भी न कर सके तो हाँ भी नहीं कर सके।

इस बीच मेरे कुटुम्ब में बड़ी माँ सा की अचानक गम्भार विमारी का मुझे समाचार मिला। साथ ही यह भी समाचार मिला की बड़ी माँ मुझसे मिलने की उत्कट इच्छा रखती हैं। यद्यपि अब मुझे अपने कुटुम्ब से कुछ भी लगाव नहीं था। किन्तु व्यवहार-धर्म निभाने के लिए मैं बड़ी माँ से मिलने पलाना पहुँचा। वहाँ बड़ी माँ सा की स्थिति अस्यन्त शोचनीय थी। कुछ मिनट की ही मेहमान थी। मैंने उसे खूब धार्मिक आश्वासन दिये। उनकी मृत्यु के बाद मैं उसी क्षण सामायिक करने स्थानक में चला गया। स्मशान यात्रा में एकत्र लोगों पर मेरी इस वैराग्यपूर्ण वृत्ति का अच्छा असर पड़ा। अन्ततः नरवीर श्री भवरलालजी सा मगनलालजी सा आदि धर्मप्रेमी महानुभावोंने मुझे इस कार्य में सम्पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। उनके विश्वास पूर्ण

आश्वासन से मेरा साहस दुगुना हो गया। मैं पुनः गुरुदेव की सेवा में 'सिन्धु' पहुँचा। वहाँ मैंने गुरुदेव के समक्ष अपना निश्चय प्रकट किया कि मैं अब-अधिक समय तक इस छुम कार्य में विश्रम्भ नहीं करना चाहता, आपको पताना पधारना होगा। मैं पताना में अपने ही कुटुम्ब के समक्ष गृहस्थ बेशका त्याग कर साधुवेश प्रकट करूँगा। गुरुदेव मेरी अर्पणा को टाल नहीं सका। यदाचार्य श्री मंगलालजी से सा पताना पधारे।

गुरुदेव के पताना पधारने से संघ में अत्यन्त आनन्द जा गया। अपने नगर का एक सागरिक माधना के तट पर स्थित हो रहा है, यह जानकर भीमान धमनिष्ठ श्री मंगलालजी मंगलालजी आदि भावकों के मन और मन अनुपम आनन्द का अनुभव कर रहे थे। स १९२६ का माघ कृष्ण प्रतिपदा का दिन था। गुरुदेव भावकों के बीच सभार की अमारता पर गम्भीर विवेचन कर रहे थे। मेरे पिता श्री नानालालजी भी सामायिक में बैठे थे। अपने लक्ष्य तक पहुँचने का मैंने सबसे अच्छा अवसर देखा। वही क्षण पिता के सामने ही गृहस्थ बेश का त्याग कर साधु बेश पहन लिया। गुरुदेव के समक्ष उपस्थित लोगों ने जब यह दृश्य देखा तो वे अवाक हो गये मैंने पुनः अपने पिता से आज्ञा देने की प्रार्थना की किन्तु पिताजी मौन थे। समीप बड़े भीमान मंगलालजी साहब न साहस के साथ इस कल्याणकारी मार्ग पर बढ़ने की आज्ञा दे दी। गुरुदेव ने भी मंगलालजी सा की स्वीकृति पाकर एवं पिता के मौन को सम्मति मानकर भागम विधि के अनुसार गुरुदेव ने बाँझा का पाठ सुनाकर मुक्त प्रकृतिक कर लिया। अब मैं सागरी से अनगारी बन गया। मेरा गृहस्थावस्था का नाम 'मंगलाल' था। बाँझा के बाद मेरा न्यम हस्ती मुनि रखा गया।

गुरुदेवश्री वहाँसे प्रस्थान कर मावली पधारे। और घासा से विहार कर श्री जोधराजजी म सा मुनि श्री कनैयालालजी म सा आदि पधारे, और मेरी बड़ी दीक्षा मावली के श्री सघ के विशेष आग्रह से वहीं संपन्न हुई। यहाँ भी विघ्न आया और वह यह कि पुलिमथाने में आदेश आया था कि यन्नालाल ( मेरा गृहस्थ जीवनका नाम ) को उनके पिता के सुपुर्द किया जाय। पर धन्य हैं मावली का श्रीसंघ कि जिसने इस पवित्र कार्य में पूर्ण सहयोग दिया और विघ्न टल गया। वहाँ से मुझे युवाचार्यश्री का शिष्य घोषित किया गया। वहाँ से गुरुदेव विहार कर ऊँठाला आकोला होते हुए सगेसरा पहुँचे। वहाँ अनेक जगह से चातुर्मास की विनति के लिए संघ आ पहुँचे उनमें सनवाड़ संघ की विनति गुरुदेव ने स्वीकृति फरमा दी।

सं. १६६७ का चौमासा सनवाड -

सनवाड के शासक वीरमदेवोत राणावत कहलाते हैं। सनवाड़ वालों ने महाराणाओं को समय-समय पर युद्ध में सहयोग देकर अपनी बौद्धिक परम्परा कायम कर रखी है। वीरता के साथ इनमें धर्म के प्रति गहरी आस्था रही है। श्रीमेवाड केशरी म ओर युवाचार्य श्री माँगीलालजी महाराज सा, भादसोडा चित्तोड़ निम्बाहेडा, नीमच, सादड़ी, ढूँगला आदि ग्राम नगरों में विचरण करते हुए आषाढ़ शुक्ला दसमी को सनवाड़ पहुँचे जहाँ वहाँ के विशाल भक्त समुदाय ने महाराज श्री का अनोखा स्वागत किया। जैन समुदाय के अतिरिक्त अजैनभाई भी वहाँ महाराजश्री के व्याख्यानो से लाभान्वित होते रहे। यहाँ तक कि सनवाड़-महाराज तथा उनके राजकुमार भी प्रभावित हुए और जीवदया का प्रतिपालन किया-करवाया।



सनवाड के सफ़ल चातुर्मास के बाद माबली माबग्राम  
रेलमगरा होते हुए सहादा पधारे जहाँ, मुनिवर श्री जोधराजजी  
म सा के असादा वेदनाय कर्मोदय स प्रातः कास पचापाव हो  
गया जिसके परिष्कामस्वरूप अधिक समय तक रुकना पड़ा।  
बिमारी विलक्षण थी। माँडलगढ़ में बिराजमान पूष्य भा शीतल-  
दासजी की समदाव क महान तपस्वी श्री कबोड़ीलालजी म  
सा वधोवृद्ध भी तपस्वी भूरालालजी म सा धुरन्धर व्याख्याती  
जोगलालजी म सा ठाना ५ छेठ की प्रबल उष्णता की पराई  
किये बिना मुनि श्री जोधराजजी म सा की सेवामे पहुँचे।  
ज्यों-ज्यों समाज मे इनके अल्पत्वता के समाचार फैले त्यों-त्यों  
सहादा मे जनसमुदाय बिराल वैमाने पर गरबर्नार्थ आने लगा  
यहाँ तक कि साधु और साध्वी समुदाय के बिहार भी सहादा  
की ओर होने लगे ताकि वे मेवाड़-करारी के दर्शन कर पावन  
हो सकें। इस समय उपस्थित साधु साध्वियों ने जो गरदेवकी  
सेवा की वह अविस्मरणीय है। इस अवसर पर शिष्यमंडली महिष  
पूष्य मोतीलालजी म सा भी पधारे। यहाँ के लोगों ने यद्यपि  
तनमम सं गुरुदेव की श्रद्धा सेवा की फिर भी कुछ प्रतिकूलताओं को  
ध्यान में रखकर मुनि श्री जोधराजजी म सा को विशिष्ट अनु-  
कूल चरम होली द्वारा खे जाना तय किया गया।

कुबारियों जैन समाज में कर्मठ सेवा भाषी कर्णधार श्रीमान् बीरा  
लालजी सा और कबोड़ीमलजी क पुत्र श्रीमान् कन्हैयालालजी  
सा पिपादा श्रीमान् नाथुलालजी सा कच्नारा के अपूर्व सहयोग  
इन्हीं की प्रेरणा म मेवाड़ करारी को होली द्वारा कुबारियों व  
जाया गया। मेवाड़ करारी के शरीरमें अपार वेदना थी पर धर्म  
है वह संवम मूर्ति कि उन्होंने कमा मुक्त मे छठ तक मही किया  
बीमारी मे भी सन्धी समता का सुपरिचय दिया।

व्यावर में जब दिवाकरजी म० सा० को इनकी बीमारी की सूचना मिली तो सेवामे एक मुनि को भेजा। एमे अवसर पर साध्वीजी, भ्रमकुजी और हगामाजी म ठाना चार की सेवा, भी उल्लेखनीय रही। स्थानीय श्रावकोंने जो आत्मलगन के साथ सेवाकी वह अविस्मरणीय है। मेवाडकेशरी का स्वास्थ्य दिनानु दिन गिरता ही जा रहा था। यहाँ तक कि सम्पूर्ण शरीर में पक्षाघात हो गया। पर आश्चर्य एक बात का था कि सर्वाङ्ग पक्षाघात स प्रभावित होने के बावजूद भी मष्तिष्क सजग और ज्ञानतनु प्रबल थे। वे अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक तप और सयम की साधना मे सावधान थे। मुख पर सयम का तेज चमक रहा था। इतनी शरीर विषयक-यातना परान्त भी वह आत्मध्यान में अन्तिम क्षण तक निमग्न रहे। अन्तिम समय मे इन्होंने त्याग प्रत्याख्यान कर लिये थे। आश्विन शुक्ला पचमी के दिन मुनिश्रीने समाधिपूर्वक अपना देह छोड़ दिया। मेवाड का चमकता हुआ एक सितारा सदा के लिए अस्त हो गया। मुनिश्री के स्वर्गवास के समाचार फैलने पर आस पास की जनता एकत्र हुई और बडे समारोह के साथ इनकी स्मशान यात्रा निकाली गई। लोगो की आँखों में आँसू और हृदय मे वेदना थी। गुरुदेव के तप, त्याग और सयमी जीवनकी सर्वत्र चर्चा थी। चारो ओर से समवेदना सूचक सन्देश आये। जिनमे लींबड़ी विराजित पूज्य घासीलालजी म सा. ने इनकी स्मृति में योधराजाष्टक काव्य लिख कर भेजा जो प्रकाशित है। इस अवसर पर अनेक सन्तों और श्रावकोंने अपनी श्रद्धाजलियाँ प्रगट की। गुरुदेव के स्वर्गवास के अवसर पर शेठ हीरालालजी कु कन्हैयालालजी पिपाड़ा, नाथलालजी कझारा, एव श्राविका श्रीमती टम्बूवाई की सेवा अविस्मरणीय रहेगी। जिन्होंने तन, मन धन से सेवा की।

बिहार जैन साधुओं का मूषण है। गतिशीलता का जोधम का आभार है। अब मुवाचार्य श्री मांगीलालजी महाराज के कर्मों पर उत्तरदायित्व का बोझ और भी बढ़ गया। जो संपन्न नेतृत्व आसान नहीं। मेंढकोंको तोलने का समान कठिन है। अब मुवाचार्य श्री मोही काकरोली हाथे हुए क्रमशः भवाना उदयपुर की ओर प्रस्थित हुए। यहीं पर पूज्य पासीलालजी म सा का इनसे समागम हुआ और शोक निवारणार्थ इन्होंने मुवाचार्यजी को पुनः नयी चादर सन्निविष्ट किया। और हरलालजी की रीति जो उदयपुर में संपन्न होने जा रही थी उसमें मुवाचार्यजी भी सम्मिलित थे। पूज्य पासीलालजी म सा का उदयपुर का स्नेह सम्मेलन के बाद मुवाचार्य श्री वल्लभनगर पधारे। यहाँ पर अनेक अगह की चातुर्मास बिनवियाँ आईं थी इनमें गुरु देवने नार्दनगर का भीसप को चातुर्मास की स्वीकृति फरमायी।

स० १६६६, का चातुर्मास नार्दनगर -

मुवाचार्यजी म सा वल्लभनगर से जब बिहारको लौटारी कर रहे थे इतने में बनेदिया से सम्देश आया कि महासती मगनकुंवरजी का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं है और शक्ति दिनप्रतिदिन क्षीण होती जा रही है। पतन्य महाराज सा० दर्शन देने पधारे यह महासती महाराज भी की संसार पक्ष में भातेरखी थीं। जहाँ जाना समझा कर्तव्य था। गुरुदेव वहाँ पधारे। अथ रूपक औषधोपचार के बाद भी स्वास्थ्य में सुधार न हो सका। जब आयुष्य तन्तु ही खींच हो चलते हैं तब बाणपुरद्वारा अपना क्या प्रभाव बता सकते हैं। मानाजी म सा संस्मृत्यनापूर्वक अवसान हुआ। इसका कितना रंज हुआ होगा यह तो अनुभव का विषय है। अमी-अमी मेबाड़-करारी का शोक तो मूले ही

नहीं थे और दूसरी चोट माताजी के स्वर्गवास से पडी। पर मन में इतना सन्तोष था कि कम से कम उनका अन्तिम समय तो सुधर गया

आषाढ कृष्ण दसमी को मातुश्री के देहोत्सर्ग के बाद एकादशी को विहार कर क्रमशः आपाढ सु० चतुर्दशी को नाई पधारे। गुरुदेव के चातुर्मास में लोगों में धार्मिक भावना की नई लहर पैदा हुई। गुरुदेव के उपदेश से यहाँ के लोगोंने सैकड़ों प्राणियों को अभयदान दिये। बकरों की सुरक्षा के लिए बोक-शाला की स्थापना की गई। दया, दान, तपस्या आदि अनेक धार्मिक कार्य हुए। यहाँ का चातुर्मास आज लोगों के मास्तिष्क में अंकित है। इस चातुर्मास के बीच श्रीमान् चान्द-मलजी, शकरलालजी आदि श्रावकों की सेवा विशेष उल्लेखनीय रही। चातुर्मास के अन्त में अनेक गाँवों के सघ अपने-अपने क्षेत्रों को पावन करने की विनति लिए उपस्थित हुआ जिनमें, मालावाड़ का सघ भी उपस्थित था।

मालावाड़ श्री सघ चाहता था कि गुरुदेव हमारे प्रान्त को पावन करे। तदनुसार गुरुदेवने चातुर्मास समाप्ति के बाद मालावाड़ की ओर विहार कर दिया। क्रमशः बाघपुरा गुरुदेव पधारे जहाँ वर्षों से सघ में वैमनस्य चलता था।

यह वैमनस्य केवल गाँव तक ही सीमित नहीं था इसका विष आसपास के गाँवों तक में व्याप्त हो चुका था किन्तु गुरुदेवने उसे मिटा दिया। श्री सघमें अपूर्व शान्ति से चलास छा गया। वहाँसे गुरुदेव का विहार भोमट प्रात में हुआ। वहाँ के क्षेत्र को पावन कर गुरुदेव गोगुदा पधारे। यहाँ अनेक स्थानों से चातुर्मासार्थ विनतियाँ आने लगीं। बाघपुरा के विवेकशील सघ ने गुरुदेव का

चातुर्मास करवाने की अपनी भावना प्रगट की। गुहदेव ने इसे स्वीकार कर लिया। वहाँ से बिहार कर बामपास के अनेक क्षेत्रों को पावन कर चातुर्मासाब्द बापपुरा की ओर बिहार कर दिया।

स २००० का चातुर्मास बापपुरा में -

गुहदेव का आयादशुक्ला सप्तमी के दिन चातुर्मासाब्द बापपुरा आगमन हुआ। यहाँ शकरलाक्ष्मी कोठारी के मकान में गुहदेवका बिराजना हुआ। मन्दिर के उपाध्यक्ष में गुहदेव का प्रतिबिम्ब व्याख्यात होता था। जैन-अजैन सभी वर्ग उपदेश का लाभ उठाते रहे। २१, १७, १९, ६, ८ आदि अनेक उपस्थर्षा एवं पौष उपवास अगणित हुए। खारी नदी की बाढ़ से पीड़ित लोगों को गुहदेव के उपदेश से स्वानाथ लोगों ने बड़ी सहायता दी। बाहर के दर्शनार्थी भी बड़ी संख्या में आते थे। चातुर्मास समाप्ति के बिहार के दिन का विवाह समारोह अपूर्व रहा। मादकीबाले गुमानीलालजी चार माह तक गुहदेव की सवामें ही रहे थे। उनका विशेष आग्रह पर गुहदेवने मादकी की तरफ बिहार कर दिया।

वहाँसे क्रमशः बिहार करते हुए मन्डोला आये। वहाँ के राजाजी सा० ने महाराजजी की सेवा की। बिहार कर घोरणासे देवास पधारे वहाँ पर मेवाड़ मूपणजी म के पास से निकल कर चान्द मुनिजी आये और महाराजजी से बिनति की कि मुझे अपने पास रखलो। गुहदेवने वासव्यमावस करमाया कि इतस्तत् प्रमण्य करने से सधम दूषित होता है अतः अच्छा तो यही है कि आप पुनः मेवाड़ मूपणजी के पास ही रहें जाइए। मन्डोलावाड़ संघ का आग्रह था

कि आप तो क्षमा के सागर हैं अतः शरणागत की रक्षा तो होनी ही चाहिए। देवास में शास्त्रमर्यादानुसार चान्दमुनि को महाराजश्री ने अपने साथ में शामिल कर लिया।

अभीतक महाराजश्री का विहार क्षेत्र मारवाड और मेवाड तक ही सीमित था। अतः उनके मनमें आया कि क्यों नहीं विहार क्षेत्र को विस्तृत किया जाय ? जैन धर्म के प्रचार की उद्भट भावना जिसके दिल में होती है वह सकुचित क्षेत्र में कैसे रह सकता है। सोचा कि मालावाड से अहमदाबाद (गुजरात) समीप ही पडता है अतः फरसा जाय। पर वयोवृद्ध मुनिश्री कन्हैयालालजी म सा का स्वास्थ्य ऐसा नहीं था कि इतना लम्बा विहार कर सकते। अन्त में यह निर्णय हुआ कि मुनिश्री कन्हैयालालजी म सा की सेवामें चान्दमुनि को रखा जाय। तदनुसार मुनिश्री कन्हैयालालजी म सा एव चान्दमुनि ठाना दो मेवाड की तरफ प्रस्थित हुए एव मैंने और युवाचार्यश्रीने अहमदाबाद की ओर विहार कर दिया। अहमदाबाद पहुँचने पर दरियापुरी संप्रदाय के सन्त पूज्यश्री ईश्वरलालजी म सा प मुनिश्री भाईचन्द्रजी म सा और सदानन्दी श्री छोटालालजी म सा आदि सन्त सतियों का मधुर मिलन हुआ। सम्मिलित व्याख्यान हुआ करते थे। जनता में धर्म ध्यान का उल्लास अपूर्व था। इतने में ही बलभनगर (मेवाड़) से श्रीसव की ओर से मन्देश आया कि चान्दमुनि, मुनिश्री कन्हैयालालजी म सा को एकाकी छोड़कर चला गया है। बड़ी वेदना हुई। पर उपाय क्या था ? महाराजसा थे तो अहमदाबाद, पर मन बड़े महाराजश्री में लगा हुआ था। अब सौराष्ट्र में जाने का विचार स्थगित कर युवाचार्यश्रीने पुनः मेवाड़ की ओर विहार कर दिया। मार्ग में साबरमती, कछोल सिद्धपुर होते

चातुर्मास करवान की अपनी भावना प्रगट की। गुहरेव न उसे स्वीकार कर लिया। वहाँ से विहार कर आमपास के अनेक क्षेत्रों को पावन कर चातुर्मासार्थ बापपुरा की ओर विहार कर दिया।

स २००० का चातुर्मास बापपुरा में -

गुहरेव का आयातगुक्ता सप्तमी के दिन चातुर्मासार्थ बापपुरा आगमन हुआ। वहाँ राकरलालजी कोठारी के मकान में गुहरेवका विराजमा हुआ। मन्दिर के उपाध्यक्ष में गुहरेव का प्रतिदिन व्याख्यान होता था। बौद्ध-अज्ञान सभी वर्गों उपदेश का साम उठाते रहे। ११, १७, १९, ६, ८ आदि अनेक उपरस्पर्षा एवं पौष उपवास अगणित हुए। स्वारी नदी की बाढ़ से पीड़ित लोगों को गुहरेव के उपदेश से स्वानीय लोगों ने बड़ी सहायता दी। बाहर के दूरानार्थी भी बड़ी संख्या में आते थे। चातुर्मास समाप्ति के विहार के दिन का विहाद समापेह अपूर्व रहा। मादकीवाले बुमानीशालाजी चार माह तक गुहरेव की संभामें ही रहे थे। उनके विरोध आग्रह पर गुहरेवने मादकी की तरफ विहार कर दिया।

वहाँसे क्रमशः विहार करने हुए अञ्जोल आये। वहाँ के राजाजी सा० ने महाराजजी की संभा की। विहार कर घोरगण्ड से देवास पधारे वहाँ पर मेवाड़ मूपणजी से के पास से निकल कर चाण्ड मुनिजी आये और महाराजजी से बिनति की, कि मुझे अपने पास रखलो। गुहरेवने वासन्धभावसे परमात्मा कि इतस्तत् प्रमाण करने से संयम दूयित होता है अतः अञ्जालो महा है कि आप पुनः मेवाड़ मूपणजी के पास ही चले जाएँ। अञ्जालो संघ का आग्रह था

कि आप तो क्षमा के सागर हैं अतः शरणागत की रक्षा तो होनी ही चाहिए। देवास में शास्त्रमर्यादानुसार चान्दमुनि को महाराजश्री ने अपने साथ में शामिल कर लिया।

अभीतक महाराजश्री का विहार क्षेत्र मारवाड़ और मेवाड़ तक ही सीमित था। अतः उनके मनमें आया कि क्यों नहीं विहार क्षेत्र को विस्तृत किया जाय ? जैन धर्म के प्रचार की उद्भट भावना जिसके दिल में होती है वह सकुचित क्षेत्र में कैसे रह सकता है। सोचा कि मालावाड़ से अहमदाबाद (गुजरात) समीप ही पड़ता है अतः फरसा जाय। पर वयोवृद्ध मुनिश्री कन्हैयालालजी म. सा का स्वास्थ्य ऐसा नहीं था कि इतना लम्बा विहार कर सकते। अन्त में यह निर्णय हुआ कि मुनिश्री कन्हैयालालजी म. सा की सेवामें चान्दमुनि को रखा जाय। तदनुसार मुनिश्री कन्हैयालालजी म. सा एव चान्दमुनि ठाना दो मेवाड़ की तरफ प्रस्थित हुए एव मैने और युवाचार्यश्री ने अहमदाबाद की ओर विहार कर दिया। अहमदाबाद पहुँचने पर दरियापुरी संप्रदाय के सन्त पूज्यश्री ईश्वरलालजी म. सा प मुनिश्री भाईचन्द्रजी म. सा और सदानन्दी श्री छोटालालजी म. सा आदि सन्त सतियों का मधुर मिलन हुआ। सम्मिलित व्याख्यान हुआ करते थे। जनता में धर्म ध्यान का उल्लास अपूर्व था। इतने में ही वल्मनगर (मेवाड़) से श्रीसव की ओर से मन्देश आया कि चान्दमुनि, मुनिश्री कन्हैयालालजी म. सा को एकाकी छोड़कर चला गया है। बड़ी वेदना हुई। पर उपाय क्या था ? महाराजसा थे तो अहमदाबाद, पर मन बड़े महाराजश्री में लगा हुआ था। अब सौराष्ट्र में जाने का विचार स्थगित कर युवाचार्यश्री ने पुनः मेवाड़ की ओर विहार कर दिया। मार्ग में साबरमती, कछोल सिद्धपुर होते



हुए पालमपुर पधारे वहाँ पूम्पभी चासीलालजी म सा  
 में मिलन हुआ। पालमपुर में आबूरोड, पीडबाड़ा, मालवचीरा  
 होकर तरपाल पहुँचे। वहाँ नरेशमा बसवंतगढ़, गोगुन्दा  
 का पात्रक संध चातुर्मास की बिनती के लिये आया। पर  
 गुरुदेवने फरमाया कि जबतक मैं बड़े महाराजभी कन्हैयालालजी  
 के दर्शन नहीं कर लू तब तक किसी को भी चातुर्मास  
 की स्वीकृति नहीं दे सकता। वहाँ से गुरुदेव उमबिहार कर  
 मुनिजी कन्हैयालालजी म सा की मेधामें वल्लभनगर पहुँच  
 गये। वहाँ नरेशमा तरपाल गोगुन्दा नाई आदि गाँवों का  
 संध चातुर्मास की बिनती क सिए आ पहुँचा। विशिष्ट परो  
 पकार को ध्यान में रखकर गुरुदेवने नरेशमा संध की बिनती  
 को मानली। गुरुदेव क चातुर्मास की स्वीकृति से नरेशमा  
 संध को अपार ह्व हुआ।

सं. १००१ का चौमासा नाई —

वल्लभनगर स गुरुदेव न नरेशमा चातुर्मास करने की  
 माबन्ध म बिहार कर दिया। डबाक, वेचारी भायड़ आदि  
 क्षेत्रों को पाबन करते हुए "नाई" पधारे। गुरुदेव के नाई  
 पधार्पण स लोगों में बार्मिक भावना दुगन्ती हो गई। साथ ही  
 वषा भी इतना हुई की नदी मार्गों में बाढ़ आ गई थी। सबत्र  
 पाना ही पामी दृष्टिगोचर होता था। उस समय गुरुदेवभी  
 कन्हैयालालजी म सा के पैरों में अचानक ही पीडा हो गई।  
 अनेक उपचार करने पर भी पीडा बढती ही गई। मजबूर  
 होकर गुरुदेव को यहा चातुर्मास करना पड़ा। नरेशमा संध  
 गुरुदेव के आगमन की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था  
 किन्तु अभितकम्पय ऐसी ही थी। यह अपूर्व लाभ अनायास ही

नाई सघ को मिल गया। गुरुदेव के चातुर्मास से परोपकार के अच्छे अच्छे काम हुए। अनेकोंने जीवहिंसा, मद्य, मास आदि व्यसनों का त्याग किया। तपश्चर्या भी खूब हुई। यहाँ के सघ ने आगत बन्धुओंकी एवं गुरुदेव की जो सेवा की वह सदैव प्रशंसा के शब्दों से अंकित रहेगी।

दीपमालिकाके अवसर पर हम तीनों सन्त एक साथ बीमार पड़ गये। यहाँ तक कि उठना बैठना चलना फिरना भी बन्द हो गया था। जब उदयपुर में विराजित दिवाकरजी म सा के सन्तों को इस बात का पता चला तो उसी समय सन्त सेवा में आ गये। सेवार्थ आये सन्तोंने जो अपनी सेवा वृत्ति का परिचय दिया वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। कुछ स्वस्थता के बाद सन्त पुन उदयपुर चले गये। चातुर्मास समाप्ति के बाद भी स्वास्थ्य लाभ के लिए यहाँ कुछ समय तक रुकना पड़ा। वहाँ से पूर्ण स्वास्थ्य लाभ कर गुरुदेव मालावाड-भौमट अनेक छोटेबड़े क्षेत्रों को पावन करते हुए उदयपुर पधारे। वहाँ महावीर मंडल में ठहरे। प्रतिदिन व्याख्यान होता था। वहाँ कुछ दिन विराज कर गुरुदेव वहाँ से विहार कर गुड़ली देवारी आदि क्षेत्रों को फरस कर होली चातुर्मासार्थ खेमली पधारे। यहाँ पर अनेक उपकार के काम हुए।

क्रमश विहार कर घासा पधारे मेवाडभषण जी म० से मिलन हुआ, फिर पलाना, सिन्दू, सागौल, बनेडिया देवरिया, गगापुर, पोटला आदि अनेकों ग्रामों को स्पर्शते हुए आषाढ शुक्ला नवमी के दिन गुरुदेव चातुर्मासार्थ कुवारियाँ पधारे।

वि स २००२ क चौमासा कुवारियाँ

यहाँ के सभ में पारस्परिक वैममत्स्य रहने के बावजूद भी भीमान् शेर शीरामाताजी गणेशलाक्ष्मी सा पिपासा के सहयोग अपूर्व रहा। आगन्तुक दर्शनार्थियों के भोजनादि की व्यवस्था भी। साब ही इनके मातृभी ने इस चातुर्मास में बड़ी शीरता का परिचय दिया। चातुर्मास को सफल बनाने का सारा श्रेय इन्हीं को है। यहाँ का चातुर्मास पूर्ण कर गुरुदेवने बदनौर प्रांत की ओर विहार कर दिया।

बदनौर आसिद्ध चैतपुरा आदि गावों को स्पर्शते हुए गुरु देव पड़ासौसो पधारे। यहाँ चातुर्मास की विनाश के लिए मसूदा का सभ आया। अत्यामह करने पर गुरुदेव ने मसूदा क्षेत्र को फरसने के बाद चातुर्मास करने की स्वीकृति देगा। गुरुदेव का मसूदा परार्पण हुआ। यहाँ के लोगों की भोजना देकर आगामा चातुर्मास यही पर अतीत करने का विचार किया।

वि स २००६ का चौमासा मसूदा -

मसूदा प्राचीन काल से ही धर्मों का प्रमुख केन्द्र रहा है। मसूदा के सभ में शास्त्रशास्त्राध्ययके प्रति रुचि रखने वालोंकी कमी नहीं है। युवाचर्यज्ञा अंस शास्त्रज्ञ मुनियों के चौमासे की सुनकर स्वाभ्याग प्रेमियों का हृदय आनन्द और उत्साह से भर गया। मसूदा चौमासार्थ पधारते हुए गुरुदेव अत्रमेर पधारे जहाँ पं मुनिभी करतुरचम्बजी म सा० से मिलन हुआ। शठ करारीचम्बजी को हवेली पर सम्मलित व्याख्यान होता था। यहाँ म बिहारकर व्याधर पधारे। यहाँ कुम्हनमवन में भी दिवाकरजा म सा० की सम्ममरहली से मिलकर यही प्रसन्नता हुई। अनेक सन्तों का समागम उत्साह प्रद रहा।

व्यावरसे विहार कर गुरुदेव ने अनेक क्षेत्रों को पावन करते हुए आषाढ शुक्ला दसमी के दिन चातुर्मासार्थ मसुदा क्षेत्रमें प्रवेश किया। यहाँ सांप्रदायिक वातावरण उमड़ पड़ा था, पर गुरुदेव के शान्तस्वभाव के कारण आगे उग्र रूप न ले सका। जहाँ शान्ति का सागर उमड़ता है वहाँ द्वेषाग्निका प्रभाव स्वतः शान्त हो जाता है। इधर गोविन्दगढ़ से पूज्य मोतीलालजी म सा. ने कुछ ऐसे चर्चास्पद पत्र भेजे कि अगरे उसपर ध्यान दिया जाता तो सांप्रदायिक वातावरण और भी उग्र बन जाता। किन्तु गुरुदेव अपने विरोधियों के प्रति भी सदा प्रेम की ही भावना रखते थे। अतः गुरुदेव के शान्त स्वभाव से प्रभावित वहाँ के विवेकवान श्रावकोंने उन पत्रों पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया।

चातुर्मास के बाद राताकोट, बादनवाड़ा, टाटोटी, मिनाय विजयनगर आदि क्षेत्रों को पावन करते हुए गुरुदेव गुलाबपुरा पधारे। यहाँ से विहार का उपक्रम रखा जा रहा था कि चित्तौड़गढ़ से दिवाकरजी म की स्वर्णजयन्ती में सम्मिलित होने का स्नेहाकित आमंत्रण पाकर गुरुदेव चित्तौड़ पधारे। वहाँ उ० प्यारचन्दजी म सा आदि मुनिवगों से मिलकर आनन्दविभोर हो गये। यही पर रेलमगरावाले भाइयों की विनति आगामी चौमासे के लिए स्वीकार की।

स. २००४ का चौमासा रेलमगरा -

चित्तौड़ से प्रस्थान कर राशमी आरणी पहुँचा सौनियाणा, लावोला, सहाड़ा, पोटला आदि अनेक गाम नगरों में विचरण कर जैनधर्म के मौलिक तत्वों का प्रचार और सयम पालते हुए

आपाह सुधी को रेलमगरा चौमासा के लिये प्रवेश कर भीमान् कमललालजी मेहता की इहेली में बिराजे। यद्यपि यहाँ स्वानक-बासी समाज के अल्प ही पर हैं परन्तु गुरु महाराज के समन्व-यवाही विचार होने से अनेतर जनता का ठबा ठेरापन्नी भाइयों का व्याख्यानो मे उल्लेखनीय सहयोग रहा। बीच में पर विष्णु स तोपियो ने बल्लेड़ा सड़ा करने का प्रयत्न भी भरसक किया पर उन्हें अपने कार्य मे विफलता का ही मुँह देखना पड़ा। बल्कि जो पुराने सगाहे से से मो भिट गये। आगस्त्यक अतिथियो का समुचित स्वागत सेठ सा भी लोमचन्दजी मांगी-लाकजी सा मेहता द्वारा होता रहा। धर्मध्यान अच्छा हुआ। वर्षोवास समाप्त कर गुरुदेवने अम्पत्र बिहार कर दिया।

### स २० ५ का चौमासा वापपुरा -

वापपुरा का भीसय महाराजजी की विद्वत्ता और शय्य स्वभाव से मलिर्भाति परिचित ही था। अत चौमासे की बिनती करने के लिये अनेकवार महाराजजी की सेवामे पहुँचा। महाराज भीनेधर्म का विशेष ज्ञान जानकर स्वीकृति देयी। नार्ह से वापपुरा के बीचका मार्ग बड़ा विकट है। इस मार्ग को पार करके एक बहुत बड़ा साहस का काम था। अठ-आठ मील के पने बंगलों के अरख सूर्य के दर्शन दुर्लभ थे। बंगल तो इस जीवन में बहुतरे देख चुका हूँ। किन्तु इस विराट प्रकृति रम्य बंगल को देखने का गुरुदेव के साथ मुझे भी अवसर मिला था। स्यो-प्यो जगल के बीच से हम गुजर रहे थे नसो से एक अनि र्वचनीय आनन्द को अगड़ाई अनुभूति की उपलब्धि और रोमांस की रोचकता मानोएह रह कर मनको उद्विग्न कर रही थी औररह रह कर हृदय मानो अलौकिक आवावेश से भर उठता। इन्

क्षण पहले की भूख-प्यास ना जाने कहाँ लापता होचली । सोचने लगा-अहा ! यदि यहीं रम जाता । मन एकाएक अतीत के वनजीवन की मुनिजीवन रगीतियों मे रमने लग पडा । मानस पटलपर महा-कवि कालिदास के अमर शाकुन्तल के पन्ने पलटने लगे । महर्षि कण्व के आश्रम का चित्र इस भूमि पर दृष्टिगोचर होता था ।

पहाड़ों के नीचे ऊबड़-खाबड़ भूमि, कहीं-कहीं समतलभी थी, और ऊपर गगनचुम्बी विशाल वृक्षों की मघन सुघड छाया । छाया से छिपा हुआ आकाशका अवकाश, जगल की कटाई के कारण कही-कही सावकाश भी खुली फैली जगह वृक्षों की चौड़ाई, मिघाई और लम्बाई देखकर आखों को आश्चर्य हो रहा था । अनेक प्रकारके वृक्ष, भौंति-भौंति की लताएँ । कहीं कहीं वृक्षों पर फैली घनी लताएँ उनकी अभिन्न शाखा-जैसी दीख रही थीं । पहाड़ा भरनो का कल-कल निनाद मनको हर्षा विभोर कर देता था । पहाड़ों की रचना बड़ी नयनरम्य थी । इस वन में वाघ, शेर, चिते आदि हिंस्र जगती प्राणियों की कमी नहीं है । यहाँ का मुख्य व्यवसाय बॉस हरड़ा आदि का है । इन पहाड़ों में स्थल-स्थल पर आदिवासी भील लोगों की बस्ती है । शहरी वातावरण से शून्य ये आदिवासी अतिथियों का स्वागत बड़े प्रेम से करते हैं । उनके द्वार से कोई अतिथि भूखा नहीं जा सकता । जगह-जगह नाई (गाव) के श्रावकों की दुकाने हैं । साथ में चलने वाले श्रावकोंने महाराजश्री की मेयामें विनति की, कि हमेंभी आहार पानी बहराने का लाभ मिलना चाहिए, पर महाराजश्री ने फरमाया की ऐसा करना जैन आगम के शास्त्रों पूर्वार्चियों की मर्यादा के विरुद्ध है । जब संयम पानना है तो उसमें सदोषता नहीं आनी चाहिए । मुक्तिमार्ग य विहित आचरण अनुचित है । चाहे कितना ही परिपक्व सुदृढ़ धरम पडे मैं अपनी आगम समर्यादित परम्परा नहीं छोड़ूँगा ।

गुरुदेवने बही क र्वाई वृकानदारों से जो कृष्ण मी निर्दोष मिला उस प्रहम्य किया । इस प्रकार बिकट वन को पार क आसाठ शुक्ला सप्तमी को बाणपुरा पहुँचे । जहाँ शीमासे : कई बड़ा-बड़ी उपर्याएँ हुई । प्रभावनाएँ भी प्रचुर परिमाण में हुई । भ्रष्टावाङ्ग का संघ तथा आसपास के गाँवों का सी समय-समय गुरुदेव क दर्शन का लाभ उठाते थे । यहाँ के ठेकदार (कलाल) गुरुदेव क उपदेश स बड़े प्रभावित हुए । यहाँ ता कि उन्होंने महाके लिए वारु-मांस त्यागकर शुद्ध धर्मको स्वीकारक लिया । ठेकदार लोग बस्ताइ से व्याख्यान प्रवृत्त करते थे यहाँ क संघने भी उनकी धार्मिक भाषना की कवर की उनके द्वारा शानी गई प्रभावना स्थानीय भाषक बड़े प्रेम क प्रवृत्त करता था । चार माह तक जो व्याख्यात्मक इस धार प्रवाहित की गई उसकी स्मृति आज भी प्रभावित बनी हुई है । चातुर्मास समाप्त कर गुरुदेवने अन्य क्षेत्रों को धर्म बाणी कें पावन करने के निमित्त विहार कर दिया ।

धर्म की शुद्ध परिभाषा के अनुसार धर्म उन बुद्धिगम्य नियमों की संज्ञा है जिनसे व्यक्ति का जीवन समाज क जीवन और विश्व प्रवृत्ति का कार्य चारण किया जाता था धर्म की साम्यता है कि ये तीनों क्षेत्र मकरुण हैं जिनमें भेद की शिबारे नहीं है और तीनों में परस्पर भेद बिठिया जा सकत है । इस युक्ति की कोश ही धार्मिक साधना है । दूसरे व्यक्ति जिन्हे हम सन्त महात्मा आचार्य कहते हैं संकल्प की दृढ़ता और धर्म की शक्ति से व्यक्ति समाज और विश्व के समन्वय को हाँड निकालते हैं । इसमें उनके जीवन में प्रकार क एक शीपक प्रवृत्तित हो उठता है । जिससे और बहुतों के मार्ग सुम्भता है कि कैसे वे भी अपने जीवन में अन्वयर को

हटा कर उस प्रकाश को, उस शान्ति को, उस बड़े आनन्द को और मनुष्यों के साथ अद्रोह और सेवा की भावना में प्रवृत्त होने की युक्ति प्राप्त करे, जिसका नाम वास्तविक जीवन है। तात्त्विक दृष्टि से देखा जाय तो जीवन न बहुत साधन सचय करने के लिए है, न ऊँची पद प्रतिष्ठा पाने के लिए है और न पोथी पुस्तकों की बहुतसी जानकारी बटोरने के लिए है। जीवन तो सदाचार के लिए है। उत्कृष्ट समय की साधना के लिए है। सदाचार ही तप है। मनुष्य में जैसे ही सदाचार का प्रवेश होता है, उसमें धर्म, ज्ञान, तप, सब कुछ सचित होने लगता है। गुण समूह की प्राप्ति से ही मनुष्य का व्यक्तित्व बनता है। साधारण बुद्धि के मनुष्य धर्म और तप का अर्थ सिद्धि और चमत्कार समझते हैं। सदाचार का चमत्कार तो ठीक ही है। पर वह देवताओं के यहाँ से टपकने वाली वस्तु नहीं है। इम भवन की एक-एक ईंट हमें अपने हाथों से चूननी पड़ती है तभी यह भवन रहने योग्य बनता है और उममें अनेक सद्गुणों की शान्तिप्रद वायु बहती है।

आज के इस अशान्त जगत में द्रोह बुद्धि से सोचना और कार्य करना तो आसान है पर उसमें से अद्रोह और शान्ति का मार्ग निकाल लेना ऐसा महान कार्य है जिसका उपकार मानवजाति कभी भूल नहीं सकती। आज हमारा मुनि समुदाय भी अद्रोह बुद्धि से ही समाज का उत्थान कर सकता है, यह सुनिश्चित है। हमारे चरित्रनायकजा इसी सिद्धान्त को मानने वाले और जीवन में उतारने वाले धर्मवीर सन्त थे।

युवाचार्यजी ने सुना कि पूज्य मोतीलालजी म सा के समीप जूनदा गाँव में वहाँ के रहनेवाले भाई श्री मागीलालजी



हिगड़ मार्गशीर्ष में वीचा ग्रहण कर रहे हैं। इनकी आत्मा में गुरु भावप्रेम आगृत हो उठा। अश्रोह की भावना प्रबलतम हो उठा। उग्रहाने सप्रदाय सघटन का यह अपूर्व अवसर दत्ता। वे बिना आमंत्रण के ही खमदा गाँव में पहुँच गये। इनके आगमन से पू० मोतीलालजी म सा के सममें इर्ष्या की आत्मा मदक उठी। यहाँ तक कि स्थानीय भावकों का इन्हें उतरने के लिए स्थानतक देनेकी अभ्यवस्था करदी थी। गुरुदेव गाँव में सब जगह घूमे किन्तु इन्हें उतरने के लिए कोई स्थान नहीं मिला। फिर भी इस सम्यक् का मन क्रोध द्वेष के स्पर्श से बहुत दूर रहा। गुरुदेव की शान्तमुद्रा न गाँव की पटेस जाति को बड़ा प्रभावित कर दिया। संस्वयं के पंचायती मन्दिर में ले जाने का आग्रह कर रहे थे। इन्होंने में स्थानीय वेगपंचानुयायी श्रीमान मार्गशीर्षजी चाखेल सखिनय गुरुदेव से प्रार्थना की और पटेस बन्धुओं म नम्रतापूर्वक समझकर अपना निजि मकान ठहरने के लिए खोल दिया। गुरुदेव एक महान ज्येष्ठ को लेकर भाय वे वे समझते थे कि ज्येष्ठ जितना महान होता है, उसका रास्ता उतना ही लम्बा और बीहड़ होता है। और ज्येष्ठ की सफलता भीन में ही है। गुरुदेव विरोधी बातावरण में भी अत्यन्त शान्त थे। उनकी कोई निन्दा भी करता तो उसका प्रत्युत्तर बड़े मित्रतापूर्ण रङ्गों म देते थे। सम्यक् दूसरे के दोषों को छोड़कर गुण को ही खोजते रहते हैं। मसवाकल के चम्पू वृक्षों पर लिपटे हुए सर्पों के बिप को म ग्रहणकर वायु चम्पू मकी सुगन्धि का हो बहन करती है। गुरुदेव की गुण प्रादुर्भाव से एक उनक चारित्र की सुगन्धि धीरे धीरे लोगों तक पहुँचने लगी। अन्ततः स्थानाय बातावरण गुरुदेव के अनुकूल हो गया। मुवाचार्य की शान्तिप्रियता से पूज्य मोतीलालजी म सा

की क्रोधाग्नि धीरे-धीरे शान्त होने लगी। साथ ही गाँववालों ने पूज्य मोतीलालजी म. सा. को साफ शब्दों में कह दिया कि जब तक आप सन्तों का आपस में मेल नहीं हो जाता तब तक आपके दीक्षा कार्य में हमारा कोई सहयोग नहीं रहेगा। श्रावकों की इस गरी और स्पष्ट बात ने पूज्य मोतीलालजी म. सा. युवाचार्य श्री मांगीलालजी म. सा. से मिले। अनेक बातों में चर्चा हुई। अन्ततः पूज्य मोतीलालजी म. सा. से युवाचार्य श्री का मेल हो गया। वर्षों से जो आपस में मन-मुटाव था गुरुदेव के विशाल हृदय ने उसे एक ही क्षण में मिटा दिया। गुरुदेव की अन्तर आत्मा बोल उठी— “क्या भरोसा है जीवन का ? प्रभात के तारे की तरह यह क्षण-भंगुर है। मनुष्य कितना पागल है जो क्षणिक जीवन के खातिर रागद्वेष के भयकर गर्त में पडकर अपनी आत्मा को मलीन बनाता है। उनके पीछे लगकर आपा भी भूल जाता है। दोनों सन्तों के प्रेमपूर्ण मिलन से संघ में भी आनन्द छा गया। सन्त-मिलन से दीक्षा-उत्सव में भी अपर्व उत्साह नजर आता था किन्तु गुरुदेव का पावन मन सप्रदाय के संकीर्ण वातावरण से अत्यन्त उद्विग्न हो उठा। उन्हें अपना युवाचार्यपद भयभीत साधना के लिए बाधक दृष्टिगोचर होने लगा।

### सत्ता का त्यागः—

मानव सत्ता का दास है, अधिकार लिप्सा का गुलाम है। गृहस्थ-जीवन में क्या, साधु-जीवन में भी सत्ता-मोह के रोग से छुटकारा नहीं हो पाता है। ऊँचे से ऊँचे साधक भी सत्ता के प्रश्न पर पहुँच कर लड़खड़ा जाते हैं। जैन धर्म की

एक के बाद एक होने वाली शाखा प्रशाखाओं के मूल में यही सत्ता-शोषपता और अतिकार शिप्ता रही है। आपार्य्य आदि परब्रियों के लिए कितना कसाह और कितनी विडम्बना होता यह किसी से छुपा नहीं है। पूर्य्य गुरुदेव को युवाचार्य पर के पत्रपात ओ कट्ट अनुभव हुए उससे उन्होंने निरचय किया कि अगर तुम्हे आरम साधना करना है तो पर-अतिकार के प्रपंच से दूर रहना होगा। स्याति केवल जनता की मांम है और वह प्रायः अस्वस्थ जनक होती है। गुरुदेवने पर त्याग करने का निरचय किया। दीक्षा का अवसर था। इकारों का जनसमूह एकत्र था। गुरुदेवने शम्भ मुत्रा से यह घोषित किया कि मैं युवाचार्य का पर त्याग रहा हूँ एवं भविष्य में भी केवल मुनि पर क सिवाय मैं किसी भी प्रकार का पर ग्रहण नहीं करूँगा। गुरुदेव को इस प्रकार की अचानक घोषणा से अपस्थित जनता अबाक हो गई। गुरुदेव के इस महान त्याग से लोग उनको मुक्त करठ में प्रशंसा करने लगे। अम्भ है ऐस सन्त को ओ चारिप्रधन की रक्षा के लिए इतना बड़ा त्याग करठ ई।

कमरा वहाँ स गुरुदेव नाई पधारे। नाई स बिहार कर उदकपुर पधारे। यहाँ रामपुरा (अप्यभारत) क अज्ञालु आबक भी बोतनामजा सुराणा कार्य बक्ष आये और महाराज भी क विशाल शास्त्रीय ज्ञान को इत्ककर मन ही मन अग्रिताप करने लगे कि क्या ही अथजा हो कि इन ज्ञान और कावशील मुनिबरो का बर्पोवास हमारे नगर में अ्यतीत हो। हमम हमाराहा नहा मजाने कितने जालों का अन्वयस होगा। श्री सुराणाधीन अपनी मनोदक्षा स भी क चरणों में अ्यक्त की। मन्धी माधना कभी न कभी सकल होकर ही रहती है।

विशेष लाभ जानकर महाराज श्री ने कहा कि मैं पूज्य मोती-लालजी म. सा. की आज्ञा में हूँ। उनकी आज्ञा मिनने पर ही मैं कुछ कह सकता हूँ। क्रमशः रामपुरा का प्रतिनिधि मण्डल पू. महाराज श्री की सेवा में आया और उनसे आज्ञा प्राप्त करवा कर गुरुदेवने आगामी वर्षीयाम रामपुरा में व्यतीत करने का निश्चय किया।

स २००६ चौमामा रामपुरा —

उदयपुर से प्रस्थान कर मार्ग में विचरते हुए क्रमशः निवा-हेडा पहुँचे। वहाँ पर दक्षिण विहारी पूज्यश्री आनन्द ऋषिजी म के पधारने की सूचना मिल गई। गुरुदेव ने उनके सामने जाकर उनका स्वागत किया। यहाँ पर कुछ पक्षपात का वातावरण हो चला था, कतिपय श्रावकों ने महाराजश्री को अलग ठहराने का प्रपच किया था। परमपूज्य श्री आनन्द ऋषिजी म सा के स्नेहने ऐसा न होने दिया, वहाँ आनन्द ऋषिजी म० के साथ कुछ दिन ठहर कर लोगों में धार्मिक भावनाकी जाग्रति की। वहाँसे क्रमशः नीमच मनासा और कुकडेश्वर होते हुए आपाढ शुक्ना दसमी के दिन चानुर्मासार्थ रामपुरा में प्रवेश किया। यहाँ के श्रावक बड़े विचक्षण हैं। एक प्रकार से यह साधुओं का परीक्षण स्थल है। आचारहीन या शिथिलाचारियों को यहाँ का श्रावकवर्ग तत्काल पलायन कर देता है। शुद्धाचारियों का स्वागत भी उतने ही उत्साह के साथ करने में गौरवान्वित होते हैं। कथा-कहानियों के बजाय आगम सुनने में उनकी रुचि रहती है। द्रव्यानुयोग के अनुगामी भला शिथिलता कैसे वरदायत कर सकते हैं।

महाराजश्री के व्याख्यान का ऐसा प्रभाव पड़ा कि न केवल वहाँ की जैन जनता स्वाध्याय में ही प्रगतिमान रही,

अपितु तपश्चर्मा मे भी परचात् पद्म रही । आत्मा निमित्तवासी है । जैसा निमित्त मिलता है वैसा ही व्याकरण स्वाभाविक है ।

जीवनप्रेरक सन्त का वियोग :-

माहों की पूर्णिमा की शामको बड़े महाराज मुनिजी कन्हे बालासखी म सा. न प्रतिक्रमण प्रत्याख्यान किये । सब साथी मुनियों को भी वैसा ही करवाया । प्रतिक्रमणानन्तर माहकों के विशिष्ट आग्रह से चौबीसी और दो प्रभु के रतन भी सुनाये । रात्री को लघुनीति के लिए खानेपर अन्धानक पैर फिसल गया और ऐसे गिरे कि फिर उठ न सक । उसीवक्त डाक्टर बुलाया गया किन्तु डाक्टर क आने क पूर्व ही उनका आत्मा देह छोड़कर चला गया था । इनके स्वर्गवास स सर्वत्र रोक जा गया । वे अत्यन्त भद्र और सरलप्रकृति के सन्त थे । पुनित संयममार्ग में प्रवृत्त होने के परचात् तो आपने अतीव आध्यात्मिक प्रगति की । निरन्तर शास्त्रस्वाध्याय में लहीन रहना तपश्चर्मा करना वैसावृत्त्य आधि आपकी विशेषताओं से आपने साधु समुदाय में एक विशिष्ट स्थान पा लिया था । स्वर्गवास के दो दिन पूर्व ही आपको अपनी मृत्यु का आभास मिला हुआ था । सम्मनित एव वर्षों क साथी एवं सच्चे स्वधिर मुनि क स्वर्गवास से इनके विलपर गहरी चोट पहुँची । महाराजजी का मन इतना उद्विग्न रहने लगा कि आत्तुर्मास में स्वल्प समय के शिष्ये स्वाम पारवर्तन करना पड़ा । यों तो सभी को एकदिन शरीर छोड़ना ही पड़ता है, पर ने दिनों का माह छूटता है तो मनमें अकसोम होना रश् (बिक है) । आत्तुर्मास समाप्ति के गुरुदेव शारीरिक अस्थिरता बरा कुछ दिन गोंव के बाहर रामद्वारे में ठहरे । वहाँ पूण स्वास्थ्यलाभ कर मिंगसर

वदी तेरम को विहार कर दिया। कुकडेश्वर, मनासा पधारे। यहाँ पर जैन अजैन जनताने बड़ी सख्या में महाराज सा० के व्याख्यानों से लाभ उठाया। क्रमश वेगू आये जहाँ मुनिश्री गव्वूलालजी म सा. ठाना ४ व मुनिश्री छोगालालजी म सा ठाना ५ का सहमिलन हुआ। वहाँ से विहार कर महाराजश्री सींगोली विजौलिया वून्दी होते हुए कोटा पधारे। यहाँ धर्म प्रभावना विशेष रही। दीक्षार्थी देवीलाल के पिता यहाँ आये और अपने लाढ़ले को महाराजश्री के चरणों में सहर्ष सौंप गये। पिता ने पुत्र की आत्मनिर्मलता को भाँप लिया था। कोटा से भवानीमण्डी जाने पर जैन दिवाकरजी म. सा के दर्शन का लाभ हुआ।

विहार करते हुए क्रमश अवतिजा-उज्जैन पधारे। यह मालववासियों का सौभाग्य था कि ऐसे परमज्ञानी और आध्यात्मिक मुनि का आगमन उनके नगर में हुआ। वहाँ का श्रावक समुदाय विशाल और श्रद्धालु है। व्याख्यान में सर्वाधिक सख्या रहा करती थी।

यहाँ से देवास व इन्दौर पधारे। मुनिश्री सौभाग्यमलजी महाराज सा का भी वहाँ पधारना हुआ। दोनों के सम्मिलित व्याख्यान होते थे। इन्दौर सघने चातुर्मास की विनति की। यहाँ के सघ प्रमुख कन्हैयालालजी सा भण्डारी ने दो बार विनती की कि इस वर्ष का चातुर्मास यहाँ ही फरमाया जावे तो अच्छा है। हमें भी आपकी वाणी का लाभ मिलना चाहिये। महाराजश्री ने फरमाया कि बड़ा शहर होने से पचम समिति का पालन यहाँ कैसे हो सकेगा ? इस बात से मैं मजबूर वाद में उज्जैन नयापुराके प्रतिनिधि मण्डल के आने पर उनकी विनति स्वीकार हो गई।

सं २००७ का चौमासा अवधिका उद्घोष -

इन्दौर में उद्घोष के चातुर्मास नियम के बाद महा राजभा ने वहाँ से बिहार कर कमरा भारतीय इतिहास प्रसिद्ध चारा नगरी पधारे । राजा भोज की थारा किसी समय भारतीय संस्कृति और सभ्यता की प्रतीक थी । संस्कृत के प्रकाण्डविद्वान अपनी बाग्यारा ने सभा को रंजित किया करते थे । देश-विदेश के विद्वानों की गंभीर वाद-विवादों में परास्त करते रहने से सरस्वती का सतत पापना इस नगरी के नागरिकों का प्रव बा । भारतीय इतिहास की अनेक महत्त्व पूर्ण घटनाओं का यह कन्द्रस्थान बा । स्थानकवामी परम्परा की दृष्टि से भी चारा पूजनीय है । कारण कि पूर्व धर्मशास्त्री म सा की यह निर्वाणभूमि रही है । यहाँ से नागरा, बचना वर, रत्नलाम छात्रोद नागदा ज'कशन आदि क्षेत्रों को अपनी अमृत बर्षिणी बाणों से पावन कर महाराज भा भावाद सुकता इममी के दिन उद्घोष पधार गये । व्याख्यानो की प्रम मण गई । जैन पाठशात्रा क विद्यापी और अध्यापक भी सुज्ञान-मल्लकी शोधिया क भी प्रवचन कभी-कभी हुआ करते थे । धर्मस्थान क साथ उपरचर्या भी खूब ही हुई । पाषको ने ज्ञान दाम भी किया जिसके परिणाम स्वरूप विपाक रास,' 'माधु बन्दना,' और 'पञ्चाधर चरित्र का प्रकाशन हुआ ।

चातुर्मास की समाप्ति के बाद बिहार कर गुरुदेव भी समकमपदा होते हुए सरस्वर पधारे । वहाँ शीघ्रापी माई भी देवीलाक्ष्मी का शीघ्रा भिगसर वही ६ को संवत्न हुई और शीघ्रा नाम पुच्छर मुनि रक्ष्य गया । वहाँ से तोर्बरबत्र मकसी होते हुए गुरुदेव शाबापुर पधारे । यहाँ पर पुच्छरमुनि की

बड़ी दीक्षा आगम विधि के साथ हुई । शाजापुर के मघने इस काम में बड़ा उत्साह बताया । यहाँ पर महाराजश्री के व्याख्यान का उपक्रम रचा जा रहा था । इतने में ही आकाशवाणी से सवाद प्रसारित सदेश सुना कि दिवाकरजी श्री चौधमलजी म. सा का स्वर्गवास हो गया है । सारा हर्ष, विपाद के रूप में बदल गया । मृतक आत्मा की शान्ति के लिए ज्ञानोत्सव और श्रद्धाजलियाँ दी गई । वहाँ से सुजालपुर होते हुए सिद्धौर पहुँचे, जहाँ नन्दलालजी पितलियों के भव्य भवन में ठहरे और इन्हीं की ओर से भक्ताभर स्तोत्र का प्रकाशन हुआ । वहाँ से भोपाल पधारे वहाँ कुछ दिन ठहर कर शीघ्र ही भेलगा की ओर विहार का कार्यक्रम था, पर भोपाल के श्रद्धालु श्रावकोंकी विनतिको मानदेकर फागुन[होली]का चौमासा वहीं बिता कर क्रमशः महावीर जयन्ती "वीना" में आकर मनाई । जहाँ दिगम्बर जैनोंने महाराज श्री के प्रति अच्छी भक्ति का परिचय दिया । इस प्रदेश में दिगम्बर संप्रदाय का बाहुल्य है । कही कही स्थानकवासी समाज है । उदाहरणार्थ पछार में महाराज पधारे तो श्रावकों ने कहा कि २० वर्ष बाद स्थानकवासी मुनियों का यहाँ पदार्पण हो रहा है ।

शिवपुरी ग्वालियर राज्य का महत्वपूर्ण नगर है । इसकी प्राकृतिक छवि प्रेक्षणीय है । यहाँ जैन पाठशाला और उच्च शिक्षणालय भी हैं । मुर्निवद्याविजयजी उनके अधिष्ठाता हैं । वह महाराजश्री से मिलने को स्थान पर आये थे और अपनी संस्था का निरीक्षण भी महाराजश्री से करवाया था । यहाँ से विहार लश्कर की ओर होना तय हुआ । स्मरण रहे कि यहाँ से भयकर जगल प्रारंभ हो जाता है । मार्ग में जैन गृहस्थों के घर नहीं आते । यहाँ तक की मार्ग में ठहरने के स्थान भी



मुर्सीघट से ही मसीब होते हैं। ग्वालियर से गुरुदेव धौलपुर आये वहाँ से आगे की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में सइवा नामक गाँव आता है। वहाँ रेलवे स्टेशन पर ठहर कर गुरुदेव आहार के लिए गाँव में पहुँचे। कई घर घूमे किन्तु किंचित् भी आहार नहीं मिला। अन्तराय कर्मका उद्यम ज्ञान गुरुदेव अपने निवास स्थान पर झीठ रहे थे। मार्ग में एक बड़ी हवेली के बाहर लोगों की बड़ी भीड़ को जमा होते देखा। गुरुदेव जब भीड़ के समीप आये तो लोगों के चेहरे अत्यन्त उदास थे। और घर के अन्दर से रुदन की भी आवाज आती थी। गुरुदेवने एकत्र भीड़ के दुःख को पहचान लिया और वही माँवना भरे शब्दों में पूजा-आप लोग बड़े व्यथित मास्तम होते हैं। इस घर में स रुदन की आवाज क्यों आ रही है? इसपर एक भाईने कहा। इस हवेली के मालिक का एककी लड़का अत्यन्त बीमार है और यह कुत्र पटों का ही मेहमान है। गुरुदेव ने यह सुन बनसे कहा-अगर आप लोग चाहो तो मैं इस घर में आ सकता हूँ? इसपर उपस्थित एक सज्जन गुरुदेव को साब ले घर में गए। गुरुदेव ने उस दुःखी बालक की मंगल पाठ सुनाया। गुरुदेव के मंगल शब्दों को धुत मूर्च्छित बाधक में आँखे खोला और हलकी चोख के साथ करबन्त बढ़ली। चेहरा चमकने लगा। गुरुदेव के मंगल पाठ से बालक को स्वस्थ होता देख उनके माता-पिता बड़े प्रभावित हुए। उन्होंने आहार पानों आदि से गुरुदेव की बड़ी सेवा की। वह हमेशा के लिए सन्तों का उपासक बन गया। जब कभी मुकबास्त्रिका वाले सन्तों को देखता तो उनके हृदय में अज्ञानमयि का स्त्रोत बमकता है। और आहार पानी देकर अपनी मसीम मक्ति प्रदर्शित करता है। यह वा गुरुदेव के तपोमय चारित्र्यमा का प्रमाण।

वहाँ से विहार कर गुरुदेव आगरा पधारे। जहाँ पूज्य श्री पन्ध्रोराज जी म सा एव श्यामलालजी म. सा. के शुभ दर्शन हुए। दोनों मूर्तियों के समागम का प्रभाव अद्भुत रहा। कहना पड़ेगा कि दोनों के प्रभाव का परिणाम है कि आज जैन शासन आगरा में चमक रहा है। आगरा संघ और परमस्नेही सन्तों के आग्रह से महाराज श्री दो सप्ताह आग्रा ठहरे। लोहामण्डी स्थानक में दैनिक व्याख्यान का कार्यक्रम चलता रहा। मुनि श्री आमोलखजी ने आग्रा के सुप्रसिद्ध स्थानों का सुविस्तृत परिचय कराया।

यहाँ गुरुदेव के चातुर्मासकी विनती के लिए लष्कर (ग्वालियर) का सघ आया। गुरुदेवने वहाँ के सघकी विशेष भक्ति देख आगामी चातुर्मास की विनति मान ली। गुरुदेव ने पूज्य वृद्धस्थविर सन्तों के मुखारविंद से मंगलपाठ सुनकर लश्कर की ओर विहार कर दिया। और अषाढ़ शुक्ला ६ को शहर में चातुर्मासार्थ प्रवेश किया।

सं २००८ का चौमासा लष्कर -

महाराजा सिंधियों की राजधानी लष्कर इतिहास का विख्यात नगर है। यहाँ का क़िला भारत में अपने ढंग का अनोखा है। शताब्दियों का इतिहास सजोये हुए है। यहाँ दिगम्बर भट्टारकों की गद्दी और उनका ज्ञान भंडार अमूर्व है। यद्यपि यहाँ स्थानक वासियों के घर थोड़े ही हैं पर धार्मिक श्रद्धा काफी है। चातुर्मास में खूब ठाट रहा। समीपवर्ती नगर उपनगरों के श्रावकों का आगमन खूब मात्रा में रहा। यहाँ के श्रावकों ने इनका अच्छा सत्कार किया। ज्ञानभक्ति निमित्त कुछ प्रकाशन भी हुए। लष्कर का चातुर्मास पूरा

कर म्हालियर, मुरार, मुरेना और धौलपुर होते हुए पुनः आपा पधारे । वहाँ मानपाड़ा के घन स्थानक में बिराजे । आचार्यवर्ष आदि उन्नत मनिवरों का साहचर्य प्राप्तकर प्रसन्न हुए । मुनिवर अमोलकस्त्री का स्नेह तो वाचन के साथ गुण गया है ।

वहाँ से विहार कर उत्तर प्रदेश के ग्राम नगरों को फरसते हुए हापरम बिराजे । वहाँ सवाद मिला कि काटा सप्रदाय के मुनि गौड़ीबासकी का स्वर्गवास होगया है । जनक शिष्य मोहन-मुनिका एवं उनकी शिष्याएँ भी वहीं बिराज रही थी । यहाँ महाराज श्री का भाषण सार्वजनिकरूप से 'जीवो ध्यैर जाने दो' पर हुआ । साथ ही 'वीर पालीसा' और 'चन्द्रसेन परित्र' का प्रकाशन हुआ । आपके हृदय में बलवती आकांक्षा थी कि अम्बस्वामी की निर्वाणभूमि मथुरा फरसी जाय, वह अचसर भी अम्बो वा । पधारे । यहाँ के अम्य प्रसिद्धस्थान भी देखे । विगम्बर बैन धर्मागुमाहयेनि महाराजश्री का सम्मान किया और कहा कि यहाँ विगम्बर मुनिराज के कशालुचन का कायकम रक्त गया है, आपका पधारना आवश्यक है । महाराज सा सरल स्वभावी होने के कारण निवृत्त समय पर वांछित स्थान पर पहुँच गये । विगम्बरमुनि श्री से वार्तालाप कर वड़े प्रसन्न हुए । लुचन के समय समन्वय और साधना पर महाराज श्री का बड़ा सारगमित भाषण हुए । एक ही स्थल पर दोनों समाज के मुनिबों को प्रेमपूर्वक वार्तालाप करते देखे बरा नाचा बहुत ही प्रसन्नित हुआ । दूर-दूर तक इसकी खर्चा फैली । मथुरा के लिए संभवतः प्रथम ही अचसर वा । वहाँ से प्रसिद्ध चिड़लामन्दिर होते हुए गुरुदेव बुन्दालन पधारे । बुन्दालन के प्रसिद्ध स्मृतों को देखा । यहाँ केवल स्थानकवासी बैन का एक ही घर है ।

वहाँ से पूज्य गुरुवर्य श्री अकबरपुर, छाता, कौशी आदि नगरों को फरसते हुए भारत की राजधानी दिल्ली पहुँचे। चाँदनीचौक में सर्व प्रथम मुनि श्री सुशीलकुमारजी से भेट हुई। व्याख्यान वाचस्पति मुनि श्री मदनलालजी म. सा. के दर्शन और सम्मिलित व्याख्यान हुए। विभिन्न संप्रदाय के सन्तों का आपसी समागम देख वहाँ का जैन समाज बहुत ही प्रभावित हुआ। यहीं पर सादड़ी श्रीसच का एक प्रतिनिधिमण्डल आया और महाराज श्री को सम्मेलन के अवसर पर सादड़ी पधारने का आग्रह पूर्ण निमंत्रण दिया। सदर दिल्ली में विराजित वयोवृद्ध सन्त श्री भागमलजी म. सा. और उनके शिष्य पं मुनि श्री तिलोकचन्दजी महाराज के दर्शन हुए। यहाँ की जनता में धार्मिक भावना की मानों नई लहर आ गई हो। व्याख्यान का हॉल भरा ही रहता था। यद्यपि म० सा० अपने विचार मेवाड़ी बोली में रखते थे पर वहाँ का समाज बड़ी श्रद्धा के साथ उनकी वैराग्य रस पूरित वाणी का श्रवण कर अपने आप को धन्य समझता था। एक सप्ताह अपने मूल्यवान् विचारों का प्रचार कर गुरुदेव सज्जी मण्डी पधारे। इनकी महिमा इससे पूर्व ही वहाँ फैल चुकी थी, जनता ने उनके आगमन का अनुपम स्वागत किया। यहाँ के पंजाबी भाई धर्म और उसके उपादानों पर भारी श्रद्धा रखते हैं। दिल्ली के उपनगरों को फरसते हुए गुरुदेव चिराग दिल्ली पधारे। जहाँ पूर्व विराजित पंजाब संप्रदाय के सन्त मुनिश्री रामसिंहजी म. सा. से मिलना हुआ, महरौली का कुतुबमीनार देखा। वहाँ से गुरुदेव गुडगाँव विराजे। वहाँ सज्जीमण्डी दिल्ली का श्रावकसघ आगामी वर्षावास व्यतीत करने की

बिनदि करने आया। वहाँ के लोगों की भावना देख सखीमखी में चालुमांस करने का गुरुदेव ने विचार किया किन्तु अपनाक ही पूष्य मोखीझाजखी म सा के अत्वारूप्य का सभाव मिला। फलतः अलखर फरसते हुए गुरुदेव जयपुर पधार गये। वहाँ एक सप्ताह निवास रहा। अनुभव हुआ कि इस क्षेत्र में दृष्टिराग की बहुत ही प्रधानता है। यहाँ गुणमूलक परम्परा का अभाव सा लगता। साधक भावकबग के लिए यह अच्छा नहीं है। उनक लिए कोई भी त्यागीमुनि हो वह अस्वनीय है। यहाँ से कमरा विहार करते हुए गुरुदेव किरान गढ़ पधारें।

किशनगढ़ स्वानकबासी परम्परा के इतिहास में अपना स्थान रकता है। यह उत्तम क्षेत्र है। बार्हम संप्रदाय के कई महामुनि और आचार्यों का सम्बन्ध किशनगढ़ से बहुत ही निकट का रहा है। कठिपय आचार्य तो वहाँ क ही निवासी थे, और कइयों की यह स्वर्गवास भूमि के सीमाभ्य से भी मस्बिठ है। साहित्यिक साधना की दृष्टि से भी किरानगढ़ को मूला नहीं का मकता। यहाँ स्वानकबासी परंपरा क पाचोग ज्ञान-मखर भी है जिनमें प्रचुर साहित्य मय पडा है। पर व्यवस्था की कमी है। अन्वेषण की पर्याप्त साधन-सामग्री विद्यमान है। यहाँ पर महाराज भी मे विभव गुण पर जो मार्मिक व्याख्यान दिया उससे बनता बहुत ही प्रभावित हुई और अधिक ठहरने का आग्रह करने लगी। पर आपके पास समय का अभाव का अतः तीन दिन ठहरकर बाद अजमेर व्यावर अदि क्षेत्रों को फरसते हुए गुरुदेव देवगढ़ पधारें। मार्ग में बीमासे के लिए बहुत बिनदियाँ होती रही पर कमपर विचार करने का अखतर

ही न मिल सका । वाघपुरा का सघ तो पीछे ही पड़ गया था, जो उनकी हार्दिक ममता का परिचायक था ।

देवगढ से विहार कर आमेट, सरदारगढ, कुंवारिया कॉकरोली होते हुए नाथद्वारा पधारे । नाथद्वारा गाव से करीब पाँच मील उत्तममुनि गुरुदेव के स्वागतार्थ सामने पधारे । गांव में प्रवेश करते समय स्थानीय श्रावक श्राविका गण एव तत्र विराजित मुनि सामने आये । गुरुदेव सीधे अपने बड़े गुरु भ्राता मंत्री मुनिश्री मोती लालजी म. सा के दर्शन किये बन्दना, आहार, पानी आदि बारह संभोग सम्मलित रहे यहाँ का सन्त मिलन अपूर्व स्नेह मिलन था । गुरुदेव का संकल्प था कि इस वर्ष का चातुर्मास सम्मलित ही किया जाय किन्तु मंत्री मुनिजी का इस शुभ कार्य में सहकार नहीं मिल सका । वाघपुरा का सघ तो साथ ही में था, इधर आषाढ शुक्ल-पक्ष प्रारम्भ होही चुका था, विहार का उपक्रम होने लगा । मेवाड के मंत्री मुनिश्री मोती लालजी म सा के दो शिष्य गुरुदेव के साथ आने का आग्रह कर रहे थे, पर महाराजश्री ने स्पष्ट कहा कि मंत्री मुनिश्री की आज्ञा हम दोनों को शिरोधार्य है । विहार करने पर करोली में श्रमणसघ के प्रधानमंत्री मुनिश्री आनन्द ऋषिजी म से भेट हो गई । वहाँसे गुरुदेव देलवाड़ा पधारे जहाँ रामपुरा का सघ आ पहुँचा पर समय इतना कम था कि रामपुरा तक पहुँचना सम्भव न था । अतः आगामी चातुर्मास नाई का निश्चित किया ।

सवत २००६ का चौमासा नाई —

आषाढ शुक्ला वारस को चातुर्मासाथ नाई में प्रवेश किया । चातुर्मास का प्रभाव उत्तम रहा । धर्मध्यान की प्रवृत्ति

बन्धी रही। प्रमुख व्यक्ति भीमान कपालीलालबीरलालके सत्प्रयत्न से एवं गुरुदेव के उपदेश से उनके प्राणियों को अभयदान मिले। जातुर्मास समाप्ति का विहार होने ही का रहा था कि इतने में ठण्डपुर से उपाचार्य श्री का आदेश आया कि 'मैं भी आ रहा हूँ। वहीं ठहरो। इसरे दिन उपाचार्यश्री ने नन्दलालश्री म सा को भाई मेत्र दिया। क्योंकि दीक्षा पर्वस से भीर कल्प की दृष्टि से बह छेष्ठ थे। बाद में उपाचार्यश्री म सा भी पधार गये। उनने महाराजश्री से आग्रह किया कि मुझे मोक्षत की बैठक में सम्मिलित होना है, आप भी साथ चस। महाराज श्री का विनयभाव उपाचार्यश्री की बात को टाल न सका। सोहनमुनिश्री को बापस मेवाकर्मश्री के सेवामें भिजवा दिया। गुरुदेवने भावकों के अस्थाग्रहसं म्मलाबाइ क्षेत्र को फरसते हुए गोगुवा, सायरा, राखकपुर होते हुए सादकी पधारे। वहाँ दो व्याख्यान हुए। वहाँ से वाली, सांडेराब होते हुए पाजी पधारे। वहाँ व्याख्यान बाबस्पति मुनिश्री मदनलालश्री म उपाध्याय प्यारचन्दश्री म० सा, कविचयश्री अमरचन्दश्री म० मा० आदि अनेक मुनियों के दर्शन समागम हुए। विहार में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। पर महाराजश्री को कठिनाइयों को झेलने के आदी थे। पाली से सोबत बाटे समय मार्ग में एक बाबाश्री का मठ आता है। मठ के चारोंओर घना जंगल है। हिल पराभों का सदा भय रहता है। सूर्य भी अस्त होने जा रहा था। सर्पों का मोमम था। ठंडी हवा चल रही थी। गुरुदेव आमम में पहुँचे। सुना जाता है कि यहाँ का बाबा बड़ा तुनक मित्राश्री है। रात्री के समय किसी को भी मठ में नहीं रहन देता भीर सभी को भगा देता है। लेकिन गुरुदेव की मधुर बाणी और प्रभावशाली व्यक्तित्व से

मठाधीश बाबा बड़ा प्रभावित हुआ। उसने तुरत ही मकान की दूसरी मजिल ठहरने के लिए खोल दी। रात्री में बाबाजी के साथ बड़ा सुन्दर वार्तालाप रहा। गुरुदेव जैसी पुण्य विभूति का सत्संग पाकर बाबाजी के हृदयमें श्रद्धा उमड़ पड़ी। दूसरे दिन आहार पानी से गुरुदेव का अच्छा सत्कार किया। वहाँ से विहार कर हम सब सन्त क्रमशः सोजत के प्राण में आ पहुँचे। तत्रस्थ मुनिराजों ने जब बाबाजी का गुरुदेव के प्रति अत्यन्त आदर भाव की घटना सुनी तो आश्चर्य प्रकट किया। क्योंकि उन सन्तों में बाबाजी के कोप-भाजन बने भी कुछ सन्त थे जो रात्री के समय आश्रम से बाहर ढकेल दिए गए थे। मार्ग में अन्य सन्तों के साथ ज्ञान ध्यान की खूब चर्चा विचारणा होती रही। पारस्परिक स्नेह भी उल्लेखनीय रहा।

उपाचार्य और मन्त्री मुनियों के सम्मेलन में प्रतिनिधि मुनि ही सम्मिलित हो सकते थे। क्योंकि आपसी विचार विनिमय में उग्र बहस भी हुआ करती थी। कभी-कभी तनाव नीमा पार हो जाता था। समन्वयवादी भावना ही शुन्यवाद में बदल चुकी थी।

पन्द्रह दिन तक यह कार्य चलता रहा। प्रारम्भ में उपाचार्यश्रीने यह घोषणा की कि दर्शनार्थी, जो बाहर से आये हुए हैं, उनसे कोई भी मुनि सयम के साधक उपकरण ग्रहण न करें। इसका प्रभाव सयम में रत मुनियों पर तो अच्छा पड़ा पर कुछ सन्तोंने इस घोषणा को विशेष महत्त्व नहीं दिया और अपना काम बना ही लिया। इस प्रकार की कार्यवाही देखकर गुरुदेव के दिल पर ठेस पहुँची। साथ ही



सम्मेलन की अध्यक्षता करवायी को देखकर मन में यह निश्चय किया कि अविध्य में ऐसे सम्मेलनों में मैं कदापि सम्मिलित नहीं होऊँगा। ऐसे प्रबंध से व्यर्थ ही संघम की भाष धारा मलीन होती है।

उपाचार भी के मुखारविन्द से मार्गसिक बचकर गुरुदेवने सोझत से विहार कर दिया। मार्ग में प्रचार मंत्री मुनिश्री प्रेमचन्दजी म सा से मिलन हुआ। कमरा सोझत रोड, मिरियारी, मीम, आसिंद रायपुर से विहार करते हुए मावली पधारे। कपासन का भीसंध चातुर्मास के लिये भावही था, महाराजजी का एक ही मस्युत्तर था कि मेवाड़ म रहा तो आपका सेत्र खाली नहीं रहेगा, मालवा की ओर निकल गया तो बात दूसरी है। पर चातुर्मास रामपुरा का ही उप हुआ।

सं० २०१० का भीमासा रामपुरा -

गुरुदेव कमरा आकोजा भादमोडा होते हुए निम्ना देवा पधारे वहाँ से विहार कर निमच मनामा, कुकदेवर की ओर पधारे। रामपुरा का संघ तो गुरु महाराज के गुणों से पूर्ण परिचित ही था। त्याग तपरचर्याएँ इस चातुर्मास काल में खूब हुईं। गुरुदेव के उपदेश से विजयादशमी के दिन 'विद्वल' सेम पाठशाला का सूत्रपाठ हुआ। श्री चाम्दमन्त्री टांटोडी बाले को मुख्याध्यापक नियुक्त किया। आज भी पाठशाला चल रहा है। बालक पात्रिका ज्ञानोत्सर्जन कर रहे हैं। चातुर्मास के पश्चात् कमरा विहार कर मन्सौर पहुँचे। धरापुर नाम से इस की म्वादि जैन इतिहास में रही है। वहाँ से विहार कर जाधरा पधारे जो सांप्रदायिक तमाब में

प्रसिद्ध है। यहाँ से गुरुदेव सैलाना पधारे। गुरुदेव का आगमन सुन आँखों से लाचार मुनि जयवंतऋषिजी जो एकल विहारी थे गुरुदेव के पास आये और प्रार्थना करने लगे कि— मैं आँखों में लाचार हूँ। अतः आप मेरा निर्वाह करें। मुझे अपने सघाडे में शामिल करलो। गुरुदेव दीर्घदृष्टि थे। उन्हें शामिल करने में अनेक समस्याएँ उपस्थित हो सकती थीं, अतः मानवीय भावना से प्रेरित हो गुरुदेवने वहाँ के सघ को इस शुभ काम के लिए प्रेरित किया। गुरुदेव के प्रयत्न से स्थानीय अस्पतालके डाक्टरको बुलाकर जयन्तऋषिजी को वताया। अन्ततः डाक्टर की प्रेरणा से ओपरेशन किया गया जो सफल रहा। उन्हें पुनः आखे मिल गईं। गुरुदेवने भी एक सहधर्मी की सेवा कर सन्तोष का अनुभव किया। जयन्तऋषिजीने खूब खूब आभार प्रगट किया। वहाँ से विहार कर फागुन चौमासा धार किया। माढवगढ के पुराने खण्डहर देखे जो आज भी प्रेरणा दे रहे हैं।

अब महाराजश्री मालवा के छोटे बड़े नगरों को धर्मोपदेश देते हुए खान देश के मार्ग पर मेधवा सिरपुर पधारे जहाँ मनसुख मार्ग पर ऋषिजी म.सा का शुभमिलन हुआ। वहाँ से धुलियाँ शहर पधारे जहाँ स्थविर मुनिश्री भानकऋषिजी विराज रहे थे। इनका व्यवहार प्रतिष्ठावर्धक रहा। मालेगाँव के समीप पहुँचने पर बम्बई का श्री सघ आ लगा। वह चाहता था कि आगामी चौमासा बम्बई चींचपोकली ही हो। इधर से जालना सघ भी इसी लिये उत्सुक था। पर नाशिक जाकर निर्णय लेने का विचार कर विहार कर दिया। वहाँ से चांदवड़ आये। यहाँ नेमिनाथ ब्रह्मचर्याश्रम में विराजे। नाशिक पहुँचने के

बाद गुरुदेवने कुछ आगार रक कर बिचपोकली का बीयासा मान लिया ।

स २०११ का बीयासा बिचपोकली बम्बई -

बम्बई भारत का हृदय है । यहाँ सात बजारों के बाह बर्षों आरम्भ हो जाता है । अतः बम्बईवासियोंने गुरुदेव से निवेदन किया कि वर्षारम्भ से पहले आप पहुँच जाय तो उत्तम है । नाशिक से पाबडबगफर, छोटी इगतपुरी, निचली पैठ बिराजे । सम्मान्य के समय बिचली पैठ के भावक गुरुदेव की सेवामें आये । इस गाँव में कई बर्षों ने सामाजिक तनाव बा । यहाँ खानक बना है किन्तु आपसी ब्रह्म के कारण इसका सही उपयोग नहीं होने पाता बा । गुरुदेव के प्रभावपूर्ण उपदेश से बनका सगड़ा मिट गया । सच में मेला मित्राप का आनन्द था गया । वह लाभ कम नहीं बा । धर्म के नाम पर इस प्रकार के सचर्चे विपरीत परिणाम ही उत्पन्न करते हैं । इगतपुरी संघ में जो इस समय संगठन दृष्टिगोचर हो रहा है उसका श्रेय गुरुदेव को ही है । इगतपुरी से बम्बई की ओर विहार कर दिया । मार्ग में कसारा घाट आता है जो भयंकर पहाड़ी और बम से परिवेष्टित है । दिन को भी दिन परा बमते रहते हैं । लेकिन यहाँ का प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही मनमोहक है । बर्षों के समय यहाँ का दृश्य बड़ा लुभावन लगता है । झरनों की कलकल ध्वनि कानों को बड़े मिठें सगती है । दस मार्ग को पार कर रहे थे इतने में बादल चढ़ गये और बर्षाति अपना चौहर दिखाना प्रारम्भ किया । मुनि सर्वोदा तो नहीं है कि बरसते जल में विहार किया जाय

पर मार्ग में आने पर तो बिना इच्छा के भी परिपह सहन करना ही रहा। खड़की, कलमगाव शाहपुर, थाना, होते हुए घाटकोपर पहुँचे। यहाँ काठियावाड़ी और गुजरातियों का अच्छा जमवट है। धर्मभावना भी उल्लेखनीय है। वहाँ से श्री खुशालभाई खेंगार, धनर्जाभाई के आग्रह से विलेपारले पहुँचे। वहाँ से विहार कर आपाठ शुक्ला तीज को बड़े स्वागत के साथ चिंच पोकली "दामजी लखमसी नामक के स्थानक में पहुँचे। यह स्थानक वम्बई का सबसे पहला स्थानक माना जाता है। इसके निर्माण के बाद ही वम्बई के अन्यान्य स्थानक बने हुए हैं। गुरुदेव के पधारनेसे लोगों में धार्मिक उत्साह नजर आता था। प्रातः प्रार्थना, मध्याह्न में रास-चौपई एवं सायंकाल में प्रतिक्रमण, इस प्रकार विविध साधना का क्रम चलता रहा। मेवाड़ी भाषा में ही गुरुदेव का सफल व्याख्यान चलता था। गुरुदेव की भाषा में ओज और वाणी से वैराग्य टपकता था। लोग उसे सुनकर मंत्रमुग्ध हो जाते थे। लोगों में धार्मिक उत्साह कम नहीं था। माटु गा मलाड़, पारला, कांदावाड़ी, दादर आदि उपनगरों के सघ समय-समय पर गुरुदेव के दर्शन से लाभान्वित होते थे। कर्मवशात् वहाँ गुरुदेव को कास और ज्वर होकर मियादी बुखार हो गया। श्रीसघ बहुत ही व्याकुल रहा। समुचित चिकित्सा के बाद स्वास्थ्य-लाभ हुआ। कोट सघ के आग्रह से गुरुदेवने एव माटु गा से मुनिश्री प्रेमचन्दजी म० दोनों मुनिवरों ने पयुर्पण पर्व कोट में मनाया सम्मिलित पर्वाराधन से लोग बड़े प्रभावित हुए। आध्यात्मिक साधना में इस पर्व का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आत्मशुद्धि का यह अनमोलपर्व जीवन को उज्वल बनाता है। पर्व के बीच एतद् विषयक गुरुदेव के प्रवचन बड़े प्रभावशाली रहे। मैं तो चिंचपोकली में ही

रहा। पयुष्य का व्याख्यान भी मैं ही देता रहा। लोगों में आठ दिन का अपूर्व उत्साह दृष्टिगोचर होता था। उस वर्ष तपस्या भी खूब हुई। गुरुदेव कोट में वापिस पधारे। चातुर्मास समाप्ति के अन्तिम दिन वादर संघ के अध्यक्ष से चातुर्मास का विहार कर वादर पधारे। क्रमशः बम्बई के अनेक स्थान परसते हुए मलाब, बोरानली पधारे, वहाँ पं मुनिजी शोपमलजी म सा कामिलन हुआ। बहुत दिन तक साथ रहे। यहाँ काम्दावाडी भी संघ मुनी सुरीलकुमारजी म सा की ओर से आकर विनति करने लगा कि वहाँ हीरा संघ हो रही है भत आपको पधारना होगा। परमेश्वर ध्यानकर स्वीकृत प्रदान की गई। गुरुदेव विहार कर बिलेपारले पधारे। वहाँ स्वविरमुनिजी बोटानाजी म सा पं मुनिजी सुरीलकुमारजी म सा ठाना ६ मंत्रीमुनिजी शोपमलजी म सा कुत्र म्यारह ठान स म्यार, वादर होते हुए काम्दावाडी पधारे। माप शुक्ला छठ को एक भाई ने पं मुनिजी सुरील कुमारजी से दाया प्रहण की। हीरा के समय का वातावरण बड़ा उत्साह जनक था। सन्तों का आपसी मिलन और प्रेमपूर्ण वार्तालाप समा-बोत्पादक रहा।

जो मनुष्य कठिनाइयों में हतारा हा जाता है और आपत्ति के सामने सिर झुका देता है, जमसे कुछ भी नहीं हो सकता। परन्तु जो मनुष्य विषय प्राप्त करनेका संकल्प कर लेता है वह कभी असफल नहीं होता। गुरुदेव हर कठिनाइयों का बड़े धैर्य के साथ सामना करते थे। जममें धैर्य का गुण अपूर्व था। मापशुक्ला मन्मरी का दिन था। गुरुदेव कार्यरत बिरावाशर से गुजर रहे थे अचानक ही पौध से डाम का ओर से पकड़

लगा। ट्राम के धक्के से गुरुदेव एक तरफ गिर पड़े। इतनी जोरों की चोट लगी कि वे उसी स्थान पर मूर्च्छित हो गये। एक माहेश्वरी शैठ की दृष्टि गुरुदेव पर पड़ी। वह उसी क्षण भाग कर आया और उठाकर पेढी पर ले गया। शैठ ने डाक्टर बुलाया और प्रारम्भिक मरहम पट्टी के बाद उन्हें अस्पताल में ले जाने का तय किया। श्रीमानने अपनी मोटर मँगवाकर व्यों ही महाराजश्री को उठाने लगे कि उनकी आँख खुली। वह सारी परिस्थिति भाँप गये। इधर गहरी पीड़ा थी, उधर संयम की रक्षा सन्तों का देह तो संयम की रक्षा के लिये ही होता है। आपने देह की पीड़ा को उपेक्षित करते हुए शैठ से कहा— मैं जैन मुनि हूँ। वाहन का कभी प्रयोग नहीं करता। मैं पैदल ही अपने स्थान पर चला जाऊँगा। शैठ ने बहुत समझाया, किन्तु गुरुदेव अपना रजोहरण लेकर चल पड़े। जहाँ चोट लगी थी उस जगह करीब आठ इंच का लम्बा घाव हो गया था। इधर सन्त गुरुदेव के आगमन की प्रतीक्षा कर ही रहे थे। अचानक रक्त से सने गुरुदेव को आता देख हम सब मुनि स्तब्ध हो गये। गुरुदेव का दावाड़ी स्थानक में पधारे। पीड़ा व चलने के श्रम से वहाँ मूर्च्छित हो गये। उसी क्षण डाक्टर बुलाया गया। सम्यक उपचार के बाद इसरे दिन चेतना लौट आई। इस अवसर पर प मुनिश्री सुशीलकुमारजी म सा एव सौभाग्यमलजी म सा ने अपनी सहृदयता का एव सेवाभाव का अपूर्व परिचय दिया। श्री सघ ने भी अच्छी सेवा की। गुरुदेव के शरीर में चोट से इतनी वेदना थी पर उनके मुख से कभी सीत्कार भी नहीं निकलता था। शरीर में वेदना और मुख में हसी दृष्टिगोचर होती थी। धन्य है उस पुनित आत्मा को, सकट को, आपत्ति को, वीरता पूर्वक सहते

है। महाराज श्री को चिकित्सक ने परामर्श दिया कि आपके विद्याम की आवश्यकता है। पर जैन मुनि का जीवनकर्म ही ऐसा बना है कि ध्यायन की गवाहर कर्हों।

वहाँ से बिहार कर गुरुदेव घाटकोपर पधारे। वैदिक शीर्षस्थ के कारण फलानुन बीमासा बही व्यतीत करना पडा। इस ठग्यावस्था में सध न खूब प्रेरणा ली और अपनेको उपरचर्या में लीन रला। सध की हार्दिक मावना थी कि ऐसे संयमी, स्वागी और विद्यानमुनि का वर्षावास हमारे घाटकोपरमें ही व्यतीत हो तो उत्तम है। पर संसार में सभी बाजित कार्ब पार मही पडते। ओ ही कुण्ड स्वास्थ्य प्रकृतिस्थ हुआ कि महाराजश्रीने बिहारकर भावदूप में रपचन्द मणिलाल भाई के आवास में निवास किया। भाई तम से पूर्य होते हुए भी मन से तस्थ है। वैदिक शास्त्र-स्वाध्याय इनके जीवन का अग रहा है। पूरा परिवार अज्ञात और सन्तो का उपासक है। यहाँ विद्ये पारसे का सध आया और बीमास कलिय विनति करन लगा। सुत्तागम के सम्पादक मुनिश्री फूलचन्दश्री म सल का भी आगमन हुआ। सुत्तागम विनयक पचाँपें होती रही। यह स्वाभाविक बात है कि जब दो समान विद्यान एकत्र होते हैं तो ज्ञानविज्ञान विषयक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों पर विचार विमर्श होता ही रहता है।

यहाँ से महाराजश्री जाना पधारे, और जैनमन्दिर के निकटवर्ती एक कच्चा म बिराजगये। कहा जाता है कि यहाँ प्राचीन काल में श्रीपाल और श्रीनासुन्दरी का आगमन हुआ था। जिसकी स्मृति स्वरूप आज मा यहाँ एक विशाल और भव्य

मन्दिर बना हुआ है। इसके प्रेरक थे खरतरगच्छ के आचार्यश्री जिनच्छिद्री सूरीश्वर महाराज सा। थाना में जितने भी जैन वसते हैं वे सबके सब प्रवासी हैं।

यहाँ से प्रस्थानकर प्राकृतिक सौंदर्य का निरीक्षण करते हुए मुमणा कल्याण खपौली कामसेठ आदि क्षेत्रों को पावन करते हुए गुरुदेव चिचवड़ पहुँचे। वहाँ कर्नाटक केशरी तपस्वी श्री गणेशीलालजी म सा के दर्शन हुए। तपस्वी श्री गणेशीलालजी म सा उच्चकोटि के साधु थे उनके उच्च आचार और विचार जैनसंस्कृति के प्रतीक थे। आत्मभावना करते हुए भी उन्होंने अपने जावन को मानवमात्र के उदय और कल्याण के लिए लगा दिया। ये खादी के समर्थ प्रचारक थे। समाज में छार्ई हुई अन्धश्रद्धा मिथ्यारूप अन्धकार को मिटाने में वे सूर्य के समान थे। इन्होंने महाराष्ट्र एवं कर्नाटक प्रान्त में बड़े पैमाने पर जन-जागरण का काम किया। इनका जीवन सयम-त्याग तप प्रधान था। हमलोग चिचवड़ में अन्यत्र ठहरे। आहार पानी के पश्चात गुरुदेव तपस्वीश्री के दर्शन के लिए पहुँचे। प्रारम्भिक वार्तालाप से दोनों का अच्छा स्नेह रहा। गुरुदेव पर तपस्वीजी की विशेष कृपा दृष्टिगोचर होती थी। व्याख्यान आदि सम्मिलित होते थे। तपस्वी के त्यागमय प्रभाव से गुरुदेव बड़े प्रभावित हुए। गुरुदेव कुछ दिन ठहरने के बाद आगे प्रस्थान करना चाहते थे। आज्ञा मांगने पर तपस्वीराजने फरमाया कि इतनी क्या शीघ्रता है, अभी तो आये ही हो, कुछ दिन तो विरमो, सध आश्चर्यचकित था कि आज तपस्वीजी की इनपर कैसे कृपा हो गई कारण कि सर्व साधारण की धारणा थी कि ये कम ही बोलते हैं। और



वाष्पी का प्रवाह हुआ तो दुर्घासा की स्मृति हो जाती है।  
 खेफिन तपस्वीजी का गरुदेव के प्रति अस्वस्थ स्नेह था। तपस्वीजी  
 के स्नेह बरा गरुदेव वहीं ठहर गये। इस अवसर पर महावीर  
 ज्यन्ती भी बड़े धूम धाम में मनाई गई। ५००० के करीब  
 जम समूह बाहर से इस अवसर का काम चढ़ाने आया था।  
 हजारों उपवास, सैकड़ों मठाश्रमों एवं वेदों आदि की तपस्या का,  
 अपूर्व ठाठ रहा।

चिचवड़ से तीस मील समीप एक देव मंदिर है। वहाँ  
 प्रतिवर्ष एक-मात्रा भरती है जिसमें देव के नाम पर हजारों  
 पशुओं की कृत्न होती थी। अब गुरुदेव ने यह समाचार सुन  
 तो उनका हृदय इस रूप श धार्मिक पर परा पर कर्षण चढ़ा।  
 उन्होंने सोचा कि इस घमंके नाम पर होने वाली बलि को रोक  
 जाय। इस बलि को रोकने में तपस्वीजी गणेशजी का नाम  
 सबसे बड़े प्रेरक थे। गरुदेव के उपदेश एवं तपस्वीजी के तप-  
 प्रभाव से वहाँके लोगों का हृदय बदल गया और उन्होंने सदा  
 के लिए हिंसा न करने की प्रतिज्ञा ग्रहण की। हजारों पशुओं  
 को सदा के लिए अमरदान मिल गया। यह था गरुदेव की  
 वाष्पी का चमत्कार। चिचवड़ में तपस्वी जी के साथ गरुदेव  
 का व्याख्यान होता था। प्रतिदिन करीब ७-८ हजार लोग जिसमें  
 हिन्दू-मुस्लिम और सभी कौम के लोग व्याख्यान सुनते  
 थे। यह भी जीवन का एक अनूठे अवसर था। तपस्वीजी के  
 अत्याग्रह से गरुदेव करीब बस चार दिन रुके

बैनमुनि के कर्मों पर प्रवचन का दार्मिक कर्म मही  
 होता। १०-१५ मिनट तो तपस्वीजी प्रवचन फरमाते थे। शेष

समय व्याख्यान देने का मुझे अवसर मिलता था । व्याख्यान में मुख्यतः इन विषयों का शास्त्रीय शैली से प्रतिपादन हुआ करता था । कुरुदियों का निवारण, देश, समाज और धर्म की वर्तमान दशा आत्मकल्याण किन मार्गों से ? जीवन में आध्यात्मिक दर्शन का स्थान, अहिंसा और विश्वशांती, जीवन दर्शन - एक पहलू आदि आदि—

स० २०१२ का चौमासा बम्बई मलाड़ -

महावीर जयन्ती के पावन पर्व पर ही मलाड़वासी सघ वर्षावास के लिये विनति करने आ गया था । आगार रखते हुए महाराजश्रीने चातुर्मास की स्वीकृति फरमादी थी । चौमासा दूर था अतः महाराजश्रीने सोचा था कि क्यों न निकटवर्ती क्षेत्र भी फरस लूँ ? तदनुसार पूना पधारे । वहाँ कर्नाटक केशरी श्री गणेशीलालजी म सा का भी पधारना हुआ । वहाँ आपकी प्रेरणा से ग्यारह-ग्यारह बहनों और भाइयों में पृथक् २ सामूहिकरूप से एक माह तक शान्ति जाप अखण्ड रूपसे चला । साथ ही २१, १५, १३, १०, सैकड़ों अठाइयाँ, चार हजार तेले, एवं दस हजार उपवास आदि तपस्याएँ हुईं । प्रीष्मकाल को देखते हुए यह तप कम न था । एक माह तक तपस्वीराज की सेवा का अवसर मिला जो भुलाया नहीं जा सकता । तदनन्तर तपस्वीजी का विहार मालिया की ओर महाराजश्री का पूर्व निश्चयानुसार बम्बई की ओर मार्ग में लोनावला में पूज्य धर्मदासजी म सा की सप्रदाय के प रत्न मुनिश्री धनचन्द्रजी म सा एवं मुनिश्री भैरोंलालजी म सा ठाना तीन का समागम हुआ । साथ-साथ ही विहार कर पनचेल पहुँचे । वृष्टिने अपना उग्र रूप घताना प्रारम्भ कर

दिया था, अतः शीघ्रता से विहार कर आया, गुजरात वसन्ती को मन्नाड (बम्बई) में गुगलिया खा जैन उपानयन में विराज गये ।

बम्बई में कई स्थानक हैं । पर्व के दिनों में सब भरे रहते हैं । सर्वत्र मुनियों के शोभास समभव नहीं । पर्व के दिनों में बोरीवली का संघ आया कि किसी मुनि को भेजे । इस बात पर मुझे भेजना तय किया कि व्याख्यान देकर वापस यहाँ आ जायें । मन्नाड संघ के प्रमुख श्री कामजी पणु हीरजी धमरमी रतीलासभाई प्रमुखाल डगरसी, भादि श्री संघ का धर्म स्नेह अविश्रमरणीय रहेगा ।

बोरीवली से श्री बम्बई के उपनगरों की विनितियों प्रारंभ हो गईं कि हमारा क्षेत्र फरसिये । पर महाराजश्री का मन को समान बचाव था कि मुझे राजस्थान पहुँचना है अतः यह संभव नहीं ।

मन्नाड चातुर्मास के बाद गुरुदेव गुजरात फरसना चले गये । इसी योजनामुसार कमरा बोरीवली बसाई विहार करते हुए पधारे । यहाँ मेवाड के व्यवसायियों का जत्ना है । यहाँ से उनकी कामना थी कि जब गुरुदेव हमारे व्यवसाय स्थान को अपनी चरणशक्ति से पावन करे । यह व्यवसर उनके लिए अत्यन्त उपयुक्त था । जिसकी चिर पोषित मापना साकार हो उनका मन-मयर सम्पन्न हो ता क्या आश्चर्य ? यहाँ से विहार भादि प्रान्तों की जनता को जिम्बाणी का अनुभव कराने हुए गुरुदेव बहाल पधारे । सौभाग्य से मुनि जामचन्द जी

म. सा. एव चौधमलजी म सा का यहाँ चातुर्मास था । यहाँ लाभचन्द्रजी म. सा. कुछ समय से बीमार थे । समुचित औषधोपचार से स्वास्थ्य लाभ कर हम सब साथ ही मैं विहार कर सूरत पधारे ।

सूरत बन्दरगाह का गुजरात के इतिहास में अनुपम स्थान है । सर्व प्रथम अंग्रेजोंने अपनी कोठी यही स्थापित की । मुगल कालीन इसकी छटा अनुपम थी । यद्यपि यहाँ मूर्तिपूजकों का प्राधान्य है, पर सत्रहवीं अठारहवीं शताब्दी में स्थानकवासी संप्रदाय का महत् केन्द्र था । उस समय कानजी ऋषि के काल में स्थानकवासी समाज में जो विसंवाद फैला था, उसका समाधान तेजसिंह को, वीरा विरजी द्वारा पट्ट पर स्थापित किये जाने पर ही हो सका था । इसके बाद का भी उज्वल इतिहास विद्यमान है जो स्थानकवासियों की पुरानी पट्टावलियों में आलेखित है । यद्यपि हमारा ध्यान इस विषय पर आज तक नहीं गया है, यह समाज के लिए दुर्भाग्य की बात है । स्थानकवासी परम्परा का एक विश्वसनीय एव गवेषणात्मक इतिहास की अत्यन्त आवश्यकता है । विद्वान् मुनिगण इस विषय पर काम करें ऐसा मेरा उनसे सविनय अनुरोध है ।

जैनसंस्कृति के इस पुनीत केन्द्र में जैनपुस्तकालय आगम मन्दिर, प्राचीन ग्रन्थ भण्डार, आदि अनेक प्रेक्षणीय मास्कु-तिक साधनास्थान विद्यमान है ।

सूरत से विहार कर अकलेश्वर, जहाँ आज विशाल तैल-कूप निकल रहे हैं वहाँ होते हुए इतिहास-प्रसिद्ध नगर भृगु-कच्छ-भडौच पहुँचे । मार्ग में मूर्तिपूजक भाइयों के ही अधिक घर आये, पर विवेकवान होनेसे आहार पानी का

परीषद् सहन नहीं करना पड़ा। नर्मदा के शूल पर बसे मठों का जैनसांस्कृतिक इतिहास सूरत से भी अधिक प्राचीन और गौरव पूर्ण रहा है। नर्मदा का गन्धीर बर प्रवाह भौतिक दृष्टि से एक ओर बहो जाय पदार्थों द्वारा तन का पोषण करता है वहाँ दूसरी ओर धार्मिक उपासनों द्वारा संस्कृति की प्रेरणा भी देता है। इसीलिए मनुकण्ड संस्कृति, प्रकृति और कला का अनुपम केन्द्र है। मृगच्छिपि का यह तपस्वर्षा स्थान रहा है। इसीलिए इसका जन्म कन्ही के नाम से सम्बन्धित है। बौद्ध साहित्य में भी इसको महिमा गाई गई है। जैन साहित्य में इस स्थान को "अथा बसोप" तीर्थ भी कहा गया है। यहाँ से गुरुदेव का विहार बढ़ीवा हुआ, जो प्राचीन साहित्य और शिलालेखों में 'बठपद्र' नाम से अभिलिखित है। यहाँ से विहार कर गुरुदेव अहमदाबाद पधारे। यहाँ पूज्यश्री ईश्वरलालजी म सा और पुनमचन्द्रजी म क समागम का सुवन्धन मिला। स्वामीय सौराष्ट्र सच के आग्रह से अगुन चौमास्ता वही विताया। यहाँ व्यवसायार्थ जाये हुये मेवाड और मारवाड़निवासियों को गुरुदेव के आगमन का समाचार मिला तो वे बड़े हर्षित हुए और बड़ी संख्या में आ आकर दरान का लाम देने लगे। स्वामीय गुरुदती भाईयोंने भी ध्याक्याम आदि का अच्छा लाम किया। नर्मद्यान अबसरतुकूल अच्छा हुआ।

राजमगर अहमदाबाद से प्रस्थान कर गुरुदेव के ईश्वर की ओर चरण्य बढ़। इस मार्ग में दिगम्बरगुरुभाईयों की संख्या अधिक है आहार पानी अधिक गम्भीरता और प्रफरन से मिला जाता है। नर्मदाधारा के साथ यदि बोझ विवेक भी काम में ले तो अच्छा है। यहाँ से विहार का परीषद् सहन

करते हुए क्रमशः झालावाट पहुँच गये। महाराजश्री का यह विहार लम्बा और दृष्टपूर्ण रहा। परन्तु मार्ग में अनुभव किया गया कि चाहे कितने ही दृष्ट पड़े, पर महाराजश्री के मन पर तनिक भी उनका अग्र न पड़ सका। उनके जीवन में उसी समय सौम्य साकार दृष्टि गोचर हुआ। अनुकूल परिस्थितियों में तो समयकी माधना सभी करते हैं, पर प्रतिकूल परिस्थितियों में मन को अनुकूल या दशवर्ती बनाये रखना माधक के लिये ही संभव है। समय खाएडा की वार माना जाता है सुना जाता है। पर कितने ऐसे समयी जो समय पर सद्विष्णुता का परिचय देकर मन्चे वीरानुयायियों की सूची में अपना नाम लिखवाते हैं।

“संवत् २०१३ का चोमासा वाघपुरा -”

अनेक ग्राम नगरों को पावन करते हुए उदयपुर होकर महाराजश्री वल्लभ नगर पधारे। जहाँ सती जी श्री शृंगार कुँवरजी सृणावस्था में थी। उनको दर्शन देना आवश्यक था तथा धन्तकुँवरजी म आकोला में थी उन्हें भी दर्शन देना अनिवार्य था, फलतः वहाँ भी पधारे।

आकोला स घ के अग्रणियों में किसी साधारण बात को लेकर अप्रशस्त विस वाद चल रहा था, जिस मुनिवर को अपने क्षेत्र पर अटूट अभिमान था उन्होंने भी इस विस वाद को मिटाने के लिए जी तोड परिश्रम किया किन्तु मजबूत फूट की दीवार को वे भेद न सके। महाराज श्री के पास समयाभाव था। अन्यथा क्या कारण था कि विवाद न मिटता। क्रमशः विहार कर महाराजश्री देलवाहा पधारे और मेवाड़मन्त्रीजी का आदेश लेकर वाघपुरा आये, जहाँ उनका चौमासा पूर्ण निश्चित था।

चातुर्मासान्तर वाषपुरा में एक भाई की दीक्षा सुगहर  
 पवि पत्नी को हुई। दीक्षित मुनिका नाम कर्मवालात्रयी  
 रखा गया और ये आपका शिष्य बने। क्रमशः अनेक क्षेत्र  
 फरसते हुए देवाम पधारने पर महामतीजी भी फेपकुँवरजी  
 भी रतन कुवरजी और भी लहरकुँवरजी म सा ठाना तीन  
 मेवाङ्ग म गुरुदेव के बरानाब आई। पुन महाराजकी की  
 सभा में महामतिर्योत्री वाषपुरा पपारे। वहाँ स कई क्षेत्रों को  
 पावन करत हुए गुरुदेव बेलबाघ मत्री मुनिभी मोतीजाबजी  
 म सा की सवामें पहुँचे। सब मुनियों ने इनके आगमन  
 पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की। और यह सिणय दिया गया  
 कि व्याख्यान का काय इस्तीमुनि को-अर्थात् मुझको सो पा  
 जाय। क्योंकि अपने गुरु महाराज के साथ देरा देरान्तर में  
 भ्रमण करके अपने ज्ञान को निवार्य है अनुभव प्राप्त किया  
 है उसका ज्ञान स्थानीय जनता को भी मिलना चाहिये।  
 तदनुसार व्याख्यान देने का मुझे आवेश मिला। मैंने गुरुदप  
 के आदेश को शिरोधार्य कर व्याख्यान देना प्रारंभ कर दिया।  
 मेरे व्याख्यान पर जन समुदाय मुग्ध बा और इसकी सुवाम  
 मरुलों तक पहुँचा और वहाँ से विचरुत्सील और अद्भुत  
 राव साहस्य आ मञ्जला जी न भी व्याख्यान में भाग लिया और  
 अपने निम्नी कायकर्ता द्वारा कहलबाया कि महलों में ऐसे  
 मुनिवर का पादार्य होना चाहिये। तदनुसार ऐसाही हुआ।

यों तो महावीरब्रह्मती प्रतिवप आधि है और लोग अपने  
 अवन ड ग म मनाकर बसके प्रति अपनी अज्ञा भेद करत  
 हैं। पर अथकी बार वहाँ की जनता का बरसाह कुङ्ग और  
 हा बा। सदन अपनी अपनी दुकाने बन्द रखकर अधिक  
 समय श्रवण कीर्तम में बिताया। अन्तिम में भी सब लोगों

ने महावीर जयन्ती के पुनित अगसर पर दुकान बन्द रखने की भी हमेशा के लिए प्रतिज्ञा ग्रहण की। सब मुनियों ने अपने क्षयोपशम के अनुमार महावीर जयन्ती पर भाषण दिये। मेरे भाषण का सार यह था-

भगवान महावीर एक आध्यात्मिक चेतना के महापुरुष थे। अमावारण शक्तिका स्रोत उनके जीवन में बह रहा था। मानव सस्कृति के विकास में महावीर का दान अपनी जगह रखता है। वह लोक चेतना और आध्यात्मिक सम्पदा के प्रगतिमान प्रतीक थे। मानवही क्यों प्राणी मात्र का कल्याण उनका आदर्श था। अहिमा उनके जीवन में साकार थी। आज जहाँ कहीं अहिमा और शान्ति का उल्लेख किया जाता है वहाँ मर्व प्रथम बुद्धदेव का ही नाम आता है। महावीर का सूचन कोई विरलाही करता है। इसका कारण यही है कि हमने अभी महावीरको जिस उदात्त रूपसे जनसमक्ष रखना चाहिये नहीं रख सके हैं। प्रचार हमारे समाज तक ही सीमित रहा है। विद्वज्जगत में जानकारो सीमित ही है। यह हमारी कमजोरी है। हम यदि महावीर की सच्ची सन्तान और हमारे हृदय में शासन के प्रति तनिक भी आस्था है तो हमारा प्राथमिक काम होना चाहिये, महावीर के विचारों को विश्व के कोने कोने में फैलाना हमारा कर्तव्य होना चाहिए।

इस भाषण का जनता पर अच्छा प्रभाव दृष्टि गोचर होता था। गुरुदेव भी प्रसन्न हुए।

स० २०१४ का चातुर्मास बनेडिया -

बनेडिया के श्रावकों की वर्षों से इच्छा थी कि गुरुदेव का चातुर्मास हमारे नगर में हो और हम भी उनकी अमृत वाणी का पान कर सके। आत्मकर्तव्य के प्रति जागृत रह-



जाये। यहाँ मंत्री मुनि भी पुष्कर मुनिजी म० सा भी पंचायती मोहरे में ठहरे हुए थे। सभी मन्त्र समुदाय मान्य रहे। यहाँ से गुरुदेव, पर कठियों होकर वाटी पचारे तो सभ ने अधिक ठहरने का आग्रह किया। पर महाराज का कहना था कि विरोध लाभ हो तो ठहरूँ। अन्त्यमा भीर से चरसूँगा।

सैन बम तो मिथ्या विश्वासों, अन्ध परम्पराओं और अन्ध्याम अज्ञानियों की पूष्ट भूमि पर अभी हुई कठियों को काट कर फैक देने में विश्वास करता है।

यह सकेत गुरुदेव का समाज के अन्ध विश्वास बहम एवं गलत धारणा के कारण पीड़ित एवं त्रस्त एक विरगत कुटुम्ब के उधार को खोर था। वाटी का एक विराट जन जन सभ्य धोसवाल परिवार की पुण्यापर लोगों ने यह आरोप लगा रक्का था कि वह अकिमी है। इनके साथ विवाहित बहन बेटियाँ ज्ञान पान आदि काम में परहेज रखती हैं अगर पुत्रा के साथ तन्त्र काय कर ले तो बन्धने भी बाकिनी मान लेते हैं। परिश्राम स्वरूप वह बुद्धिमा लक्ष्मण व समाजसे बहिष्कृत की। वहने उसके बहो जाने सं डरती थी। विवाह आदि समाजक किसी भी सामुहिक कार्य में उसे आमंत्रित नहीं करते थे। अपनी बहू बेटियों को उसके घर जाने से मना करते। गुरुदेव ने जब यह सुना तो समाज के इस अन्ध विश्वास से बन्धका हृदय कोप बढा। अन्ध के प्रगति हीन युग में इस प्रकार की घटना समाज के गौरव को हानि पहुँचाने वाली थी। समस्त धार को समझाना सरल है किन्तु अज्ञानियों को समझना बड़ा कष्ट प्रद होता है। पर गुरुदेव के मन में यह बात घर घर गई कि इस कलक से इस बूढ़ बुद्धिया को अवरम मुक्त किया जाय। अपने निरचलानुसार गुरुदेव ने अपने व्याख्यान का

यही विषय बना लिया। उन्होंने अन्ध विश्वास के कुपरिणाम समझाये। गुरुदेव के प्रभावशाली प्रवचन से लोगों की आंखें खुल गईं। उनके अन्धकार मय हृदय में प्रकाश फैल गया। लोगों ने उस वृद्धा को अपना लिया। वृद्ध का कलंक धुल गया। ओसवाल जाती के सभी भाई वहनों ने उनके घर जाकर कच्चा भोजन किया। इस कार्य में प्रमुख श्रावक श्री नेमिचन्द्रजी आदि का अच्छा सहयोग रहा।

वाटी के समीप कदमार नामक गांव में भी दो परिवार के साथ उपरोक्त व्यवहार किया जाता था। गुरुदेव ने वहाँ पधार कर यही कार्य किया। परिवार को 'हाकिनी' के जबरदस्त कलंक से मुक्त किया। गुरुदेव की वाणी में एक अद्भुत आकर्षण शक्ति थी जो भी एक बार उनके सानिध्य में आया वह सदा के लिए उनका परम भक्त बन गया। उनकी व्यापक दृष्टि में अपना, अपना नहीं और पराया, पराया नहीं। वसुधा उनके लिये एक विशाल कुटुम्ब बन गई थी। उस ज्योति पुंज पर रागद्वेष के ऋणावतों का कुछ भी प्रभाव नहीं पडता था। वे हमेशा दूसरों के दुख दर्द को मिटाने में अपना भाग्य मानते थे। सेवा उनके जीवन का परम आदर्श था। सोये हुए समाज, राष्ट्र और जन चेतना को अपने जाज्वल्यमान, प्रदीप्त एवं भोजपूर्ण व्यक्तित्व, घनगर्जित पौरुषमयी वाणी से झकझोर कर सजग सावधान कर देते थे

यहाँ से गुरुदेव मर्चीद, सलौदा खमणोर, मोलेला आदि गावों को फरसते हुए कुवारियों पधारे, जहाँ पूर्वोल्लिखित 'टमू' बाई की स. २०१५ के अक्षयवृत्तीया की दीक्षा थी। सतीजी श्री फेपकुँवरजी ठाना तीन की उपस्थिति में दीक्षा बड़ी धूम धाम से हुई। टमू बाई बड़ी सतीजी की शिष्या

घनी । दादा कायँ स निवृत्त ही गुरुदेव महलों की पीपली पधारे । यहाँ रामपुरा का संघ भाग्यमी श्रीमाने क त्रिप भा पहुँचा । दूसरे दिन महाराज भी मोही पधार गये । यहाँ राज करेबा का भी संघ भी श्रीमाने श्री बिनती के त्रिप भा पहुँचा । अतएव गुरुदेव ने अपनी अम्मभूमि राजकरेबा की बिनति स्वीकार कर ली ।

स० २०१५ का श्रीमाना राज करेबा -

गुरुदेव चातुर्मास राज करेबा पधार रहे व । उस समय माग में सरदारगढ मझौल देवरिया से कौशीबन पधारे, गुरुदेव क उपदेश से यहाँ के व्यापारियों ने वीर बध्नी क दिन अपना समस्त व्यापार बन्द रखने की प्रतिष्ठा माह की । यहाँ से क्रमशः बिहार करते हुए रामपुर बैमाला पधारे । यहाँ करेबा का संघ दशनाब आ पहुँचा ।

भाषाब शुक्ला वसमी के दिन आपने बड़े ही समारोह के साथ राज करेबा में प्रवेश किया । सब साधारण मे अपुन असाह जाया हुआ था । गुरुदेव के प्रभावशाली प्रबन्धन से यहाँ एक पाठ शाखा एव पुरवकासक प्रारभ हुआ । गुरुदेव का यह प्रथम चातुर्मास इस मगर में होने की कुराही में श्रीमाने हरकलासबी हीरासासबी टकलियाने संघ को १००० रूपयेको नगद निधि में ट की गुरुदेव की छेजली बायस स जैन अन्नन बनता प्रभावित की और प्रतिदिन बड़ी संख्या में व्याख्यान सुनने आया करता की । धर्म भ्यान उपस्था की बाड आगई की । सब प्र असाह ही असाह टफिट गोचर होता था । अपने मगर के इस महा मानव को पाकर बनता पुत्रकित हो रही थी । यहाँ आति मगई श्री गुरुदेव के उपदेश से समाप्त हुए । धाम वृद्धों के मुक से निकल रहा था कि हमारे मगर के बालक ने अम्मक-

ल्याण के साथ साथ लोक कल्याण करके हमारे नगर का नाम रोगन कर दिया । हमारी मिट्टी में खेला हुआ रत्न आज आध्यात्मिक सपदा का अधिपति बन गया ।

राजकरेडा के राजा साहब श्री मान् अमरसि हजी वडे ही सज्जन प्रकृति के व्यक्ति थे । प्रजा की सेवा करना अपना मुख्य कर्तव्य मानते थे । राजसत्ता और करोड़ों की सपत्ति होने पर भी ये बड़े विनम्र स्वभाव के थे । इन्होंने अपने नगर की भलाई के अनेक काम किये । सज्जनों के साथ जितने ये नम्र थे दुष्ट लोगों के लिए ये उतने ही भय कर थे । इनकी अपने इलाके पर जबरदस्त धाक थी । मुनिवरों के ये परम भक्त थे । इन्होंने १५००० रूपया खर्च कर अस्पताल भवन बनाया था । ग्रामपचायत के लोगों ने इसमें कुछ ऋगड़ा कर रखा था । भवन निर्माण के बाद मालिकी हक्क को लेकर पचायत वालों में एक राजा साहब में लम्बे समय से ऋगडा चल रहा था । अस्पताल भवन पर राजा साहब का भी ताला था । तो लोगोंने भी अपना ताला उस भवन पर लगा रखा था ।

जब गुरुदेव चोमापे के बाद विहार को प्रस्तुत हुए तो राजा साहबने कहा कि कल तो आपको रुकना ही पड़ेगा । राजहठ भी अर्जवमी होती है । राजासाहब ने स्पष्ट ही कहा कि जबतक आप मुझे रुकने का आग्रहसन नहीं देंगे तबतक मैं यहाँ से हिलनेवाला नहीं हूँ । कही पधारने की कोशिश आप करेगे तो मैं मार्ग को रोक कर खड़ा हो जाऊँगा । हा मेरे लायक कोई काम होतो आज्ञा फर्माई जाय सेवक हाजिर है । गुरुदेव ने गात्र के वैमनस्य को मिटाने का एक अच्छा अवसर देवा । उन्होंने कहा कि मैं तो साधु हूँ, मुझे क्या चाहिये । पर हा आप यदि अस्पताल का ताला खोल

व सो अच्छा है। गुरुदेव की आज्ञा को राजा माहब ने शिष्टे धार करली। समीपमय अपने कामदार को बुलाकर तला सुलवा दिया। और अस्पताल का मकान बनता को सौंप दिया। महाराज भी की औपदेशिक वाणी में वहाँ का पुराना मकान समाप्त हुआ। जनता को अस्पताल की सुविधा हो गई। उसीदिन बड़ी भारी वर्षा हो गई जिसकी वजह से गुरुदेव का रुकना भी स्वामाविक ही हो गया। गुरुदेव अस्पताल मकान में रुक।

वहाँ से गुरुदेव विहार कर आमबला, रघुनाथ पुरा, शीत वगड़ येमासी होकर निम्बादेवा पधारे। काशियास से अक्सर से ज्ञान वदक साहित्य का प्रकाशन हुआ। बांतड़ा खेती अंठासी पधारे। महाराज भी के सदुप देख से जैनधम का अच्छा प्रचार हुआ। इस अवसर पर भीमान् भूराहातजी बाबेल का धमोरसाह अश्लेखनीय था। वहाँ से सप्तमगड शम्भुगड होते हुए आकडसादा पधारे।

वहाँ के आँसिक परोपकार का बसौरा निम्नलिखित है :-

लिखते अदृठ मलि अज्ञा से गुरुदेव के राज्य में अमयदान निमित्त गेहारा (मीठ) मेरु किया। वसमें सुखवत गुजर वाणिजालों का। नाम इस प्रकार है-

(१) गुजर	काहूजी पूनासी	सात ७
(२) "	मयाजी खेनाजी	ती-३
(३) ,	खेमाजी नन्दाजी	पाँच-३
(४) ,	रेमाजी बालूजी	दो-१
(५)	प्रतापजी सबलाजी	एक-१

(६)	„	देवाजी भोजाजी	एक-१
(७)	„	वगनाजी	एक-१
(८)	„	हरदेवजी-मोडा (फागना)	आठ-८
(९)	„	लक्ष्मणजी सैलाजी	पांच-५

इनके सिवाय अन्य भाईयोंने भी अभयदान दिये। इन सबके कानोंमें मुरकिया (कूडक) पहना दी गई। अर्थात् उन्हें अपने टोलेमें ही रख निये गये। इस उपलक्ष में शम्भूगढ निवासी श्री मान् फौजमल जी सा ने २॥ सेर गुड की प्रभावना दी थी।

वहाँ से विहारकर गुरुदेव जैनगर आये जहाँ दीपचन्दजी सा. रांका ने सपत्निक ब्रह्मचर्य व्रत लिया। एव रगनामनी नन्दलालजी ने सघको एक दीवाल घड़ी भेट की।

कई क्षेत्रोंको फरसते हुए पढासौनी पधारे। यहाँ मेवाड केशरी मुनिश्री जोधराजजी म० सा० ने श्रावकों पर अच्छे धार्मिक सस्कार डाल रखे थे। यहाँका सघ त्रिवेकवान है। शिथिला-चारियोंका यहाँ प्रवेश ही असभव है। गुरुदेवसे पूर्व परिचित होनेसे होलिका दहन तक यहाँ विराजनेका सघ ने आप्रह किया। यहा तीनों समय प्रवचन हुआ करते थे। जैनेतर भाई भी व्याख्यान का लाभ उठाते थे।

यहाँ बहुत वर्षोंने दो दल थे। इन्हे सुलभानेके लिये कई गावोंके पचोंने प्रयत्न किया था। जैनाचार्यादि, मुनियों, एव महा-सतीजीने भी इसे समझानेकी चेष्टा की परन्तु सफलता नही मिल सकी। सघर्ष बढ़ता ही जाता था। गुरुदेवने अपने स्वल्प प्रयत्न से सघर्षको भेट दिया यहाँ के लोग गुरुदेवको साक्षात् देवतुल्य मानते हैं। जिस प्रकार भक्त सकट के समय ईश्वरको याद करता है उसी प्रकार यहाँ के भक्तगण व्याधिसे

आचार विषयक शैशिव्य और हीनाचार विषयक चर्चा की। और भविष्य में सभोग आदि की क्या नीति होनी चाहिए। जानना चाहा, महाराज भी ने परमाया कि मैं अपने साथी व भक्त मुनिवरों से विचार विनिमय कर आपको पत्र द्वारा अपने मनोभाव सूचित कर दूंगा। पर हाँ इतना तो मैं भी मानता हूँ कि शिबिलाचारियों के साथ किस भी प्रकार का न से सम्बन्ध रखा जाए और नही उन्हें प्रोत्साहन दिया जाए। इससे समाज में मुनि स्वयं की प्रतिष्ठा सदेहात्मक हो जाती है। सैनमुनि भारत की ही नहीं अपितु विश्व की धार्ष्ण्यकी सत्पा है अतः इसका स्तर गिरना नहीं चाहिये। वहाँ एक पवित्र विराज कर गुरुदेव सन्नाह होकर बनेदिशा पधारे। इस क्षेत्रपर गुरुदेव का अन्वष्ट उपकार है। गुरुदेव ने स्व मू भाग का आदर्श सत्कारों से सत्कारित किया है।

यहाँ से कुवारियों पधारे। वहाँ पूव विराचित मुनि श्री भारमलकी म सा० व मुनि श्री अम्बालालकी म सा त्वेह माह स मिले। यहाँ इस समय बारह ठायों से विराज रहे थे। भटेवर में हुई शिबिलाचार निवारण विषयक वातावरण स मुनिवों को परिचित कराया। सबका सम्मति यहाँ रहा कि कुछ भी हो अपने को एक बात का ध्यान रखना है कि महा परिश्रम से अनखी सध में जो एकता स्थापित हुई है उस पर आंध नहीं आनी चाहिये। यही आपसी दैमनस्य क्षेत्र गवा तो खानकवासी मुनि समाजने एकरत्र के सूत्रमें बम कर जो आदेश स्थापित किया है वह सदिग्ध हा जानगा। सगठन बिलारमे में ता समय नहीं लगता, पर एकाकरण्य में कितना भम और प्राप्ति व्यय होती है उसका अनुमान अनुभवही ही लगा सकता है। यही विचार उपचार्यजी के पास भेजे।

१ इस समय समय समझाचार में से।

कुत्रारियों से आमेट तक सभी मुनिराज साथ ही रहे । गुरुमहाराज देवगढ पधारे । वृष्टि आरंभ हो गई थी । बगढ से टाटगढ आये जहाँ तेरापन्थियों की सख्या अधिक है । पर महाराजश्री पर सबकी समान श्रद्धा है । यहाँ पर मैं सूचित करदूँ कि टाटगढ पहाडी की चोटी पर बसा ऐतिहासिक कस्बा है । राजस्थान के इतिहास के गवेषक कर्नल टोड नाम से बसा हुआ है । इसका प्राकृतिक सौंदर्य प्रेक्षणीय है । इस पहाडी की तलहटी में ही भीम बसा हुआ है । आषाढ शुक्ला दसमी को चातुर्मासार्थ प्रवेश किया । चौमासे में महाराजश्री ने दिन में दो बार व्याख्यान के अतिरिक्त रात्रि का समय प्रतिक्रमण के बाद प्रश्नोत्तरी का रखा था । ताकि सबको धार्मिक ज्ञान की प्राप्ति हो । महासती श्री अभयकुंवरजी ठाना तीनका अच्छा सहयोग रहा । श्री सेवाभावी चन्दनमलजी कुन्दनमलजी, जवाहरलालजी मौजीरामजी, सोहनलालजी और गोकुलचन्दजी आदि की सन्त सेवा सराहनीय रही । पुलिस सर्किल इन्स्पेक्टर श्री भोपालसिंहजी भी समय-समय पर ज्ञानलाभ से लाभान्वित होते रहते थे ।

वर्षावास की समाप्ति के बाद विहार कर लुमानी पहुँचने पर गुरुवर श्री को एक पत्र मिला कि हस्तीमुनि को ठाना २ के साथ रायपुर भेजो । मैं एक साथ मुनि के साथ वहाँ पहुँचा । वहाँ मुनि श्री भार्गमलजी म० सा० ठाना . से विराज रहे थे । मुनिवरा के समक्ष उपाचार्य श्री के पत्र सम्बन्धी वार्तालाप हुई । उनका विचार ले कर मैं अपने साथी मुनि के साथ पुन गुरुदेव की सेवामें पहुँच गया । क्रमशः विहार कर गुरुदेव राणावास आये जहाँ छात्रों को प्रबोधित किया



परित्राण पानेके लिए अश्वत्थ मर्यासे गरदेवका स्मरण करते हैं। यहाँ के संपर्नको मिटानेका गरदेवने जो गुरतर अभि ई उनके उपकारके भारसे भाव भी यहाँका समाज पर यत्न है। गरदेवने कवस यहाँका संपन्न समाज ही नहीं किन्तु यहाँ के समाजमें प्राप्त अनेक कुरवियोंका निवारण किया। खैम कन्या विकल्प नहीं करना बहोके के लिए मांग न करना मोसर में सम्मिलित नहीं होता आदि आदि।

आबादी पहासौरी में भी समाज आपसी फूट के कारण अश्वत्थ विकल था। किन्तु गुरुदेवने उस भी समाप्त कर दिया। यहाँ से चैतपुरा अश्वत्थगढ़, काभारह होकर गरदेव घोर पधारं। यहाँ महावीर जयन्तीका पवित्र पर्व मनाया गया। भीमका संपन्न हा पर प्रारंभ से ही मठा रखता आया है। चातुर्मासके लिये वितति हुई। उत्तर में गरदेवने अश्वत्थगढ़ पर निर्याम करनेका करमाया। यहाँ 'बान्यपति' के रूपमें विराजित स्वधिर महासतीजी भी अमयकवरजीका भी बरी आग्रह था कि भीमासा यहाँ पर ही हो। भीम से प्राप्त पहुँचे। भीमसंभवा प्रयत्न मकल हुआ।

स० २०१६ का भीमासा भीम (मेरवाद्य)

तालसे प्रस्थानकर हुसानी, मवारिका, करेवा बान्यगस आदि ग्रामनगरोको फरसते हुए बैसाख शुक्लामें भडसीपुरा पधारं। यहाँ तैग पम्बी भाईभोने भी गरदेवक प्रति अपनी मर्याका परिचय दिया। किन्ती दृष्टकसे महाराज भी के काममें भमक पड़ा कि यहाँ के महाजनों में आपसी दो हल है। कारण यह है कि एक ओसवाल भाईका बहुत बर्षों से समाजने बहिष्कार कर रखा है। अतः समस्या इतनी बलभी हुई

है कि तेरा पन्थी समाज के मुनियोंने अनेक वार प्रयत्न किया पर विफल ही रहे। सघका भगडा नहीं मिटा सके। मुनियोने अनशन भी किया। वणिक समाज पर इसका क्या प्रभाव पड़ता। महाराजश्री के मन में आया कि मामला है तो विकट पर पुरुषार्थ करने में क्या हानि है। महाराजश्रीने विहारका उपक्रम बनाया, सघ रोकना चाहता था। गुरु महाराजने फरमाया कि मेरे रहनेसे क्या कोई विशेष लाभकी सभावना है? अन्यथा रहना व्यर्थ है। समोदल पसीज गये और महाराजश्रीसे कहने लगे कि आपका निर्णय हमें मान्य है। गुरुदेव के निर्णय पर पारस्परिक क्षमा याचना द्वारा वैतन्श्य विनष्ट नहो गया। और एकत्वकी भावना साकार हो उठी। क्षमाका सागर जहाँ प्रवाहित हो वहाँ सौजन्य स्वाभाविक ही प्रस्थापित हो जाता है। यदि मुनि समाज तटस्थवृत्तिसे काम ले तो समाजकी बहुतसी समस्या तो यों ही सुलभ जाती है। गुरुदेवने यहाँ की अनेक कुरुद्वियोंको दूर किया। क्रमशः बागौर, पूर होते हुए महाराजश्री भीलवाड़ा पधारे। जहाँ पूर्व विराजित मुनिश्री भुरालालजी म सा के दर्शन हुए। स्वर्गीय छोगालालजी म. सा के स्वर्गवास का उन्हे अत्यन्त दुख हो रहा था। गुरुदेव ने आश्वासन भरे शब्दों से इनका शोक निवारण किया। एक सप्ताह सम्मिलित रहे। और साध्वाचार के अनुसार आपस का व्यवहार रहा। यहाँ से हमीरगढ़ नैवरिया, पहुँना आरणी होकर गल्लूड़ पहुँचे। वहाँ इन्द्रमुनिजी एव मगनमुनीजी से भेट हुई। वहाँ से भूपाल सागर सनवाड वल्लभ नगर जहा रुग्णा साध्वीजी की दर्शन देकर भटेवर उपाचार्य श्री जी की सेवामे पहुँचे। साय काल प्रतिक्रमणानन्तर श्री नानालालजी म सा ने श्रमणसघ के मुनियों मे प्रविष्ट

परित्राण पानेक लिय अस्पन्त अद्यासे गरदेवका स्मरण करते हैं। यहाँ के संपन्नको मिटानेका गरदेवने जो गुरुर कथ किय हैं उनके उपकारक भारसे आश्र भी यहाँका समाज मत मतक है। गरदेवन केवल यहाँका संपन्न समान हा नहि किन्तु यहाँ के समाजमें व्याप्त अनेक कुरदियोक निवारण बिना। जैसे कन्या विक्रय नहा करमा बदेखे क लिय मांग न करवा, मोमर में सम्मिलित नहा होना आदि आदि।

आबादी पञ्चासौती में भी समाज आपसी फूट के कारण अस्पन्त विकल था। किन्तु गरदेवने उन को समाप्त कर दिया। वहाँ से चैनपुरा अजितगढ़, कालादेह होकर गरदेव भीम पधारे। यहाँ महावीर अयस्वीका पवित्र पत्र मनाया गया। भीमका संध इन पर प्रारंभ से ही अठा रक्ता आता है। चातुर्मासके लिये विनति है। उत्तर में गरदेवने अक्षय तुम्बिका पर निर्णय करनेका करमाया। वहाँ 'बान्धपति' के रूपसे विराजित स्वविर महासुतीभी ओ अमयकुवरजीका भी वही आमह था कि चौमासा यहाँ पर ही हो। भीम से ताल पहुँचे। भीमसंधका प्रयत्न सफल हुआ।

स० २०१६ का चौमासा भीम (मेरवाडा)

तालसे प्रस्थानकर लुसानी, मदारिया करेडा चान्दवास आदि ग्रामनगरोंको फरसते हुए बैदाक कुकामें अडसीपुरा पधारे। यहाँ तेरा पत्नी आईभोनि भी गरदेवके प्रति अपनी अद्याका परिचय दिया। किसी कृष्कस महाराज भी के काममें मनक पड़ा कि यहाँ के महाजनों में आपसी दो दल हैं। कारण यह है कि एक ओसवास आईका बहुत बर्षों से समाजने बहिष्कार कर रक्ता है। अतः समस्य इतनी बलभी हुई

है कि तेरा पन्थी समाज के मुनियोंने अनेक वार प्रयत्न किया पर विफल ही रहे। सघका झगडा नहीं मिटा सके। मुनियोंने अनशन भी किया। वणिक समाज पर इसका क्या प्रभाव पड़ता। महाराजश्री के मन में आया कि मामला है तो विकट पर पुरुषार्थ करने में क्या हानि है। महाराजश्रीने विहारका उपक्रम बनाया, सघ रोकना चाहता था। गुरु महाराजने फरमाया कि मेरे रहनेसे क्या कोई विशेष लाभकी सभावना है? अन्यथा रहना व्यर्थ है। समोदल पसंज गये और महाराजश्रीसे कहने लगे कि आपका निर्णय हमें मान्य है। गुरुदेव के निर्णय पर पारस्परिक क्षमा याचना द्वारा वैमश्य विनष्ट नहो गया। और एकत्वकी भावना साकार हो उठी। क्षमाका सागर जहाँ प्रवाहित हो वहाँ सौजन्य स्वाभाविक ही प्रस्थापित हो जाता है। यदि मुनि समाज तटस्थवृत्तिसे काम ले तो समाजकी बहुतसी समस्या तो यों ही सुलभ जाती है। गुरुदेवने यहाँ की अनेक कुरुद्वियोंको दूर किया। क्रमशः बागौर, पूर होते हुए महाराजश्री भीलवाड़ा पधारे। जहाँ पूर्व विराजित मुनिश्री भुरालालजी म. सा के दर्शन हुए। स्वर्गीय छोगालालजी म. सा के स्वर्गवास का उन्हे अत्यन्त दुःख हो रहा था। गुरुदेव ने आश्वासन भरे शब्दों से इनका शोक निवारण किया। एक सप्ताह सम्मिलित रहे। और साध्वाचार के अनुसार आपस का व्यवहार रहा। यहाँ से हमीरगढ़ नैवरिया, पहुँना आरणी होकर गलूँड़ पहुँचे। वहाँ इन्द्रमुनिजी एव मगनमुनीजी से भेट हुई। वहाँ से भूपाल सागर सनवाड वल्लभ नगर जहा रूग्णा साध्वीजी को दर्शन देकर भटेवर उपाचार्य श्री जी की सेवामे पहुँचे। साय काल प्रतिक्रमणानन्तर श्री नानालालजी म सा ने श्रमण सघ के मुनियों में प्रविष्ट



कुत्रारियों से आमेट तक सभी मुनिराज माय ही रहे । गुरुमहागज देवगढ़ पधारे । वृष्टि आरंभ हो गई थी । वगड से टाटगढ आये जहाँ तेरापन्थियों की सख्या अधिक है । पर महागजश्री पर नवकी समान श्रद्धा है । यहाँ पर मैं सूचित करदूँ कि टाटगढ पहाडी की चोटी पर वसा ऐतिहासिक कम्बा है । राजस्थान के इतिहास के गवेषक कर्नल टोड नाम से वसा हुआ है । इसका प्राकृतिक सौंदर्य प्रेक्षणीय है । इस पहाडी की तलहटी में ही भीम वसा हुआ है । आपाढ शुक्ला दसमी को चातुर्मासार्थ प्रवेश किया । चौमासे में महाराजश्री ने दिन में दो बार व्याख्यान के अतिरिक्त रात्रि का समय प्रतिक्रमण के वाद प्रश्नोत्तरी का रखा था । ताकि सबको धार्मिक ज्ञान की प्राप्ति हो । महासती श्री अभय-कुवरजी ठाना तीनका अच्छा सहयोग रहा । श्री मेवाभावी चन्दनमलजी कुन्दनमलजी, जवाहरलालजी मौजीरामजी, सोहनलालजी और गोकुलचन्दजी आदि की मन्त सेवा सराहनीय रही । पुलिस सर्किल इन्सपेक्टर श्री भोपालसिंहजी भी समय-समय पर ज्ञानलाभ ने लाभान्वित होते रहते थे ।

वर्षावास की समाप्ति के वाद विहार कर लुमानी पहुँचने पर गुरुवर श्री को एक पत्र मिला कि हस्तीमुनि को ठाना २ के साथ रायपुर भेजो । मैं एक साथ मुनि के साथ वहाँ पहुँचा । वहाँ मुनि श्री भारमलजी म० सा० ठाना.. से विराज रहे थे । मुनिवरा के सनत्त उपाचार्य श्री के पत्र सम्बन्धी वार्तालाप हुई । उनका विचार ले कर मैं अपने साथी मुनि के साथ पुन गुरुदेव की सेवामें पहुँच गया । क्रमशः विहार कर गुरुदेव राणावास आये जहाँ छात्रों को प्रबोधित किया

आचार विषयक शैबिस्य और हीनाचार विषयक चर्चा की। और भविष्य में सभोग आदि की क्या नीति होनी चाहिए। जानना चाहा, महाराज श्री ने फरमाया कि मैं अपने साथी व भक्त मुनिवरो से विचार विनिमय कर आपको पत्र द्वारा अपना मनोभाव सूचित कर दूंगा। पर हाँ इतना तो मैं भी मानता हूँ कि शिक्षाचारियों के साथ किसी भी प्रकार का न हो सम्बन्ध रखा जाय और नहीं उन्हें प्रोत्साहन दिया जाय। इससे समाज में मुनि सभ की प्रतिष्ठित सदैव उत्तम हो जाती है। जैनमुनि भारत की ही नहीं अपितु विश्व की आदर्शमयी सत्ता है अतः इसका स्तर गिरना नहीं चाहिये। वहाँ एक रात्रि विराज कर गुरुद्वेष सन्नाह होकर बनेदिशा पचारे। इस क्षेत्रपर गुरुद्वेष का अनहद उपकार है। गुरुद्वेष ने इस मू भाग को आदर्श सत्कारों से सत्कारित किया है।

यहाँ से कुचारियों पचारे। जहाँ पूव विराजित मुनि श्री भारमलजी म सा० प मुनि श्री अम्बासाहजी म सा स्नेह भाव से मिले। यहाँ इस समय बाराह ठाणों से विराज रहे थे। मठेश्वर मे हुई शिक्षाचार निवारण विषयक चर्चा आप से मुनियों को परिचित कराया। सबकी सम्मति यही रहा कि कुछ भी हो अपने को एक बात का ध्यान रखना है कि महा परिश्रम से अमयी सभ में जो एकता स्थापित हुई है उस पर आंच नहीं आनी चाहिये। यही आपसी दैमनस्य फैल गया तो स्वामकवासी मुनि समाजने एकत्र के सूत्रमें बंध कर जो आदर्श स्थापित किया है वह सदिग्ध हो जायगा। सगठन विचारने में तो समय गयी लगता, पर एकीकरण में कितना श्रम और शक्ति व्यय होती है उसका अनुमान अनुभवी ही लगा सकता है। यही विचार उपाचार्यजी के पास भेजे।

१ उस समय अमण अमण्यार में थे।

कुवारियों से आमेट तक सभी मुनिराज साथ ही रहे । गुरुमहाराज देवगढ़ पधारे । वृष्टि आरंभ हो गई थी । वगड से टाटगढ आये जहाँ तेरापन्थियों की सख्या अधिक है । पर महाराजश्री पर सबकी समान श्रद्धा है । यहाँ पर मैं सूचित करदूँ कि टाटगढ पहाडी की चोटी पर बसा ऐतिहासिक कस्बा है । राजस्थान के इतिहास के गवेषक कर्नल टोड नाम से बसा हुआ है । इसका प्राकृतिक सौंदर्य प्रेक्षणीय है । इस पहाडी की तलहटी मे ही भीम बसा हुआ है । आषाढ शुक्ला दसमी को चातुर्मासार्थ प्रवेश किया । चौमासे में महाराजश्री ने दिन में दो बार व्याख्यान के अतिरिक्त रात्रि का समय प्रतिक्रमण के बाद प्रश्नोत्तरी का रखा था । ताकि सबको धार्मिक ज्ञान की प्राप्ति हो । महासती श्री अभय-कुवरजी ठाना तीनका अच्छा सहयोग रहा । श्री सेवाभावी चन्दनमलजी कुन्दनमलजी, जवाहरलालजी मौजीरामजी, सोहनलालजी और गोकुलचन्दजी आदि की सन्त सेवा सराहनीय रही । पुलिस सर्किल इन्सपेक्टर श्री भोपालसिंहजी भी समय-समय पर ज्ञानलाभ से लाभान्वित होते रहते थे ।

वर्षावास को समाप्ति के बाद विहार कर लुमानी पहुँचने पर गुस्वर श्री को एक पत्र मिला कि हस्तीमुनि को ठाना २ के साथ रायपुर भेजो । मैं एक साथ मुनि के साथ वहाँ पहुँचा । वहाँ मुनि श्री भार्गमलजी म० सा० ठाना . से विराज रहे थे । मुनिवरों के समस्त उपाचार्य श्री के पत्र सम्बन्धी वार्तालाप हुई । उनका विचार ले कर मैं अपने साथी मुनि के साथ पुन गुरुदेव की सेवामें पहुँच गया । क्रमशः विहार कर गुरुदेव राणावास आये जहाँ छात्रों को प्रबोधित किया



आचार विषयक शैबिल्य और हीनाचार विषयक चर्चा की। और भविष्य में सभोग आदि की क्या नीति होना चाहिए। जानना प्याश, महाराज श्री ने फरमाया कि मैं अपने साथी व अन्य मुनिवरों से विचार विनिमय कर आपको पत्र द्वारा अपने मनोभाव सूचित कर दूंगा। पर हाँ इतना तो मैं भी मानता हूँ कि शिक्षिताचारियों के साथ क्रिया भी प्रकार का न हो सम्बन्ध रखा जाय और नहीं उन्हें मोस्ताहन दिया जाय। इससे समाज में मुनि सभ की प्रतिष्ठा सदेहरमक हो जाती है। जैनमुनि भारत की ही नहीं अपितु विश्व की आदर्शमयी सत्त्वा है अतः इसका स्तर गिरना नहीं चाहिये। यहाँ एक रात्रि विराज कर गुरुदेव सनवाइ होकर बनेद्विषा पधारे। इस क्षेत्रपर गुरुदेव का अनहद उपकार है। गुरुदेव ने इस मू माग को आपरा सत्कारों से सत्कारित किया है।

यहाँ से कुबारियों पधारे। जहाँ पूज विराजित मुनि श्री भारमलजी म सा० प मुनि श्री अम्बालापजी म सा स्नेह भाव से मिले। यहाँ इस समय बारह ठायों से विराज रहे थे। भटेबर मे हुई शिक्षिताचार विचारण विषयक बाठोत्राप से मुनियों को परिचित कराया। सबकी सम्मति यही रहा कि कुछ भी हो अपने को एक बात का ध्यान रखना है कि महा परिजम से भ्रमणी सब में जो एकता स्थापित हुई है उस पर आंच नहीं आनी चाहिये। यही आपसी दैनन्तस्य क्षेत्र गया तो स्वानकवासी मुनि समाजने एकरव के सूत्रमें बंध कर जो आदरा स्थापित किया है वह सदिग्ध हो जायगा। सगठन बिकरने में तो समय नहीं लगता, पर एकीकरण में कितना श्रम और शक्ति व्यय होती है उसका अनुमान अनुभवी ही लगा सकता है। यही विचार उपाचारजी के पास भेजे।

१ इस समय ब्रमण्य भ्रमणाचार में थे।

कुवारियों से आमेट तक सभी मुनिराज साथ ही रहे । गुरुमहागज देवगढ पधारे । वृष्टि आरंभ हो गई थी । वगढ से टाटगढ आये जहाँ तैरापन्थियों की सख्या अधिक है । पर महाराजश्री पर सबकी समान श्रद्धा है । यहाँ पर मैं सूचित करदूँ कि टाटगढ पहाडी की चोटी पर बसा ऐतिहासिक कस्बा है । राजस्थान के इतिहास के गवेषक कर्नल टोड नाम से बसा हुआ है । इसका प्राकृतिक सौंदर्य प्रेक्षणीय है । इस पहाडी की तलहटी से ही भीम बसा हुआ है । आपाढ शुक्ला दसमी को चातुर्मासार्थ प्रवेश किया । चौमासे में महाराजश्री ने दिन में दो बार व्याख्यान के अतिरिक्त रात्रि का समय प्रतिक्रमण के बाद प्रश्नोत्तरी का रखा था । ताकि सबको धार्मिक ज्ञान की प्राप्ति हो । महासती श्री अभय-कुंवरजी ठाना तीनका अच्छा सहयोग रहा । श्री सेवाभावी चन्दनमलजी कन्दनमलजी, जवाहरलालजी मौजीरामजी, सोहनलालजी और गोकलचन्दजी आदि की सन्त सेवा सराहनीय रही । पुलिस सर्किल इन्सपेक्टर श्री भोपालसिंहजी भी समय-समय पर ज्ञानलाभ से लाभान्वित होते रहते थे ।

वर्षावास को समाप्ति के बाद विहार कर लुमानी पहुँचने पर गुरुवर श्री को एक पत्र मिला कि हस्तीमुनि को ठान २ के साथ रायपुर भेजो । मैं एक साथ मुनि के साथ वहाँ पहुँचा । वहाँ मुनि श्री भार्गमलजी म० सा० ठाना .. विराज रहे थे । मुनिवरा के समस्त उपाचार्य श्री क सम्बन्धी वार्तालाप हुई । उनका विचार ले कर मैं अपने साथी मुनि के साथ पुन गुरुदेव की स्वामें पहुँच गया । क्रमशः विहार कर गुरुदेव राणावास आये जहाँ छात्रों को प्रबोधित किया

पारबैनाथ जयन्ति अति समारोह के साथ मनाकर क्रमशः सारण्य वराहस्थ, पधारै । वहाँ मो दो वक्त थे । गुरुदेव के उपदेश से समाप्त हो गये । वहाँ से बिहार कर गुरुदेव बस स्नेहा होकर वली ककड़ा सूरजपुरा भादि क्षेत्रों को फरसते हुए होली शौमासा ब्यावर किया । ब्यावर खेतों का बन्धा कम्प है । पर वहाँ आपसी साम्प्रदायिक बातावरण मईक बत रहता है । इमक्य वायित्व किसपर है ? यह तो क्षिणता बर्बा है पर हों यदि मुनि समाज संघटन के प्रति इमानदार हो जाय तो ऐसे क्षेत्र सुपर सकते है । मै जिस लक्ष्य को लेकर भरतवा गया था वममें मुझे पूष्य सफलता मिली । दिसा रुकवाइ । सैकड़ों जीवों को अभयदान मिला । दयाधम का बन्धा प्रचार हुआ । महाराज का रामगड होकर क्षेत्रों पधारै । शौमासे की माबता बनता मे की पर मकान के अभाव के कारण विचार स्वगित करना पडा । वहाँ से बालिका भारि गाँवों में होकर विजय नगर जाये वहाँ प्रास्थ-मुनि श्री पन्नालालजी म० सा० से मिलन हुआ अमण सध विषयक अनेक बर्बाएँ हुई । महावीर जयन्ती वहाँ की मनाई । ब्या-ख्यान साब में होता था । आहार पानी प्रबक् करते थे । सध का संवा और मत्री मुनिवर का स्नेह अतितीय रहा । वहाँ से गुलाबपुरा पधारने पर मरुवर केशरी मत्रा मुनि श्री गिभीलालजी म सा सं मिलन हुआ । मत्री मुनिवर से अमण सध विषयक बर्बाएँ की । वहाँ से रूपाहेली होते हुए कवलियावास पधारै वहाँ मेवाडी मुनिश्री चौबमलजी म सा० से मिलना हुआ ।

गुरुदेव सरेखी रायला मांडल मोपालगज भीलबाइ पहुँचने पर कनकपुर का प्रतिनिधि मरुवल शौमासे के लिए

आया और आगार रख कर स्वीकृति प्रदान की ।

स २०१७ का चौमासा कानपुर

महाराजश्री के कनकपुर वालों को चातुर्मास की स्वीकृति देने के बाद उनके पैरों में अचानक ही कुलन चलनी शुरू होगई । सेठ अर्जुनलालजी के प्रयत्न से चिकित्सा की समुचित व्यवस्था की गई । बाद में वहाँ से विहार कर सुवाणा, बनखेडा, सवाईपुर, त्रिगोद, वे'गू, साभरिया, लाडचुरा, मांडलगढ किले पर आये । दो दिन विश्राम किया । किसी समय यह दूर्ग रमणीय होने के साथ-साथ जन कोलाहल से भी गुजता था । पर आज वहाँ निस्तब्धता छाई है । इतिहास के अनेक उतार चढाव इसने देखे हैं । उसके कण कण में उसका अतीत प्रति-बिम्बित होता है । वहाँ की धूनि, वीरों की कहानियाँ, आज भी सुना रही है । पुन त्रिगोद पहुँचने पर महामतीजी जसकुंवरजी को दर्शन दिये । नन्दराय जाने पर आर्यसमाजी वन्धुओं ने अनेक तात्विक प्रश्न किये जिनका समुचित उत्तर पाकर मुनिवर की सराहन करने लगे । कोटझी बनेडा लाबिया आदि होते हुए अषाढ शुक्ला दसम को कनकपुर चातुर्मास के लिए पधारे नियमित व्याख्यान होते थे । जनता अच्छी सख्या में व्याख्यान सुनने आया करती थी । तपश्चर्या सी समयानुकूल अच्छी हुई । गुरुदेव के प्रभावशाली एवं उदात्त प्रवचनों को सुन स्थानीय श्रावकसघ के विचार भी उदात्त बने । यहाँ कि विशेषता यह रही की अजैन लोगों ने भी गुरुदेव द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलने का प्रयत्न किया था । दया, पौषध सामायिक व्रत पचक्खान आदि भी करते थे । गुजर मेघजी रोजाना सामायिक और आनुपूर्वी गिन्ता था । सब दृष्टि से यह चौमासा सफल रहा ।

विहार के बाद गंगेका पधारने पर पुन. मेवाडी मुनि पधार गये। ज्ञान्वा आशिया, क्षेत्रही आदि होकर पडासौही पधारे। वहाँ दर्शनार्थ फेरकुबरजी म सा ठाना ४ सं पधारी वैदिक अस्वस्वता पश मुक्त वहा रुकना पडा। महाराज श्री बनौर पधार। वहाँ से चैनपुरा काला देह अजितगढ़ से भीम आकर मुनेश्री मारमसजी म के साथ इस दिन रहे। वहाँ से बान्वा आने पर मसीयाजी श्री सम्बन कुबरजी ठाना चार से पधारी। क्रमशः करेडा रायपुर, देवरियाँ, मन्डौल, डेलाना, खाल्सा, पोटला पनौतिर्वा कोठही पधारे। यहाँ माहेश्वरी समाज के ही अधिक धर है। जनकी मन्दी भया है। गुरुदेव के आगमन पर वहाँ के लोगोंने खादिर व्याख्यान करवाया। व्याख्यान सुनने के लिए साग गाँव उमड पडा। वैष्णव मन्दिर के प्रांगण में गुरुदेव क प्रवचन का विषय था। सभी मानवता एवं कुरिषाओं के बुरे परिणाम' व्याख्यान सुन कर लोग बड़े प्रभावित हुए। साथ ही सबने मिलकर वह प्रतिज्ञा की कि हम लोग अमावस्या को वैल के कन्वे पर खड़ी नही रखेंगे और किन्ही भी पशु को काँडी हाऊस में नही धारेगे। वहाँ से सनबाड़ फतह नगर ऊँठाजा पधारे। यहाँ आपसी संघ मे जो बिसंबाल था। वह समाप्त हो गया। वहाँ से लैरोदा पधार। और महाराज श्री की सेवा में देवरियाँ ऊँठाला पलाना का संघ चौमाम की विमति करने भगा। संघत्रय क तमाव पर गरुड ने यह निर्णय दिया कि बम्बोरा पहुँच कर आप लोगों का निर्णय मक अबाव पत्र द्वारा सूचित करूँगा। गुरुदेव बम्बोरा पहुँच। वहाँ पुनः उपयुक्त संघ के चौमासे सम्बन्धी पत्र आने शुरू हुए। यहाँ क प्रमुख भावक द्वारा पाँच आगार रखते हुए आगामी चातुमास की रीतिरिति देवरियाँ क लिए

फरमादी । इस बात की सूचना अन्य संघ को पत्र द्वारा कर दी गई ।

पांच आगारों में से एक आगार का उल्लेख करना आवश्यक है । वह इस प्रकार था मुनि हस्तिमलजी की माता अगर चातुर्मास करने की आग्रह करे तो पलाना चोमासा किया जायगा । कारण २२ वर्ष से यह कभी गुरुदेव के दर्शन के लिये नहीं आई थी । ईस का मूल कारण मैंने उनकी इच्छा के विरुद्ध समय ग्रहण किया था इसी की सख्त नाराजी उसे थी । गुरुदेव माताजी को सानुकुच बनाना चाहते थे ।

महाराज श्री सिहाड पधारे, कुथवाम के लिए रवाना हुए । मार्ग बड़ा ही उबड़ खाबड़ है । ग्रीष्म का प्रकोप, और रास्ता भी ककरीला, डरावना, भयावना और मार्ग में अनेक पगडंडीयों का निशान होने से गुरुदेव जगल में भटक गये श्रावकों को पता लगने पर बहुत ही चिंतित हुए । और खोज में निकल पडे । जेष्ठ की धूप में कहीं धोवन पानी का भी जोग नहीं बैठा । गन्ना सूखता जा रहा था । भटकते भटकते शाम को छ बजे गुरुदेव कुथवास के स्थानक में पधारे । पैरों में वेदना से फफोले उठ गये थे । पर पुरानी मेंहदी के लेप से शान्ति मिल गई । खैरैदा आने पर चिकित्सा की गई । इसी समय फेफुंवरजी महामतीजी का आगमन हुआ । उनके अनुभव से महाराज के पैर की सूजन आवले का सेवन से दूर हो गई । यहाँ से आराम होने पर शनै २ पलाना कला आये । मेरी माता ने जब मुझे देखा तो उनका मातृवासस्थ जाग उठा । उन्होंने अश्रुपूर्ण धारा में कहा कि २२ वर्ष हो गये मेरे लाडले को समय लिये, पर एक की चोमासा यहाँ

फरमाने का आदेश नहीं दिया। अब मेरी बलवती इच्छा है कि अब के वष आप वर्षावास यही स्थिति कर मध्य क्षेत्रों को प्रतिबोध कीजिये। आपका उपकार हम कदापि नहीं भूलेंगे महाराज भी ने कहा कि यद्यपि मैंने यहाँ का आगार तो रक्त किया है पर भाषा की दृष्टि से अन्यत्र भी वषा हूँ। अतः यह चौमासा पलाना कला का ही तय हुआ।

स ० १८ का चौमासा पलाना कला

पलाना की जनता आज खूब ही पर्याप्त का अनुभव कर रही है क्यों कि महागजभी ने फरमाना कि वर्षावास यही स्थिति होगा। शेषकाल अधिक होन से धम ध्यान-प्रचाराय अन्यत्र विहार कर दिया। यहाँ स कृष्ण विहार करते ममाना पधारे। यहाँ क्वसत पामेचा परिवार ही चार्लिस स पहाव के अनुमाई है। शेष मेरापन्नी है। वीरवालय जाति के संस्थापक परमतपस्त्री भी राम रामलक्ष्मी म० ठाया २ स पधार गये। तीव्र बुद्धि के कारण दो दिन काल शेष करमा पडा। कौठारिया में मावहाना के भी मध के विरिष्ट आपह से बहाँ जाना अनिवाय हो गया। यहाँ सामाजिक काय और प्राचिन रुढ़िगतप्रथा के प्रकरण का लेकर म्मेला सडा हो गया मवयुवक तो इस प्रकार की प्रवृत्ति का अनुमोदक है पर वव प्राण मानव इस काव को सदेहात्मक दृष्टि से देखत है। समाज में इस प्रसंग का लेकर वा बल होगये वे। आश्चर्य है कि इस मगल काय से समाज को अनादर क्यों ?

आपाह छुक्ला वदमी के रोज चाहुमासाय पलाना में प्रवेश किया। जनता ने अद्भुत उत्साह की लहर बौड़ गई थी। स प एव गाँव के सरपच मोहलामाजी सा० अपने मगर का

अहो भाग्य समझ रहे थे कि ऐसे महान् विद्वान् और संयमी मुनियों का चौमासा हमारे नगर में होने जा रहा है। सभी वर्ग के लोग आत्मीयता का अनुभव कर रहे थे।

व्याख्यान का क्रम इस प्रकार रखा गया था कि प्रथम तो गुरुमहाराज सूत्र फरमाते थे। बाद में मैं प्रद्युम्न चरित्र का विवेचन करता था। धर्मध्यान व्रीज के चन्द्रमा की तरह बढ़ता ही जाता था। पर्यूपण पर्व के दिनों में लोगोंने व्यापार बन्द रखा। आठ दिन तक अखण्ड शान्ति जाप चलता रहा यहाँ भी कतिपय वीरवाल परिवार है। जिन्होंने अठाई ओर पंचर गी की तपश्चर्या के अलावा सामायक व्याव्रत करते थे। पलाना के श्री सघ ने आगन्तुकों का ऐसा स्वागत किया कि लोग अनुभव करने लगे कि मेवाड भी आतिथ्य करना जानता है। इस अवसर पर दबोक जैन कन्या पाठ शाला की छात्राओं को लेकर आनन्दीलालजी मेहता भी उपस्थित हुए। छात्राओं ने महावीर और चन्दनवाला का नाटक का अभिनय बड़ी सफलता के साथ किया। श्रीमान नानालालजी सा से सुपुत्र जमराजजी फतहलालजी ने बड़े २ पतासे की प्रभावना की अटलीनिवासी श्रीमान् धनराजजी मा की धर्म पत्नी नजरवाई ने ग्लासे की प्रभावना की और नाथद्वारा के अग्रण्य बन्धुओं ने नमोकार मंत्र की तसवीरो की वीरवाल संघ में प्रभावना की।

मिगसर वदि प्रतिपदा को प्रस्थान करने की वेला आ पहुँची। समय के पालक चातुर्मास के बाद बिना विशिष्ट कारण के कैसे ठहर सकते हैं ? सभी के मुख पर विशाद की रेखाएँ उभरी हुई थीं। कारुणिक दृश्य उपस्थित था। तुलसीदास ने ठीक ही कहा है -



मिलत एक बाह्य दुःख देही, विघ्नबत एक प्राण हरदेही ॥

महाराज भी ने कचहरी में मांगलिक सुनाया और नगर निवासियों ने विनम्रभाव से सुना याचना की। बनता गुरुदेव हो गई। सिन्धू, भांडीक, गडवाडा और यामला के सब विद्वान्धियों कर रहा था। पर महाराजभी के लिए सभी को एक साथ संतुष्ट कर सकना संभव नहीं था। पर एक रात्र का माग पकड़ा जा सकता है। कमल माण्डोल, गडवाडा पधारे। यहाँ मध के प्रमुख श्रीमान् मांगीलालजी सा० तलेसर बनता के प्राण है। निरस्ताय के सहायक है। अज्ञा शील की प्रतिमूर्ति है। गुरुदेव के परम भक्त है। इनके आग्रह पर कुछ दिन यहाँ विराज कर कमल माण्डली, सेमली, होकर आग्रह उदयपुर पधारे। यहाँ उदयपुर का महावीर मण्डल का एक प्रतिनिधि मण्डल महाराज की सेवामें पहुँचा। यहाँ यह विना किमी मकोच के लिख देना आवश्यक जान पड़ता है कि इन दिनों उदयपुरका भासिक वातावरण अस्थिर चूक्य था। बाठ यहाँ तक बढ़ा हुई थी कि एक ही समाज में दो पूबक पूबक व्याख्याम होते थे। प्राचीन इतिहास इसबाठ का साक्षी रहा है कि जहाँ महामुनि का विराजमा होता है यहाँ परिपूर्ण शान्ति का सागर लहराता है। पर आज उदयपुर इस बात का अपवाद था। मन में बड़ी वेदना हो रही थी कि यह सबकुछ क्या हो रहा है? कहां गई जैनो को यह बहि सक भावना जिसके आधार पर यह आहतक जीवित है और वह श्यामल का आदस फहा बिलुप्त हो गया? जिनने विरोधियों म समानता स्थापित कर जैनधर्म और धराम का प्रकाश भारत में फैलाया। जैनो को दोनों तत्त्व विरासत में मिले हैं। पर आज इनका विनिमय नहीं हो पा रहा है।

जैनी आपस में लड़े और वह भी धर्म के नाम पर । लज्जा जनक बात है ।

उदयपुरका महावीर मण्डल एक प्रगतिशील संस्था है । जैन समाज का वह सफल प्रतिनिधित्व वर्षोंसे करता जा रहा है । परन्तु गत कई वर्षों में धर्म स्थानरिक्त पड़ा था । कार्यकर्ता बहुत ही चिन्तित थे । इधर सामाजिक विक्षोभका एक कारण यह भी हो चला था कि उपाचार्यश्रीने कुछ कारणोंको लेकर श्रमणसघ से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर दिया था । उनका स्वास्थ्य प्रकृतिस्थ न रहनेके कारण शहर बाहरके बगले में विराजते थे । आयुष्य से गुरुदेव सुखसाता पूरुनेके निमित्त उपाचार्यश्रीके दर्शनार्थ पधारे । उपाचार्यश्रीने तो समुचित वात्सल्य-स्नेह बनाया पर अन्य मुनिगण अपने अहवृत्ति में ही मस्त रहे ।

महावीर मण्डल के अग्रगण्य बन्धुओं की विनतिको मान दे कर महाराजश्री उदयपुर शहरमें पधारे । प्रतिदिन व्याख्यान होता रहा । इतने में दुःखद संवाद मिला कि आचार्य श्री आत्मारामजी म. सा स्वर्गस्थ हो गये । सघ में विशादकी लहर दौड़ गई । शोक प्रगट करने के निमित्त एक विशाल सभा भरी । कार्योत्सर्ग कर श्रद्धाजली प्रकट करते हुए गुरुदेवने फरमाया कि-श्रमण सघ के आचार्य आत्मारामजी म सा के स्वर्गवाससे समाजको बड़ी भारी क्षति पहुची है । वे श्रमणसघ के उन्नायकों में से एक थे । जिन शासन के प्रकाश पुज थे । उनका शास्त्रीय ज्ञान अगाध था ये अपने समय के संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी भाषा के प्रखर पंडित होनेके साथ साथ एक उच्च कोटिके ग्रन्थकार थे । अध्यात्म-साधना गगनके एक ऐसे ही जाञ्जल्यमान सूर्य थे । जो तप-त्याग ज्ञानकी दिव्यप्रभा लेकर जैन जगनमें अवतीर्ण हुए और अपने प्रकाश पुज से जैन

समाजको चमत्कृत और प्रकाशित करते रहे। एक नव चतन्य नवसृष्टि एव नव प्रेरणाका पांच अन्य जन हृदय में फूले रहे। इनके सबगुणों की चमत्कृति से अघावधि जैन जगत चमत्कृत है और युग युग तक रहेगा यह निःसंदेह है। भठेवर को यहाँ मिथादि स्वर हो गया था जो वही उपचार से ठीक हो गया। अब महागुरुजी शीघ्र विहार करना चाहते थे। इधर विश्व पर अष्ट महाप्रह मरहटा रहा था। उसकी शान्ति के लिए सबत्र जप तप हो रहा था। उदयपुर संघने भी प्रह शान्ति के लिए हजारों आयम्बिल एवं आप करने लगे। ऐसे अवसर पर गुरुदेवका मार्गदर्शन भी आवश्यक था अथ माननीय श्री मूमर ज्ञानजी सिरोहिया रणजीतलालजी हिंगल अ। अम्बालालजी सा. आदि राहर के भगवत भावकोंके अत्यन्त भावसे स गुरुदेवके कुछ समय तक यहाँ रुकना पडा। यहाँ से विहार कर नई पधारे। यह गुरुदेवका पूर्व परिचित क्षेत्र है। यहाँ पधारने पर गुरुदेव के शरीर में अत्यन्त दुःखलता लगने लगी। भीमान चाम्बलजी महता एव शंकरलालजी कोठारी के सत्ययत्न से भीपणी के सेवन से गुरुदेवने स्वास्थ्य लाभ किया। यहाँ से म्हासात ज्ञानेका विचार था किन्तु स्वास्थ्य अनुकूल न होनेसे यहाँका विचार बदलकर मुबाना भावसे पधारे। यहाँ से गुरुजी जेमली बरोली से भठेवर पधारे। अगामी चौमासाव भादसीका संघ गुरुदेवकी सेवामें उपस्थित हुआ। व्याख्यान प्रवचन के बाद संघ अपने पूर्व विचारों का स्मरण कर परचाताप कर रहा था। गुरुदेव भी की सरल प्रकृति एव ज्ञान किवा की उत्तमताकी देखकर ज गत घटना की जमा मांगने लगा। और यह कबूल किया कि पञ्चपात-सर्वनाशका द्वार है। गुरुदेवने भी अपने विशाल हृदयका परिचय दते हुए जन्मे जमा कर दी एव आगार के साथ जनकी विमति मान ली।

सं० २०१६ का चौमासा भादसौडा -

आगन्तुक सघ गुरु महाराजकी जय जयकार कर प्रस्थान कर गया। विहार कर महाराज श्री वल्लभनगर पधारे। जहाँ उनके घुटकों में पीडा उत्पन्न हो गई थी। समाज में भी धार्मिक उदासीनता छाई हुई थी। एलोपैथी दवा से महाराज श्री को अरुचि थी अतः केवल सरसों के तैलका ही मर्दन किया। यहाँ के औदासिन्य पूर्ण वातावरणसे विहार करना तय किया, पर मधके आग्रह और कमेला मिटानेकी भावना से स्वल्पविहार के बाद वापिस पधार गये और महावीर जयन्ती सोत्साह मनाई। सबने यह लिखित निर्णय किया कि महावीर जयन्ती के दिन दुकानका कारोबार बन्द रखकर केवल धर्म ध्यान में ही दिन बितायेंगे। ऐसाही हुआ। इस अवसर पर विद्वानों के भाषणका अच्छा प्रभाव दृष्टिगोचर होता था।

घुटने की पीडा शान्त नहीं हो रही थी पर महाराज श्री का आत्मबल ऐसा था कि उनने इस कष्ट की तनिक भी पर्वाह नहीं की। समयमर्यादना में तत्पर रहे। ऐसे अवसरों को वे कसौटी मानते थे।

वल्लभनगर से रूडेडा, इटाली, सगेसरा, आकोला पधारे। अत्यन्त उष्णता के कारण मेरे शरीर में पीडा हो गई। अर्श का प्रकोप बढ गया। सनवाड पधारे। १५ दिन के उपचार के बाद शान्ति मिलि। उपाध्याय हस्तीमलजी म सा आदि ठानाओं से पधारे। सम्मलित ठहरे और वन्दन व्यवहार यथावत् रहा। यहाँ से उपाध्यायजी म० सा० उदयपुर की ओर पधारे। गुरुवर्य के फनेह नगर पधारने पर मुनिश्री अम्बालालजी म० ठाना ४ से मिले। मुनि श्री भारमलजी म०

मा के स्वर्गवास से उठे सांत्वना देने के लिए मिलना व्यर्थ था। गुरुदेव ने अपने सुरल स्वभाव से उन्हें सांत्वना भरे शब्दों से आश्वासित किया। वहाँ से काहरवा पधार कर सतीबी 'श्री मौमाग्य कुँवरजी' भादि को पुरान दिये। बाद में भूगजसागर, जामना गल्लूड, राहमी, मीमगाइ लांघन, सीपपुर, नारेका होते हुए बिचोडगड पधार गये।

बिचोडगड जैसा मजबूत गड है वैसा ही यहाँ मप्रयाग बाद का गड भी मजबूत है। मात्र के इस प्रगतिशील युग में सांप्रदायिक बाद के गड डहन ही चाहिये तभी ममात्र अपना विकास कर सकता है। यहाँ से अरखौरा मठ ब्यण्डा, सावा, स मंदिर पधारे। यहाँ संप में सांप्रदायिक पधारा होने पर स यमी को परम्वन का समता है। गुरुद्वय क अगमन पर मघन अख्यो मेवा और अना धार्मिक भाषना का परिचय दिया। कमरा वानीख पधारे। यहाँ भादमौडा का सघ भी पुराना था। यहाँ से विहार कर चतुर्मास भाषाड शुक्ला दसमी के दिन अष्विनि क साथ भादसौडा क स्थानक में प्रवेश किया। जोगी में बडा खरमार दृष्टिगोचर हुआ। प्रतिदिन दोनों समक व्याख्यान होता रहा। व्याख्यान में जोगी की अख्यो उपस्थिति रहती थी। इस वष का चतुर्मास धर्म ध्यान का दृष्टि से अद्विभरणीय था। चतुर्मास की समाप्ति क अस्तर पर आसपास क ग्रंथ क सघ में बिनति क लिए आय था। विहार क दिन स्थानिय सघ ने एव बाहर के का सिबन जन समूह न भावमाना विशाई था।

दूसर दिन अन्नस घ के भाया द्विनिय भाषार्य क द्वारा अस्तर क अष्विनि वषक वष क उपयोग की घोषणा जब गुरुद्वय ने पकी तो उठ बडा अष्टमोम हुआ। स यमी जीवन में वष क प्रयोग

की छूट में अनेक प्रकार की शिथिलाचार की प्रवृत्ति बढ़ सकती है। गुरुदेव ने श्रमणसंघ की इस घोषणा का कड़ा विरोध किया। इस घोषणा का 'विरोध' में सभी जैन सामयिक पत्रों में प्रगट करने के लिए भेजा किन्तु श्री रतनलालनी डोशी ने ही अपने पत्र 'सम्यग् दर्शन' में प्रगट किया। गुरुदेव ने अपनी घोषणा में कहा—जब तक श्रमणसंघ इस घोषणा को वापस नहीं लेगा तब तक मेरा श्रमणसंघ से सबन्ध विच्छेद रहेगा, और मैं अपने संप्रदायगत नियमों का पालन करता रहूँगा गुरुदेव पवित्र संघठन के हामी थे। इस घोषणा का सानुकूल और प्रतिकूल दोनों तरह का असर दृष्टिगोचर हो रहा था।

भादसौड़ा ने प्रथम विहार कर मण्डपिया पहुँचे। संघ में आपसी मनमुटाव था। गुरुदेव के उपदेश से समाप्त हो गया और धर्मस्थान भी बना। यहाँ से चिन्कारहा, मौरवण, मगलवाड होते हुए सगसेरा पहुँचे। वहाँ भादसौड़ा का संघ दर्शनार्थ आ पहुँचा। पुनः सवारण भादसौड़ा, पधारना हुआ। यहाँ पधारने पर मुनि पुखगजजी की पाथर्डी बोर्ड की परीक्षा शुरू हो गई। पूर्ण होते ही विहार का विचार किया गया पर अचानक महागज श्री का स्वास्थ्य बिगड़ गया। साधारण उपचार के बाद स्वास्थ्य सुधर गया। बाद में विहार कर रामथली होते हुए सुरपुर पधारे। यहाँ महागज श्री के सदुपदेश से स्वर्गीय श्री गहरीलालजी को धर्मपत्नी ने अपना विशाल मकान समाज को वार्षिक दाय्य सम्पादनार्थ भेंट कर दिया था। गुरुदेव के हथियाना पधारने के पूर्व राशमी का चौमासा पूर्ण कर महासतीजी 'फेफकुंवरजी ठाना तीन' दर्शनार्थ पधारी। यहाँ पार्श्वजयन्ती मनाकर पाण्डोली पहुँचे। यहाँ लोगोंने बड़े उत्साह के साथ गुरुदेव का प्रवचन सुना। गुरु-

देव के उपदेश से देवकी मात ने १०० रुग्णोंका परोपकारार्थ काम में दान दिया । स्वामीय लोगों ने कांजी हाठस में परा को बन्धन करने का प्रतिष्ठा ग्रहण की ।

यहाँ से विहार कर सीबाहेरा पधारे । वहाँ कपासन का स प दर्शनार्थ आ पहुँचा । अत्यामह से कपासन पधारे । रूप भम ध्यान हुआ । लोगोने चौमामे की भी बिनती की किन्तु समय अधिक होने से गुरुदेवने स्वीकृति नहीं दी । यहाँ सम्प्रदाय मिश्रा की उद्योग पूम्य श्री गणेशीलाज्ञानी म० सा० का स्वग वास हो गया । व्याख्यान बन्द रखा गया । उनकी आत्मशान्ति के लिए चार लोगस का कार्योत्सग किया । बाजार बन्द रहे । शोक समा हुई । जिसमें पूम्य गणेशीलाज्ञानी म० सा० के प्रति अज्ञानलि व्यक्त करते हुए गुरुदेव ने फरमाया कि- पूम्य गणेशीलाज्ञानी म मा स्वानक वासी समाज के एक तेजस्वी पुरुष थे । जनत्राता थे । मूखे भठकों को सत्पथ पर लाते पब प्रदृशक व निर्देशक थे । उनकी साधना में पात्र मठा व वाणी में असूत था । उनके स्वग वास से जैन समाज को महान क्षति पहुँची है । शोकाज्ञलि के बाद गरीबों को भोजन, व वस्त्र बितरीत किये गये । दो सप्ताह तक यहाँ विराजने के बाद क्रमशः रूप पधारे । भम ध्यान व्यञ्जा हुआ । गुरु देव के उपदेश से भम ध्यान के निमित्त स्वानक के लिए ६००० का बन्दा हुआ । यहाँ से विहार के बाद गुरुदेव मठ वाद्य बूढ़ पहुँचे । आगामी वर्षीवास के लिए पद्मसीली ग गगर राबकरेया का स व बिनति के सिधे आया । महापद्म श्री ने फरमाया कि महावीर जयन्ती के अवसर परमे स्वीकृति प गा । मठवाद्य में देवी के स्वान पर घोर हिंसा होतीकी । स व इस हिंसा से बचा हुआ था । गुरुदेव के समक्ष पतद् विषयक

चर्चा की। इस पर गुरुदेव ने फरमाया कि यहाँ मेवाड़ी मुनि श्री चौथमलजी म० सा० का चौमासा हो जाय तो यह हिंसा बंद हो सकती है। ऐसा ही हुआ। चौथमलजी म० सा० के चातुर्मास से हिंसा बन्द हो गई। क्रमशः विहार कर बोरदा, गंगरार, मण्डपिया से हमीरगढ़ पधारे। वहाँ पंजाब मुनि श्री सत्येन्द्रजी ठाना चार से भेट हुई। अपरिचित होने पर भी उनका स्नेह अच्छा रहा। श्रमणसंघ के नियमों पर बातचीत होने होते ध्वनि बर्धक यत्र की भी चर्चा चल पड़ी। वे भी इस विधान को समय घातक मानते थे।

यहाँ से आमली, नैवरिया पहुँचे, होनी चौमासा बंद का किया। धर्मध्यान अच्छा हुआ। राशमी संघ के आग्रहसे गुरुदेव वहाँ पधारे। वहाँ तेरापथ संप्रदाय के आचार्य तुलसी भी अपनी शिष्य मण्डली के साथ पधारे थे। जैन मन्दिर के विशाल मैदान में हमारे प्रवचन होते थे। सभी जैन अजैन भाई बड़ी संख्या में व्याख्यान का लाभ उठाते थे।

गुरुदेव यहाँ से विहार कर पट्टना सोनीयाना, लारबोला होते हुए रामनवमी के दिन पोटला पधारे। घुटनों ने जवाब दे दिया था। कुछ लोगों ने गुड आवला पीने की सलाह दी। यह एक स्वाभाविक सत्य है कि जब किसी पर मुसीबत आती है तो बिना मागे सलाह देने वाले काफी मिल जाते हैं।

महावीर जयन्ती तक महाराज श्री पोटला ही विराजे। गंगरार, कपासन, अन्नमेर, राजाजी का करेडा, आदि नगरों में यह सवाद पहुँचा तो विनतियाँ आने लगीं। पोटला की महावीर जयन्ती शानदार रही। बाहर के लोग काफी संख्या में उपस्थित थे। अतत प्रकृति की स्थिति को ध्यान में रखकर



स्वयंभूत मुनि में आगामा भीमासा तय किया ।

स २ ९० का अन्तिम भीमासा राज करेडा—

पोटला न बिहार कर दिया संभ ने पुन महागङ्गी से प्रार्थना की कि यहाँ न बसें भ्रमेला खड़ा हो गया वा मिसे समझ-मुझ कर समाप्त करवाया । यित्रीहियों ने प्रपञ्च तो खूब किये, पर उनकी एक न चली । यहाँ स भीठावास कूरम, होते हुए महेला की पीपली पचारे । यहाँ एक विद्वान् ज्ञानमस्कार है । स कृत्य प्राकृत हिन्दी भाषि मायाभोका अन्धा साहित्य इसमें स प्रहित है । इतल्लिखित साहित्य भी इसमें है । इसके स वा एक कनैयालालजी सा० है । इस प्रन्थालय के प्रेरक वे मेवाड़ी मुनिभी चौबमल्लखो न सा । इनके रचित करीब पचीस प्रन्थों का यहाँ से प्रकाशन हुआ है । यह सत्वा स्वावलम्बी है अपने मित्री रूप से प्रन्थ का प्रकाशन करता है । यहाँ के प्रकाशित पुस्तकों का साधु साधियों ने अन्धा काम चढाया है ।

यहाँ से मोही पचारेते समय माग में मुनि भी लालच ल्खी न सा ठाना २ का समागम हुआ । गुरुद्व क स्नेह से आकषित हो वे भी पुन मोही गुरबेब के साथ पचारे । बड़ा स्नेहपूष् मिलान रहा । यहाँ साठ संतो का अन्धा अमपठ रहा अक्षय तृतीया के दिन प्रमु आदिनाथ का पारणा व तप पर बड़ा प्रभावशाली प्रपञ्चन हुआ । यहाँ से भोइन्दा होते हुए राजनगर पचारे । यहाँ तेरहपन्थी भाई, भी मुनिभा से पचा के लिये माय ये । गुरबेब के पैरों में यहाँ सूजन आई परपाल काकराला पचारेन पर बेदना कम हुई । माग में बिहार करते हुए कुबारियों पचारे । यहाँ औपधोपचार के बाद भी स्थिति जैसी की वैसी रही । यहाँ से बिहार कर कुररा

“ गलवा ” होते हुए काचरी पधारे, एक ही, रात्रि ठहरकर सुबह विहारकर गांव के बाहर निकले कि इतने में दूर से आवाज आई गुरुदेव की जय हो । यह आवाज कहाँ से ओर किधर से, मोटर से बाराता लोग, ( देवरिया से लग्न कर पलाना जा रही थी ) उममें कई गाँवों के श्रावक थे । मुख्य पलाना सघ था, बारातियों के आग्रह से पुन. ग्राम में पधारे । आगन्तुक बन्धुओंने व्याख्यान श्रवण किया, पश्चात् स्थानीय सघ का प्रेम बराती नहीं टाल सके-भोजन वागतियों ने वहीं पर किया । गुरुदेव की सेवा कर मांगलिक सुन, जय-ध्वनि करने हुए चले गये ।

दूसरे रोज सभी मुनिवर ‘ जोर ’ की जनता को प्रभु-वाणी का अमृतापान करा कर “ गोगला ” वहाँ भक्तियान सोहनलालजी सा के आग्रह को नहीं टाल सके । ग्राम की आम जनता पर धर्म की गहरी छाप लगी । वहाँ से “ खांखला ” धर्मस्थानक में ठहरे “ यहाँ की जैन जैनेतर जनता जिनवाणी श्रवण की उत्कण्ठा रखती । व्याख्यान में जनता भी बहुत सख्या में आती थी । आत्मोत्थान के अनेक त्याग प्रत्यारव्यान हुवे पोटला श्री सघ दर्शनार्थ आये और पुन पोटला पधारने के अत्याग्रह से गुरुदेव पोटला पधारे ॥ सहाबा क्षेत्र फरसने का आश्वासन सघ को दे रखा था । गुरुदेव का स्वास्थ्य दिनानुदिन गिरता जा रहा था । पर ज्ञान ध्यान में प्रवृत्ति बढ़ रही थी । शास्त्र स्वाध्याय में रत रहा करते थे । कभी-कभी ज्वर भी आजाता था । औषधि पर से अरुचि हो गई थी ।

विचार किया करते थे कि औषधियों के भरोसे शरीर को कबतक रखा जा सकता है । ज्वर में लंघन ही पथ्य होता

स्वयम्भूमि में आगामा चौमासा तब किया ।

स ० २० का अन्तिम चौमासा रास करेबा—

पोटका स विहार कर दिया संच ने पुन महाराजजी से प्रार्थना की कि यहाँ स चर्में भ्रमेला खड़ा हो गया बा जिसे समझ-सुझ क समाप्त करवाया । विद्वोहियों ने प्रपच तो लूब क्रिये, प इनकी एक न चले । यहाँ से जीसावाम कूरम, होते हुए मोहे की पीपलो पधारे । यहाँ एक विशाल ज्ञानमन्दिर है स लुट प्राकृत हिन्दी भादि भाषाओंका अष्टा साहित्य इस स महित है । इतलिकित साहित्य मा इसमें है । इसके स बा एक कनैयालाश्री सा० है । इस प्रम्बालय के प्रेरक थे मेवर्त मुनिमा चौबमलकी म सा । इनके रचित करंभ पचीस प्रंभ का पदा से प्रकाशन हुआ है । यह स र्वा स्वावलम्बी है अना निखी रूप से ग्रन्थ का प्रकाशन करती है । यहाँ के प्रकाशित पुस्तकों का साधु साध्वियों ने अष्टा लाभ उठवा है ।

यहाँ से मोही पधारते समय मार्ग में मुनि श्री लालच स्वामी म सा ठाना १ का समागम हुआ । गुरुदेव क स्त्रे से आकषित हो वे भी पुनः मोही गुरुदेव क साव पधारे बदा रतहपूछ मिलन रहा । यहाँ सात संतो का अष्टा जमपा रहा अष्टय तृतीया क दिन प्रभु भाविनाब का पारणा क त पर बदा प्रभावशाली प्रवचन हुआ । यहाँ स भोइम्बा होते हुए राजनगर पधारे । यहाँ तेरहपम्बी भाई, भी मुनिमा स चर्भ के सिये भाय थे । गुरुदेव के पैरों में यहाँ सूजन भाई परचन काकराली पधारने पर बेहता कम हुई । मार्ग में विहार करते हुए कुंभारियों पधारे । यहाँ जीपपोपधार के बाद भी स्थिति जीसी की सीसी रही । यहाँ से विहार कर कभरा

“ गलवा ” होते हुए काचरी पधारे, एक ही, गत्रि ठहरकर सुवह विहारकर गाव के बाहर निकले कि इतने में दूर से आवाज आई गुरुदेव की जय हो । यह आवाज कहाँ से ओर किधर से, मोटर से वाराता लोग, ( देवरिया से लग्न कर पलाना जा रही थी ) उममें कई गामों के श्रावक थे । मुख्य पलाना सघ था, वारातिओ के आग्रह से पुन ग्राम में पधारे । आगन्तुक बन्धुओंने व्याख्यान श्रवण किया, पश्चात् स्थानीय सघ का प्रेम वराती नहीं टाल सके-भोजन वागतियों ने वहीं पर किया । गुरुदेव की सेवा कर सांगलिक मुन, जय-ध्वनि करते हुए चले गये ।

दूसरे रोज सभी मुनिवर ‘ जोर ’ की जनता को प्रभु-वाणी का अमृतापान करा कर “ गोगला ” वहाँ भक्तियान सोहनलालजी सा. के आग्रह को नहीं टाल सके । ग्राम की आम जनता पर धर्म की गहरी छाप लगी । वहाँ से “ खांखला ” धर्मस्थानक में ठहरे “ यहाँ की जैन जैनेतर जनता जिनवाणी श्रवण की उत्कण्ठा रखती । व्याख्यान में जनता भी बहुत सख्या में आती थी । आत्मोत्थान के अनेक त्याग प्रत्यारन्धान हुवे पोटला श्री सघ दर्शनार्थ आये और पुन पोटला पधारने के अत्याग्रह से गुरुदेव पोटला पधारे ॥ सहाडा क्षेत्र फरसने का आश्वासन सघ को दे रखा था । गुरुदेव का स्वास्थ्य दिनानुदिन गिरता जा रहा था । पर ज्ञान ध्यान में प्रवृत्ति बढ रही थी । शास्त्र स्वाध्याय में रत रहा करते थे । कभी-कभी ज्वर भी आजाता था । औषधि पर से अरुचि हो गई थी ।

विचार किया करते थे कि औषधियों के भरोसे शरीर को कबतक रखा जा सकता है । ज्वर में ल'घन ही पथ्य होता

स्वयम्भूत मूमि में आगामा चौमासा तय किया ।

स १ २० का अन्तिम चौमासा राख करेबा-

पोटला म विहार कर दिया संघ ने पुन महाराजजी से प्रार्थना की कि यहाँ स पमें म्मेला सड़ा हो गया बा जिसे समझ-सुझ कर समाप्त करवाया । विद्रोहियों ने प्रपच तो खूब किये, पर उनकी एक म चली । यहाँ स सीतावास शूरज, होते हुए मरेबा की पीपली पघारे । यहाँ एक विशाल ज्ञानमण्डार है । स लुठ प्राकृत हिन्दी आदि भाषाओंका अच्छा साहित्य हमम स प्रहित है । इस्तलिखित साहित्य भा इसमें है । इसके स बा-लक कनैयालालजी सा० है । इस प्रन्धालय के प्रेरक बे मेवासी मुनिआ चौबमलबा म सा । इनक रचित करीब पचीस प्रन्थों का यहाँ से प्रकाशन हुआ है । यह स स्वा स्वावलम्बी है अपने निजो लभ से प्रन्थ का प्रकाशन करती है । यहाँ के प्रकाशित पुस्तकों का साधु साधियों ने अच्छा लाभ उठाया है ।

यहाँ से मोही पघारते समय माग में मुनि श्री लाजप म्जी म सा ठाना २ का समागम हुआ । गुरुदेव क स्नेह से आकषित हो ये भी पुन मोही गुरुदेव क साथ पघारे । बड़ा स्नेहपूर्ण मिलन रहा । यहाँ सात संतो का अच्छा जमपट रहा अक्षय तृतीया क दिन प्रभु आदिनाथ का पारखा ब तप पर बड़ा प्रभावशाली प्रवचन हुआ । यहाँ से भोइया होते हुए राजनगर पघारे । जहाँ गरहपन्थी भाई, भा मुनिआ म चर्चा क लिये आय थे । गुरुदेव के पैरों में यहाँ सूजन आइ परबान् कौकाला पघारन पर येवना कम हुई । माग में विहार करते हुए कुबारियाँ पघारे । यहाँ औपघोपचार के बार भी स्थिति वैसी की वैसी रही । यहाँ से विहार कर कमरा-

“गलबा” होते हुए काबरी पधारे, एक ही, रात्रि ठहरकर सुबह विहारकर गाव के बाहर निकले कि इतने में दूर से आवाज आई गुरुदेव की जय हो। यह आवाज कहाँ से और किधर से, मोटर से बाराती लोग, (देवरिया से लग्न कर पलाना जा रही थी) उसमें कई गामों के श्रावक थे। मुख्य पलाना सघ था, बारातियों के आग्रह से पुन ग्राम में पधारे। आगन्तुक बन्धुओंने व्याख्यान श्रवण किया, पश्चात् स्थानीय सघ का प्रेम बराती नहीं टाल सके-भोजन वागतियों ने वहीं पर किया। गुरुदेव की सेवा कर मांगलिक सुन, जय-ध्वनि करते हुए चले गये।

दूसरे रोज सभी मुनिवर ‘जोर’ की जनता को प्रभु-वाणी का अमृतापान करा कर “गोगला” वहाँ भक्तिवान सोहनलालजी सा के आग्रह को नहीं टाल सके। ग्राम की आम जनता पर धर्म की गहरी छाप लगी। वहाँ से “खांखला” धर्मस्थानक में ठहरे “यहाँ की जैन जैनेतर जनता जिनवाणी श्रवण की उत्कण्ठा रखती। व्याख्यान में जनता भी बहुत सख्या में आती थी। आत्मोत्थान के अनेक त्याग प्रत्याख्यान हुवे पोटला श्री सघ दर्शनार्थ आये और पुन पोटला पधारने के अत्याग्रह से गुरुदेव पोटला पधारे ॥ सहाड़ा क्षेत्र फरसने का आश्वासन सघ को दे रखा था। गुरुदेव का स्वास्थ्य दिनानुदिन गिरता जा रहा था। पर ज्ञान व्यान में प्रवृत्ति बढ़ रही थी। शास्त्र स्वाध्याय में रत रहा करते थे। कभी-कभी ज्वर भी आजाता था। औषधि पर से अरुचि हो गई थी।

विचार किया करते थे कि औषधियों के भरोसा शरीर को फवतक रखा जा सकता है। ज्वर में लघन ही पथ्य होता

स्वप्न मूमि में आगामा घीमासा तय किया ।

स २०२० का अन्तिम घीमासा राज करेडा-

पोटला म विहार कर दिया संघ ने पुन महाराष्ट्री से प्रार्थना की कि यहाँ स घमें भ्रमेला सदा हो गया वा जिसे समझ-मुग्ध कर समाप्त करवाया । वित्रोदियों ने प्रपंच तो लूच किये, पर जनकी एक न चली । यहाँ से जीठाबास कूरज, होते हुए मरेला की पीपली पचार । यहाँ एक विशाल ज्ञानमन्दार है । स लुप्त प्राकृत हिन्दी आदि मायामोंका अन्ध्रा साहित्य इसमें स महित है । इतलिकित साहित्य भा इसमें है । इसके स वा एक कनेयालालकी सा० है । इस मन्धासय के प्रेरक से मेवाड़ी मुनिजी चौबमल्लकी म सा । इनके रचित करीब पचीस ग्रन्थों का यहाँ से प्रकाशन हुआ है । यह स स्वावलम्बी है अपने मित्रों कच से ग्रन्थ का प्रकाशन करती है । यहाँ के प्रकाशित पुस्तकों का साधु साधियों ने अन्ध्रा लाभ उठाया है ।

यहाँ से मोही पचारते समय माग में मुनि जी लालक-न्धी म सा ठाना ३ का समागम हुआ । गुरुदेव क स्नेह से आकषित हो के मो पुनः मोही गुरुदेव क साथ पचारे । बड़ा स्नेहपूर्ण मिलन रहा । यहाँ सात संतो का अन्ध्रा जमपट रहा अक्षय एनीया क दिन प्रभु आदिनाथ का पारणा क उप पर बड़ा प्रभावशाली प्रवचन हुआ । यहाँ से थोड़्या होते हुए राजनगर पचारे । जहाँ ठेरहपन्थी भाई, मो मुनिभा से यहाँ क लिये भाये से । गुरुदेव के पैरों में यहाँ सूजन भाई परभाव काकरोला पचारने पर बेदना कम हुई । माग में विहार करते हुए कुवारिषी पचारे । यहाँ औपयोपचार के बाद भी स्थिति जैसी की तैसी रही । यहाँ से विहार कर कमरा

“गलवा” होते हुए कावरी पधारे, एक ही, रात्रि ठहरकर सुबह विहारकर गाव के बाहर निकले कि इतने में दूर से आवाज आई गुरुदेव की जय हो। यह आवाज कहाँ से ओर किधर से, मोटर से वारातो लोग, (देवरिया से लग्न कर पलाना जा रही थी) उममें केई गाओं के श्रावक थे। मुख्य पलाना सघ था, वारातिओं के आग्रह से पुन ग्राम में पधारे। आगन्तुक घन्धुओने व्याख्यान श्रवण किया, पश्चात् स्थानीय सघ का प्रेम वराती नहीं टाल सके-भोजन वारातियों ने वहीं पर किया। गुरुदेव की सेवा कर मांगलिक सुन, जय-ध्वनि करते हुए चले गये।

दूसरे रोज सभी मुनिवर ‘जोर’ की जनता को प्रभु-वाणी का अमृतापान करा कर “गोगला” वहाँ भक्तियान सोहनलालजी सा. के आग्रह को नहीं टाल सके। ग्राम की आम जनता पर धर्म की गहरी छाप लगी। वहाँ से “खांखला” धर्मस्थानक में ठहरे “यहाँ की जैन जैनेतर जनता जिनवाणी श्रवण की उत्कण्ठा रखती। व्याख्यान में जनता भी बहुत संख्या में आती थी। आत्मोत्थान के अनेक त्याग प्रत्यारव्यान हुवे पोटला श्री सघ दर्शनार्थ आये और पुन पोटला पधारने के अत्याग्रह से गुरुदेव पोटला पधारे ॥ सहाडा क्षेत्र फरसने का आश्रासन सघ को दे रखा था। गुरुदेव का स्वास्थ्य दिनानुदिन गिरता जा रहा था। पर ज्ञान व्यान में प्रवृत्ति बढ़ रही थी। शास्त्र स्वाध्याय में रत रहा करते थे। कभी-कभी ज्वर भी आजाता था। औषधि पर से अरुचि हो गई थी।

विचार किया करते थे कि औषधियों के भरोसे शरीर को कबतक रखा जा सकता है। ज्वर में लंघन ही पथ्य होता



स्वयम्भू भूमि में आगामा श्रीमामा तय किया ।

स १० का अन्तिम श्रीमासा राज करेगा—

पोटला में विहार कर दिया संध ने पुन' महाराजजी से प्रार्थना का कि यहाँ स धर्म म्मेला बढ़ा हो गया बा जिसे समझ-बुझ कर समाप्त करवाया । विद्वोहियों ने प्रपंच छो खूब किये, पर उनकी एक न चला । जहाँ न शीतावास कूरज, होते हुए महेला की पीपली पधारे । यहाँ एक विशाल ज्ञानमखार है । स कृत प्राकृत हिन्दी आदि भाषाओंका अच्छा साहित्य इसमें स महित है । इस्तखित्त साहित्य भा इसमें है । इसके स बा एक कनेयालाशही सा० है । इस प्रस्थापय के प्रेरक वे मेवाड़ी मुनिजी चौबमलका म सा । इनके रचित करीब पचीस ग्रन्थों का यहाँ से प्रकाशन हुआ है । यह स स्वा स्वावतम्बी है अपने निजी लक्ष सं ग्रन्थ का प्रकाशन करती है । यहाँ के प्रकाशित पुस्तकों का साधु साधियों ने अच्छा काम ठठाया है ।

यहाँ से मोही पधारते समय माग में मुनि जी लाम्प न्बी म सा ठाना ३ का समागम हुआ । गुरुदेव क स्नेह से आकषित हो वे भी पुन मोही गुरुदेव क साथ पधारे । बड़ा स्नेहपूय मिलन रहा । यहाँ साठ संतो का अच्छा बसपड रहा अच्छे वृतीमा के दिन प्रमु आदिनाथ का पारणा व ठप पर बड़ा प्रभावशाली प्रवचन हुआ । यहाँ से मोहन्या होते हुए राजनगर पधारे । जहाँ तेरहपन्वी आई, भी मुनिभा सं चर्चा के लिये आय थे । गुरुदेव के पैरों में यहाँ सजन आई परपात् श्रीकरोला पधारने पर बेचना कम हुई । माग में विहार करते हुए कुबारियों पधारे । यहाँ औपधोपचार के बाप भी स्थिति वैसी ही वैसी रही । यहाँ से विहार कर कम्मा

“ गलवा ” होते हुए कावरी पधारे, एक ही, रात्रि ठहरकर सुबह विहारकर गाव के बाहर निकले कि इतने में दूर से आवाज आई गुरुदेव की जय हो । यह आवाज कहाँ से ओर किधर से, मोटर से बारातो लोग, ( देवरिया से लग्न कर पलाना जा रही थी ) उसमें केई गामों के श्रावक थे । मुख्य पलाना स घ था, बारातियों के आग्रह से पुन ग्राम में पधारे । आगन्तुक बन्धुओंने व्याख्यान श्रवण किया, पश्चात् स्थानीय स घ का प्रेम बराती नहीं टाल सके-भोजन वारातियों ने वहीं पर किया । गुरुदेव की सेवा कर मागलिक सुन, जय-ध्वनि करते हुए चले गये ।

दूसरे रोज सभी मुनिवर ‘ जोर ’ की जनता को प्रभु-वाणी का अमृतापान करा कर “ गोगला ” वहाँ भक्तियान सोहनलालजी'सा. के आग्रह को नहीं टाल सके । ग्राम की आम जनता पर धर्म की गहरी छाप लगी । वहाँ से “ खांखला ” धर्मस्थानक में ठहरे “ यहाँ की जैन जैनेतर जनता जिनवाणी श्रवण की उत्कण्ठा रखती । व्याख्यान में जनता भी बहुत सख्या में आती थी । आत्मोत्थान के अनेक त्याग प्रत्यारव्यान हुवे पोटला श्री स घ दर्शनार्थ आये और पुन पोटला पधारने के अत्याग्रह से गुरुदेव पोटला पधारे ॥ सहाडा क्षेत्र फरसने का आश्वासन स घ को दे रखा था । गुरुदेव का स्वास्थ्य दिनानुदिन गिरता जा रहा था । पर ज्ञान ध्यान में प्रवृत्ति बढ़ रही थी । शास्त्र स्वाध्याय में रत रहा करते थे । कभी-कभी ज्वर भी आजाता था । औषधि पर से अरुचि हो गई थी ।

विचार किया करते थे कि औषधियों के भरोसे शरीर को कबतक रखा जा सकता है । ज्वर में ल'घन ही पथ्य होता

स्वयम्भूमि में आगामी चौमासा ठप किया ।

स २० का अंतिम चौमासा राज करेगा—

पोटला से विहार कर दिया संप ने पुन महाराजजी से प्रार्थना की कि यहाँ स पमें ममेला खड़ा हो गया था जिसे समझ बुझ कर समाप्त करवाया । चित्रोहियों ने प्रपंच तो खूब लिखे पर उनकी एक न खला । यहाँ से जीतावास कूरज, होते हुए महेला की पीपली पधार । यहाँ एक विशाल ज्ञानपट्टार है । स कृत प्राकृत हिन्दी आदि भाषाओंका अच्छा साहित्य इसमें स प्रहित है । इतल्लिलित साहित्य भी इसमें है । इसके स बा-लक कनैयालालजी सा० है । इस प्रख्यातय के प्रेरक से मेवाड़ी मुनिजी चौबमलजा स सा । इनके रचित करीब पचीस प्रन्नों का यहाँ से प्रकाशन हुआ है । यह स स्वा स्वावलम्बी है अपन लिखी खूब स प्रन्नों का प्रकाशन करती है । यहाँ क प्रकाशित पुस्तकों का साधु साध्वियों ने अच्छा काम उठाया है ।

यहाँ स मोही पधारते समय माग में मुनिजी लालख म्जी स सा ठाना २ का समागम हुआ । गुरुदेव क स्वदे से भाकपित हो से भी पुन मोही गुरुदेव क साथ पधारे । बड़ा स्नेहपूर्ण मिलन रहा । यहाँ साठ संतो का अच्छा कमबड रहा जस्य तृतीया के दिन प्रमु आदिनाथ का पारखा स ठप पर बड़ा प्रभावशाली प्रवचन हुआ । यहाँ से जोइन्वा होते हुए राजनगर पधारे । जहाँ तेरहपन्नी भाई, भी मुनिजी से यहाँ के लिखे आये थे । गुरुदेव के वैरों में यहाँ सूजन आई परपात काकरोला पधारने पर बेइना कम हुई । माग में विहार करते हुए कुबारियाँ पधारे । यहाँ जीपधोपचार के बाब भी स्थिति जैसी की वैसी रही । यहाँ से विहार कर कमरा

“गलबा” होते हुए काबरी पधारे, एक ही, रात्रि ठहरकर सुबह विहारकर गाव के बाहर निकले कि इतने में दूर से आवाज आई गुरुदेव की जय हो। यह आवाज कहाँ से ओर किधर से, मोटर से बाराती लोग, (देवरिया से लग्न कर पलाना जा रही थी) उसमें कई गामों के श्रावक थे। मुख्य पलाना सघ था, बारातियों के आग्रह से पुन ग्राम में पधारे। आगन्तुक बन्धुओंने व्याख्यान श्रवण किया, पश्चात् स्थानीय सघ का प्रेम बराती नहीं टाल सके-भोजन बारातियों ने वहीं पर किया। गुरुदेव की सेवा कर मांगलिक मुन, जय-ध्वनि करते हुए चले गये।

दूसरे गेज सभी मुनिवर ‘जोर’ की जनता को प्रभु-वाणी का अमृतापान करा कर “गोगला” वहाँ भक्तियान सोहनलालजी सा. के आग्रह को नहीं टाल सके। ग्राम की आम जनता पर धर्म की गहरी छाप लगी। वहाँ से “खाखला” धर्मस्थानक में ठहरे “यहाँ की जैन जैनेतर जनता जिनवाणी श्रवण की उत्कण्ठा रखती। व्याख्यान में जनता भी बहुत सख्या में आती थी। आत्मोत्थान के अनेक त्याग प्रत्यारव्यान हुवे पोटला श्री सघ दर्शनार्थ आये और पुन पोटला पधारने के अत्याग्रह से गुरुदेव पोटला पधारे ॥ सहाडा क्षेत्र फरसने का आश्रासन सघ को दे रखा था। गुरुदेव का स्वास्थ्य दिनानुदिन गिरता जा रहा था। पर ज्ञान ध्यान में प्रवृत्ति बढ़ रही थी। शास्त्र स्वाध्याय में रत रहा करते थे। कभी-कभी ज्वर भी आजाता था। औषधि पर से अरुचि हो गई थी।

विचार किया करते थे कि औषधियों के भरोसे शरीर को कबतक रखा जा सकता है। ज्वर में लंघन ही पथ्य होता

है। आप कितनी बार उपवास-आयबिल तप किया करते,। अष्ट शुक्ला दूसरी एकादशी सोमवार को सहाड़ा बिहार कर भी 'हरलालाजी के नौहरे में बिराजे। दुपहर को प्रबचन दिया। वारस म गजवार को स्वयं गोबरी पचारे। आहार नहीं किया। इस पर हमारे अत्यन्त आपस से साथ काम में मात्र आहार के दो प्राम प्रहण कर कहा-अब मैं आहार नहीं करूंगा। इसप्रकार तीन बार कह गये, किन्तु हमलोग आत्मावी मुनिकी आन्तरिक भावना को नहीं समक सके कि गुरुवर्य का यही अन्तिम आहार होगा।

स्वयं मौनत्व हो स्वाभ्यास में लक्ष्मीन हो गये। १३ बुधवार को आहार के लिए जब हम मुनियोंने आपस किया दो-बचर में फरमाया मुझे पीविहार उपवास है। स्वाभ्यास के बाद प्राम में वृद्ध और कारयिक भावक भाविकार्यों को भांगलिक सुनाने को गये। सभी को साभित से रहने का आदेश दिया और साव २ जमा साचना भी करते रहे। शेष समय स्वाभ्यास में व्यतीत किया। शामको प्रतिक्रमण के बाद गुरुदेवन मुझे व्याख्यान सुमाने का आदेश दिया, मैं व्याख्यान बन भात्रकों के बीच बला गया। कुछ व्यक्ति महाराज भी की सभा में थे। उन सब को धर्मोपदेश देते रहे। आत्मा का साथी एक धम है कुछ धम ही आत्मा को मोह में लेवाने वाला है। अल्प उमर में, किसी के साथ किसी भा प्रकार से होप-श्रोह और कटुवाणा का व्यवहार नहीं करना। उस बजे के बाद सभी भाई अपने अपने पर गये रात्रो में आनंद स शयन किया। रात्री को बेह बद्र गुरुदेव ने म द स्वर स मुक आवाजदी। मैं नमीप ही साथे हुआ बा-धेरन जगकर गुरुदेव की सभा में तथा हुआ भीर देला तो महाराज भी का प्रभर (पसीना) हो रहा। बत्र बदल कर वे शीतल स्थान पर चल

कर आगये । आराम किया । रात्री के तीन बजे के समय मुझसे दशवैकालिक सूत्र के प्राग्भ के चार अध्याय और भक्ता-मर स्तोत्र सुना । रायमी प्रतिक्रमण कर स्वयं ने प्रत्याख्यान किया और अन्य मुनियों को भी करवाया और क्षमा याचना की । आवाज में मदना-बहरे पर चमक, महाराज श्री की व्याधि बढ़ती जा रही थी, पर आत्म-सयन इतना था कि एक ही वाक्य मुख से निकलता था । “शान्ति” ३ ॥

किन्तु वेदनीय कर्मका प्रभाव बढ़ रहा था । सूर्योदय होते होते वेदना ने गभीर रूप धारण किया, वाइयों भाइयों का ताता बढ़ने लगा । सबको दया पाने का आदेश देते रहे ।

गुरुमहाराज श्री से मैंने पूछा कि किसी को बुलाना मिलना चाहते हैं ? जबकि मिला नहीं । हाँ मुनि अम्बालालजी को कहला दो कि मिलले । स्थानिय संघने आदमी को तुरंत कपासन रवाना किया । इधर देह में कपन शुरू हुआ । पर मुखसे शान्ती-शान्ती-३ शब्द निकलता ही रहा । स्थानिय कम्पांडर ने गुरुवर की स्थिति को देखकर कहा यहाँ बड़ा डाक्टर की आवश्यकता है । श्रावक सघ बहुत व्याकूल हो रहा था । वह भीलवाड़ा डाक्टर को लिवाने जा रहा था, पर महाराज श्री ने मदस्वर से फरमायाकि “मतलावो” साथही मैं कहा कि दो मुनिवर आरहे हैं । यह सुनकर हम सब विचार में पड़ गये कि-अभी आसपास कोई मुनिवर का आगमन नहीं जाना कहा से आवेगे ? फिर मुझसे कहने लगे पौगधी आ गई, छोटे मुनियों को आदेश दिया कि गौचरी लावो । मैंने पूछा आज आपके उपवास का पारणा है । आप के लिये कुछ आज्ञा हो वही लादूँ नही ३ मुनि गौचरी से आये हीथे कि ऋट गुरुदेवने फरमाया कि सड़क पर दो मुनि आगये । इतने

में दोनों मुनि पधार गये । सामान्य सुख माता पूछने के बाद गुरुदेव ने फरमाया कि आहार पानी से शीघ्र निपटसो । हम सब मुनिवर आहार पानी करके गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हो गये ।

गुरुदेवने पूछा-क्या आप लोगों का आहार पानी हो गया ? मैंने कहा-हाँ । गुरुदेवने कहा-“भव गरी शारीरिक स्थिति प्रीयन ए अस्मिन् वृणु जैसी हैं । पावग्रीवन संभार महल करने की भेरी भावना है । डाक्टर को जाने की जरूरत नहीं मुनिवर आ रहे हैं ।” इन वाक्यों से ऐसा माकूम होता था कि गुरुदेव को विशिष्ट ज्ञान हो गया है । वे अपनी वेदना को बचा रहें थे । वे निर्मोही लगते थे । वे सम वम की उत्पन्न भावना में तल्लीन हो रहे थे । उन्होंने बार मंगल की शरणा में अपनी आत्मा का समर्पण कर दिया था ।

गुरुदेव की बहृष्ट भाषना-एवं उनकी शारीरिक स्थिति को दृष्टकर प्रा. १० बजकर उपर कुछ मिनट को प्रगट सभारा पचकन्वा दिया । मुख पर क्षेत्र चमक रहा था । उस समय वे स्वागमृति शरभाम मार्ग में लग रहे थे । मोह ममता और विषाद का तो चिह्न भा दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था । उनके मुख से निरन्तर “बार शरण्य” की ध्वनि निकलती थी ।

एक महामुनि के मधारे का मबाध चारों ओर शीघ्र ही विगुलवन् फैल गया । सौभाग्य मुनि ने “परमावती” की मधमाय सुनाना शुरू किया, साथ ही स्वयं “मिच्छामि दुःखम्” वाक्य गये । पीडा प्रतिपन्न बढ़ती ही आ रही थी । पर कमक मुख पर मौम्य भाव ही झलक रहा था । चार शरणों में ध्यान बना रहा दिन को (१) बज ३५ मिनट पर आँसु मुक्ती की मुक्ती रद गई ।

सभी को छोड़ चले ।

संसार से एक महानविभूति उठ गई । जो एक समय धर्मोद्योत के लिए—सदा सतत प्रयत्नशील रहता था । वह सूर्य आज सदा के लिये अस्ताचल की गहन गुहा में प्रविष्ट हो गया । गुरुदेव का वियोग, शिष्य-गण के लिये असह्य हो गया । सहाडा सच ने आवश्यक साधनों द्वारा सर्वत्र यह सवाद बड़े दुःख के साथ पहुँचाया । शव यात्रा की तैयारियाँ होने लगी । जिसे जैसा भी वाहन मिला उसे लेकर सब का प्रवाह सहाडा की ओर मुड़ गया । सुन्दर पालखी मूल्यवान वस्त्रों से सुसज्जित करवाई गई । अहमदाबाद से महाराज श्री के सांसारिक भाई श्री प्यारचन्दजी सा सचेती भी ऐन समय पर आ पहुँचे । अनक भजन मण्डलिये, वाद्य आदि के साथ शवयात्रा प्रारंभ हुई । शव पर सैकड़ों रूपये उछाले गये । मदगति से नगर के मुख्य रभागों पर होती हुई स्मशान में पहुँची । शरीर के वस्त्र लेने के लिये हजारों व्यक्ति दूट पडे । ऐसी थी श्रद्धा उनके प्रति । ठीक बारह बजे चन्दन, श्रीफल, आदि मूल्यवान पदार्थों से महाराज श्री का द्वाह सस्कार किया गया ।

सच की आँखों में श्रावणभादों की ऋद्धियाँ लगी हुई थी । सचमुच सामान्य जन का भी वियोग अखरने लगता है तो फिर परोपकारी के बिछोह से कौन पापाण हृदय न पसी जेगा ? अग्नि की तेजस्विता पूर्ण चिनगारियों ने देह को भस्मीभूत कर दिया ।

स्मशान से आकर तहमील कचहरी के सामने शोक सभा का आयोजन किया गया । सर्व प्रथम पुष्कर मुनिन अपनी भावभरी श्रद्धाजली अर्पित की । हृदय विदारक कविता पढी ।



श्री सौभाग्य मुनि ने उनका आद्य त जीवन काव्यद्वारा सुनाया ।  
अन्य ब्रह्मर्षी न भी गुरुदेव के प्रति शोक प्रदर्शित किया।  
आत्म शान्ति के लिए ध्यान आदि के बाव ममा विसत्रित  
हो गई ।

### गुरु स्वीकृति खान पर ही चातुर्मास

मेरे सामने समस्या खड़ी हो गई कि चौमासा कहा किया  
जाय ? कारण कि गुरुमहाराज तो इसके एक माह पूर्व ही  
पक्ष पडे । उनका अधूरा काम पूरा करने का दायित्व मेरे  
पर आ पडा । राजकरेबा स घ का आग्रह था कि जब महाराजभी  
चौमासा राजकरबा करने का क्रमाया था तो आपका प्रथम  
कृतव्य है कि बही पधार कर हमें छुटाव करे । मैंने बही  
किया । इस अवसर पर सौभाग्यमुनि का एक महान मुनि का  
बो सहयोग मिला वह अविस्मरणीय रहेगा ।

\* मेवाड, नारबाड, मासवा गुजरात, महाराष्ट्र आदि के  
स घो ने गोक समाप्य कर महाराज भी के प्रति अपना भक्ति  
भाव व्यक्त किया ।

जिन महानुभावों ने सन्तो सतियों एवं आचार्यों ने  
गुरुविपोग में सत्त मेरे हृदय को सात्वना मरे सन्देश भेज  
कर एक पूर्य गुरुवय के प्रति बडा के सुमन प्रेषित कर जो  
मुझे अनुपहित किया है उन सब को मैं हृदय से आमार  
प्रकट करता हूँ ।

## ❀ जीवन के विशिष्ट प्रसंग ❀

### (१) आत्मदृढता :-

❀ ग्रीष्म की धूप पूरे वेग से तप रही थी। चैत्र का महिना था। हमारे चरित्रनायक मुनिवर श्री मागीलालजी म० सा० एक ग्राम के पुरातन गृह में ठहरे हुए थे। गरमी के कारण जन्तुओं का उपद्रव स्वाभाविक ही रहता है। रात्रि के प्रथम प्रहर में मुनि श्री के पैर की अंगुली पर एक विषैले जन्तुने डम लिया, और पैर सूज गया पर घन्ट्य है वह मुनिवर कि जिसने उफ तक नहीं किया, प्रत्युत वह तो और भी आत्मध्यान में लीन हो गये। प्रातः काल मुनियों ने अंगुली पर रक्त जमा हुआ देखकर पूछा कि यह क्या मागला है। तब कही सारी हकीकत बताई। इस प्रकार की आत्मदृढता ही जीवन को सुवामित कर सकती है।

## (२) चौर मी चुपचाप चले गये

● लष्कर और आगरा का प्रातः हाकुओं से घिरा रहता है। माग में एकाकि कोई निकल जाय तो सैर नहीं। गुरुदेव लष्कर में आगरा की ओर प्रतिवत हुए। शाम को बिहार कर किसी प्रातः आ रहे थे। माग में ही दिन छिपने लगा। सबके के समीप ही कुछ भोंपड़े दिखालाई पड़े। एक विशाल कुएँ के निम्न भाग में चबूतरा बना या वही पर रात्रि विभाम के लिये रुक गये। प्रतिष्मणानतर शयन किया। चान्दनी रात था। चन्द्रमा अपना स्वच्छ सौंदर्य बिलोर रहा था। मधु मुनि निद्रास्थी का गोद में थे। एकाएक उपकरखों पर किसी का हाव पड़ा। गुरु महाराज की निद्रा उठी। 'ओशम शांति' कह कर बिना किसी मय के उठे हो गये। वहाँ देखते हैं तो विभाज्य काम बलिष्ठ व्यक्ति उपस्थित हैं उनमें से एक न सहमत हुए पूजा तुम क्यों हो ? अबाव में कहा हम सैनमुनि हैं।

चौर-तुमारे पास क्या क्या है ?

गुरुदेव-हमारे पास भिक्षा के काष्ठ पात्र हैं

चौर-रूपये पैस कितने हैं। भीर कहा है ?

गुरुदेव-हमार पास रूपये कहा ? हम तो मांगकर भोजन खाते हैं। चारों न आपस में कहा अन्धा ही हुआ कि लहू नहीं मार बना बेचारे बच्चार हो मार जाते। चारों न महाराज को नमस्कार कर कहा कि आप अथ आनन्द स सोइय। कह कर भाग बढ़ गये।

### (३) श्रद्धा का स्रोत

❁ एक श्रीसम्पन्न व्यापारी ने विदेश में स्वश्रम से पर्याप्त राशि एकत्र कर जन्म भूमि में भव्य और नव्य भवन बनवाया। सभी प्रकार से सुखी होने के बावजूद भी सन्तानाभाव से दंपति परिवार का जीवन संतुष्ट नहीं था। भला पुत्र की कामना किसे नहीं होती। महात्माओं के प्रसाद से एक पुत्र रत्न का जन्म हुआ। कुछ काल पश्चात् ही रूग्ण हो गया। इस बीच गुरुवर श्री मागीलालजी म सा का उस ग्राम में पधारना हुआ, शेट साहब के नव्यनिर्मित प्रसाद के ऊपर के भाग में विराज गये। प्रात ही नीचे से रुदन के स्वर आने लगे, पूछा क्या बात है ? ज्ञात हुआ कि बालक का अवसान हो गया है। गुरुवर नीचे पधारे और बालक का शरीर देखकर कुछ सुनाया, तत्काल बालक ने आँखे खोली, माता पिता तो हर्ष से गद्गद् हो उठे। महाराज श्री ने फरमाया कि धर्म पर आस्था रखो। सब ठीक होगा। महाराजश्री की कृपा का ही परिणाम था कि विषाद हर्ष के रूप में बदल गया।

### (४) स्नेह—स्रोतस्त्रिनी

❁ यह माना हुआ सत्य है कि एक की सज्जनता दूसरे में विनम्रता पैदा कर देती है। गुरु महाराज इस प्रकार की कला में माहिर थे। जहाँ झमेला बढ़ रहा हो, वहाँ यदि इनके चरण पड जाय तो सघटन अवश्यभावी है। जो व्यक्ति तदस्यवृत्ति से

रहता है उसका स्वामाधिक प्रभाव जन हृदय पर पड़ता ही है। जीवन में अहिंसा की जड़ों प्रतिष्ठा होती है वहाँ वैर विरोध स्वतः नष्ट हो कर स्नेह की सरिता प्रवाहित होन लगती है। महाराज भी के जीवन में ऐस एक नहीं अनेक प्रसंग मौजूद हैं। जहाँ वह पधारे और वहाँ ममेला रहता उस तत्काल मिटान में जुट जात। साधु का काम भी वही है जहाँ के भी का साम्राज्य हो उसे सूझ के रूप में बवल दे। एक प्रसंग जहाँ गुरु महाराज के जीवन का स्मरण हो आता है।

एक समय गर महाराज भी पांच भील बल कर पधारे उसी गाँव में दो भर्मत्थ बन्धु रहते थे। दोनों में आपसी स्नेह बढ बढ कर था पर आर्थिक प्रश्न ऐसी बरतु है कि बिभेन उत्पन्न कर देती है। गुरुदेव ने किमी दैनेतर बन्धु से पूछा कि वे दोनों बन्धु कहा गये हैं ? उसने वसे स्वर में कहा कि उन दोनों में भूमि विषयक संघर्ष चल रहा है। संभव है आज प्येदारी तक मामला पहुँच जाय। क्यों कि काका मदीजा आज जाठियों और घातक राज्यों से लैस होकर लोत पर गये हैं। या जाने ही वाले हैं। गुरु महाराज सीधे उनके घर पर ही गये गौचरी के लिये। एक भाई वहाँ मौजूद था। सुनने पर दूसरा भी आ पहुँचा। दोनों गुरुदेव के प्रति पूर्ण आत्मावात्सल्य। दोनों ने आहार की माखना भाई। महाराज भी न कहा कि क्या बहराभोगे ? दोनों ने कहा जो आप चाहो। सब तैयार है। महाराज भी ने लक्ष्मर देख कर कहा कि मैं तो एक ही बात चाहता हूँ कि आप दोनों को एक ही बाज में भोजन करवावेस्तु, दोनों बिचार में पढ गये कि गुरु महाराज ने गन्धक कर दिया। पर क्या किया आप अब उनके आदेश हो गया तो उस टाला भी लैने आ सकता है। क्यों तो दोनों में

फौजदारी की तैयारियाँ हो रही थी और कहा यह स्थिति की दोनों में स्नेह सरिता प्रवाहित होने लगी। जब बात सारे चौखले में फैली तो लोग प्रभावित हुए और गुरु महाराज के प्रभाव की प्रशंसा करने लगे। ऐसा था उनका गम्भीर व्यक्तित्व।

### (५) संत रत व्यक्तित्व :-

ॐ ग्रीष्मऋतु, जेष्ठ का महीना और राजस्थान की धरती, चारों ओर से लू साय साय चल रही है। दिन का दूमरा प्रहर। सत मधुकरी लाने को तैयार हो रहे हैं। आठ सन्त थे। सबके नायक गुरुवर्य ही थे। अत्यन्त उष्णता के कारण सन्तों की मांग थी कि कहीं से तक्र का प्रबन्ध हो। जहाँ विश्राम किया था उस नगर में तक्र का मिलना दुर्लभ था। इसपर गुरुवर श्री स्वयं भोली पात्रा लेकर तैयार हुए। वह चाहते थे कि सन्तों की आशा पूर्ण होनी ही चाहिये। गुरुवर वृकती धूप में दो मील पर गये जहाँ एक गाँव था जिसमें जैनों की काफी संख्या थी। दो विशाल पात्र भरकर तक्र ले आये। सन्तों ने आश्चर्य व्यक्त किया। यह थी उनकी सन्त सेवा।

### (६) पद मोह से मुक्त :-

ॐ राजस्थान में स्थानकवासी संप्रदाय अत्यन्त प्रसिद्ध संप्रदाय है। इसमें मेवाड़-संप्रदाय त्याग तपश्चर्या और जिनागमानु-कूल समय पालने में अति विख्यात है। स्वर्गीय जैनाचार्य पृ० श्रीएकलि गदासजी म० मा० के पट्ट पर पृ० (१) मोतीलालजी म०

\* (१) सपहेतू मादड़ी (मारवाड़) में पूज्यपद ने पृथक् बने।

सा० के उत्तराधिकारी गुरुवर्य श्री मांगीलालजी म० सा० युवाधाय पद पर अभिषिक्त थे। साधारण व्यक्ति का पद में भले ही महत्व बढ़ता हो, पर जिसका पुरुषार्थ महान् और बिक्रमी परम्परा का प्रतीक होता है उससे पद का वैशिष्ट्य अभिवृद्धि को प्राप्त होता है। महाराजजी भी पद के अभिषिक्त थे। पर आपने जैनधर्म का महत्व बढ़ाने के हेतु पद जति 'युवाधाय' का पद-त्याग कर दिया। केवल इतना ही नहीं पर भविष्य के लिये भी निष्पत्ति किया कि मैं कोई पद ग्रहण नहीं करूँगा। जबकि आज हम इसके विपरीत देखते हैं कि मुनिलोग पद प्राप्ति के लिये कितना प्रयत्न करते हैं। मर्जों को ममग्रते हैं। फिर भी वाञ्छित पद प्राप्त नहीं होता। महाराज जी का यह "पद" त्याग एक आदर्श काम था।

### (७) आमूषण वापस रख गया :-

♥ वागपुत्र चातुर्मास के समय कोठारीजी के दरिद्राने में महाराजजी विराडत थे। कुछ दूरी पर एक तेली का घर था। शीपाबली के दिन तैलनने अपने पाँची के आमूषणों की पेटी संभाली तो सब गायब पाये। यह जोरी कब हुई थी? कहना कठिन था। पति पत्नी का हाल बहुत ही बुरा था। बीजम भी कमाई इस प्रकार नष्ट होते देख वे इतने दुःखी हो बैठे थे कि खानापीना हराम हो गया था। हरय कह्याअनक था। कोई कहता था कि पुलिस में रिपोर्ट करो। जैसे जो बंधे सलाह देता था। मुसीबत जाया आदमी केवल सहाह या सहानुमति ही नहीं चाहता वह चाहता है सहयोग। सहाह में काम नहीं बनता। सहानुमति से सम्बोध नहीं मिलता। पर जनप्रवाह को कौन रोक सकता है।

दुखी मनुष्यों को सन्तों की सेवा में ही आसरा मिलता है। तेली दिन भर भटकता रहा, पर समस्या नहीं सुलभते देख कर पूज्य गुरुवर्य श्री के समीप आया और अपनी दुर्दशा का वर्णन किया। महाराजश्रीने कहा भाई! हम तो साधु हैं। किसी ज्योतिषी को पकड़ो, वह कुछ बता सकता है। पर तेली तो श्रद्धा सजोकर आया था, बोला मुझे आपके दर्शन से ही शान्ति मिली है। मेरी सपत्नी भी मिन ही जायगी। श्रद्धा फनती है। महाराज का कहना था कि क्या काम करते हो? खान पान कैसा है? मदिरा मास का सेवन तो नहीं करते? तेली ने सबकुछ स्वीकार किया। महाराजश्रीने फरमाया कि भाई! अभक्ष्य सेवन करने से धर्म नष्ट होता है, वृत्तियाँ विकृत होती हैं और मानसिक शान्ति समाप्त हो जाती है। अतः इसका परित्याग करो और धर्म पर श्रद्धा रखो, सबकुछ ठीक होगा। इसे सौगन्ध करा दिया गया। वह धन्य हो गया। भाग्य सयोग में वह रात्रि को अपने घर के बाहर द्वार पर क्या देखता है। एक नूतन लाल वस्त्र में पोटली पड़ी हुई है। पहिले तो वह ग्रामीण सरकारों के कारण डरा कि यह टोटका मुझपर किसन किया है? काफी लोगों को एकत्र कर लिया। किसी का साहस नहीं होता था कि पोटली को स्पर्श करे। पर एक नौजवानने हिम्मत कर के उसे उठाया तो भारी प्रतीत हुआ। खोलने पर तेली के भाग खुल गये। इसी में उसके चादी के समस्त आभूषण यथावत् सुरक्षित थे। अपनी रकम पाकर सीधा गुरु महाराज के पास आ पहुँचा और उनके दर्शन के चमत्कार का वखान करने लगा, महाराजश्री मौन, सुनते रहे, क्या कहते, पर तेली तो इस पवित्रात्मा के सपर्क से जैनधर्म और सत्तों का सदा के लिये सेवक बन गया।





साधु सती ने शूरमा कानी और गजदंत । ( )  
 एसा पीछा ना फिरे जो जुग बाय बनत ॥

नानाजी ! आप कई मोक्षी बाटा करो हो ? आप जब  
 तो बाना वेई गित्था हो, संयम से खिराबो, हूँ आपरी सेवा  
 करूँगा । ठंड तो इर साला आवे है और आवे है पर साधु  
 पणो तो पुस्य जाग सू ही उदय आवे है । ' बयोवद नानाजी  
 बालमुनि का उत्तर सुनकर अषाक् रह गये ।

(९) हां ठंड तो पड़ा ही करती है :-

❁ यह सर्वथा स्वाभाविक है जैसे आन्तरिक विचार होते हैं वैसे ही तर्क बन जाते हैं। साधना के सघन पथ पर विचरण करनेवाला प्रबुद्ध साधक आनेवाले सकटों की चिन्ता नहीं करता। वह तो लक्ष्य की ओर सतत गतिमान रहता है। उसे ससार की कोई शक्ति आत्मपथ से विचलित नहीं कर सकती। सासारिक कष्ट को वह कष्ट समझता ही नहीं है। जीवन वही जो कटों में पले। महाराज श्री के जीवन पर यह पक्ति सोलह आना चरितार्थ होती है। एक घटना को उपेक्षित नहीं रखा जा सकता है।

आपकी वय लगभग बारह वर्ष की थी। दीक्षा लिये स्वल्प समय ही हुआ था परम पूज्य गुरुमहाराज श्री के साथ बालमुनि मागीलालजी म० विचरण करते हुए ननिहाल के गाँव पोटला पहुँचे। माघ का महीना था। शीत अपनी मूल स्थिति का पूरे वेग से परिचय दे रही थी। हड्डी फोड़ देनेवाली ठंड से शरीर काप उठता था। सन्त जीवन ठहरा, परिषह का महन ही सयमशील जीवन का आभूषण होता है। सन्त एक खपरौल के मकान में ठहरे हुए थे। छिद्रों से छन छन कर शीत की लहर मकान में आ रही थी। इतने में मुनि मागीलालजी म० का के नानाजी श्री अमरचन्दजी रात्रि को दर्शनार्थ पधारे। काप रहे थे। अपने दोयते (मुनि) को वात्सल्यवश कहने लगे कि 'ठंड घणी पड़े है, माथा पर हाऊ ओड लो, परो ठरेगा। पाञ्चो आपने घरे परो चाल, थने आछो राखूँगा, इतना सुनकर बाल मुनि ने अपनी सयम सय वृत्तिका परिचय देते हुए नानाजी को स्पष्ट कहा कि-

## (८) याचना परिपह की सीमा

मध्यप्रदेश पधारते समय महाराजजी एक समय मोपाल मध्य भारत क निकट एक लघु ग्राम की धर्मशाला में ठहरे थे । वहाँ लगभग समीप अर्जनों के ही थे । अकस्मात् सूँठ पीसने के लिये एक लोड़ी (पत्थर) का आवश्यकता पड़ गई । मध्याह्न का समय था । गुरु महाराज स्वयं एक बिराज और सपन्नमदन के द्वार पर पहुँच, ताकि सरलता से पापाख मिल जाय, पर वहाँ ठा गजब हो गया क्यों ही महाराजने मध्य भवन में चरण रख ल्यो ही वहाँ बैठी हुई बाई भयभीत होकर चिल्लाने लगी कि “ बौद्धो बौद्धो बाऊू वा गया गुरुदेव किंकर्तव्य विमूढ बही खड़े हो गये । इबर बनता एकत्र हो गई । पाठक अनुमान लगा सकते हैं कि ऐसे धनमरों पर कतता मात्र विवेक लो बैठती है । पर गुरु महाराज की सीम्ता देखते ही बनता का धायेस लम्बित हो गया । महाराजने मधुर बायी में फरमाया कि मैं तो बिन माधु हूँ । सूँठ पीसने के लिये लोड़ी लेने आया था इतने में बाईने इरजा मचा दिया । यदि वह लोड़ी इ तो ठीक है अथवा दूसरे घर पाचन करेगी । उपरिष्ठ जनममुद्रायन बाई को समझया कि यह तो बिनमुनि हैं किमी भी प्रायो को कष्ट नही हते । बाई बहुत हो लज्जीत हुई । और जमा पाचना करने लगी । और आहार पानी का भाव रख्य ।

प्रतिकूल परिस्थिति में भी गुरु महाराज मानसिक समु ज्ञान बनाये रखते थे ।

(९) हां ठंड तो पड़ा ही करती है :-

❁ यह सर्वथा स्वाभाविक है जैसे आन्तर्गिक विचार होते हैं वैसे ही तर्क बन जाते हैं। साधना के सघन पथ पर विचरण करनेवाला प्रबुद्ध साधक आनेवाले सकटों की चिन्ता नहीं करता। वह तो लक्ष्य की ओर सतत गतिमान रहता है। उसे ससार की कोई शक्ति आत्मपथ से विचलित नहीं कर सकती। सासारिक कष्ट को वह कष्ट समझता ही नहीं है। जीवन वही जो कटों में पले। महाराज श्री के जीवन पर यह पक्ति सोलह आना चरितार्थ होती है। एक घटना को उपेक्षित नहीं रखा जा सकता है।

आपकी वय लगभग बारह वर्ष की थी। दीक्षा लिये स्वल्प समय ही हुआ था परम पूज्य गुरुमहाराज श्री के साथ बालमुनि मागीलालजी म० विचरण करते हुए ननिहाल के गाँव पोटला पहुँचे। माघ का महीना था। शीत अपनी मूल स्थिति का पूरे वेग से परिचय दे रही थी। हड्डी फोड़ देनेवाली ठंड से शरीर काप उठता था। सन्त जीवन ठहरा, परिषह का सहन ही सयमशील जीवन का आभूषण होता है। सन्त एक खपरौल के मकान में ठहरे हुए थे। छिद्रों से छन छन कर शीत की लहर मकान में आ रही थी। इतने में मुनि मागीलालजी म सा के नानाजी श्री अमरचन्दजी रात्रि को दर्शनार्थ पधारे। काप रहे थे। अपने दोयते (मुनि) को वात्सल्यवश कहने लगे कि 'ठंड घणी पड़े है, माथा पर हाऊ ओढ लो, परो ठरेगा। पाओ आपने घरे परो चाल, थने आओ राखूँ गा, इतना सुनकर बाल मुनि ने अपनी सयम मय वृत्तिका परिचय देते हुए नानाजी को स्पष्ट कहा कि-

साधु सती ने शूरमा खानी और गजबंद ।

पता पोछा ना फिरे ओ जुग बाय अनत ॥

नानाजी ! आप कई मोली बाता करो हो ? आप अब तो शाना बेह गिया हो, संयम छे लिखावो, हूँ आपरी सेवा करूँगा । ठंड तो हर साल आवे है और आवे है पर माधुपणो तो पुन्य बाग सू ही उदय आवे है । 'वयोवय नानाजी बालमुनि का उत्तर सुनकर अषाक रह गये ।





# गुरुगुण यशोगान



वि  
वि भा ग  
ग

दसरा



अनेक कवियों के उद्गार  
अगले पृष्ठों पर  
॥ पढ़िए ॥





—पुत्राचार्यपदालंछ्य मुनि भी मांगीलालम्

★

★

रचयिता—पूज्य भी घासीलालजी महाराज

[ मुञ्ज प्रयातम् ]

यदीया च दीप्ता सदा जीवरक्षा,  
यदीया मुञ्जिणा च कल्याणदत्ता ।  
सदा वर्तने धर्मरक्षस्तु यस्तं,  
मञ्ज्वं मञ्ज्वं मुनिं मांगिलालम् ॥

॥ - ॥ ॥ ॥ ॥

३१

यदीयो विवेकः क्वापस्य हर्ता,  
यदीयोपदेशः सदा सौम्यकर्ता ।  
नमन् यो जिनेन्द्रं प्रयातो विषं तं,  
मञ्ज्वं मञ्ज्वं मुनिं मांगिलालम् ॥

मुनिश्री मांगीलालजी म, श्रीका यशोगान

[ हरिगीतिका ]

जीवरक्षा के लिये, जिनकी हुई दीक्षा सदा ।  
संसारजन कल्याणदक्षा, थी सुशिक्षा सर्वदा॥

ये धर्मतत्पर वे सदा उन धर्मयतनापाल को ।  
भजलो भविकजन भावसे, युवराज मांगीलाल को ॥ १

जिनका विवेक, कषायरिपुदल, नाशकारक था सदा ।  
उपदेश जिनका सकल जन, सुखशान्तिकारकसर्वदा ॥

जिनपद नमत स्वर्गी बने, उन धर्मयतनापाल को ।  
भजलो भविकजन भावसे युवराजमांगीलाल को ॥ २

पुत्राचार्यसंज्ञं पदं यो न्यषत्, <sup>१</sup>  
 न्यषत् स्वगच्छे हितं यः सदैव ।

अगवृक्षन्पुतां प्राप्तवान् यो मुनिस्तं,  
 मज्जर्षं मज्जर्षं मुनिं मांगिलालम् २

नमस्कारमन्त्रं पवित्रं लवित्रं,  
 सदा कर्मबन्धस्य पिते दधार ।

स्मरन्वारवारं गतोऽन्तेऽन्तमेन,  
 मज्जर्षं मज्जर्षं मुनिं मांगिलालम् ॥ ४

मुदा मक्तिमावाद् मज्जन्ते स्वमत्तः,  
 सदा नम्रमात्मान् नमन्त्येव नित्यम् ।

निराधारशिष्यान् त्यजन् यो गतस्तं,  
 मज्जर्षं मज्जर्षं मुनिं मांगिलालम् ॥ ५

युवाचार्य नामक पद जिन्होंने मान से धारण किया ।  
निजगच्छ के कल्याण हित, जो देह को धारण किया ॥

सकल जन के वन्द्य थे, उन धर्मयतनापाल को ।  
भजलो भविक जन भाव से, युवराज मांगीलाल को ॥ ३

अतिशय लगे थे सर्वदा जो कर्मबन्धविनाश में ।  
तादृश नमस्कृतिमत्र को जपते हृदयशतपत्र में ॥

सुमिरन करत स्वर्गी बने, उन धर्मयतनापाल को ।  
भजलो भविक जन भाव से, युवराज मांगीलाल को ॥ ४

भक्त जन भजते जिन्हें अति भक्तिभाव विकास से ।  
आनन्द मग्न प्रणाम करते नम्रभक्ति सुभाव से ॥

तज शिष्यजन को जो गये उन धर्मयतना पाल को ।  
भजलो भविक जन भावसे, युवराज मांगीलाल को ॥ ५

मरे काल ! इन्ताऽभवस्त्वो धिगस्तु,  
 दयामावमानोऽनितस्यापि हता ।  
 मुनिं तेष नीत्वा कृताघोऽस्पनार्य,  
 मज्ज्घं मज्ज्घं मुनिं मांगिलालम् ॥

दयादष्टिरस्मात्तु गच्छे यथाऽऽस्ता,  
 सदा सर्वकल्याणकारिप्रभाषा ।  
 घने घर्मरीतिं वितन्वन् गतस्तं,  
 मज्ज्घं मज्ज्घं मुनिं मांगिलालम् ॥

भवार्धनं मज्ज्घं मोदकन्दम्,  
 मवेत्स्वप्नमध्ये सदा प्रार्थनेयम् ।  
 स्तुषन् यो जिनं सम्प्रयातो मुनिस्तं,  
 मज्ज्घं मज्ज्घं मुनिं मांगिलालम् ॥

जिनका हृदय भरपूर था, कारुण्य जल से सर्वदा ।  
हर कर बना कृत कृत्य तूरे काल धिक्, तुम्हको सदा ॥

मुनिराज समता भाव युत उन धर्मयतनापाल को ।  
भजलो भविकजन भाव से, युवराजमांगीलाल को ॥ ६

सर्वदा कल्याणकारी भावयुत करुणामयी ।  
जिनगच्छ में अरु हम सबों में, दृष्टि थी समता मयी ॥

जो धर्म रीति पदा गये उन धर्मयतनापाल को ।  
भजलो भविक जन भाव से, युवराज मांगीलाल को ॥ ७

आनन्दकन्द अतीव मगन, आपका दर्शन मुने ।  
हो स्वप्न में मुम्हको सदा, यह प्रार्थना सुनलो मुने ॥

जितवन्दना करते गये उन धर्मयतनापालको ।  
भजलो भविकजन भाव से युवराज मांगीलाल को ॥ ८

- मनुष्युप -

युवाचार्यपदप्राप्त, मांगीलालमहामुने-  
रष्टकं चास्त्रिलेन, कृतं भूयाञ्च मंगलम् ॥

- बोधा -

मांगीलाल मुनीराज्य, अष्टक मंगलकर।  
पड़े मुने जो भाव से, वरते मंगलाचार॥



यसोगानः-

दर्श- क्पालकी

रचयिता-भी इस्तिमलर

मुनि मांगीलालजी !

संयम स्त्रीनो है पूरण प्रेम से । देर  
मंघेठी बंस के मांयन सरे, हुआ आप 'पुण्यवान  
गम्भीर ममजी पिता आपके, बहुत गुणों की खात  
मेवाइ दन में "रात्र करेड़ा" मुनिय ध्यानलगाय  
बही पर अन्म लिपागुरुवरन, गोमा फड़ी न जाव

गृह वास तज संयम लीनो, रायपुर ग्राम मुझार  
श्री संघ मिलकर उच्छ्व कीनो, मात 'मगनवाई' लार...३

ज्ञान अमोलख दिया आपको, पूज्य मोटा मुनिराय  
एकलिगदासजी गुरुवर भेटचा, तज मिथ्या, मोह, माय...४

उन्नीसौ अष्टोत्तर साल में, लीनों संजमभार  
चारों सघ मिल पदवी दीनी, "लावा" शहर मुझार...५

साल निन्याणू 'नाई' नगर में, वरते जयजयकार  
"हस्ति मुनि" ने गुरु गुण गाया, दिल में हर्ष अपार...६

\*—\*—\*—\*

—:हार्दिक शोक लहर:—

तर्ज आसावरी रचयिता-श्री पुष्करमुनि "ललित"

आज सबका हृदय घबराए

प्यारे गुरुवर स्वर्ग सिधाए-टेरे

प्यारी स्मृत अमृत वाणी

याद कर रहे हैं सब प्राणी

कहाँ छिप गए याद सताए..

मांगीलालजी गुरुवर प्यारे

मेरे जीवन के मात्र सहारे

टूटा सहारा कहाँ पर जाए...



कौन अमृत बचन सुनाए  
 कौन स्नेह दे द दुन्दिराए

हाय ! आज हृदय दुःख पाए  
 सब घना कर गए स्वामी  
 कौन पूरगा अब यह स्वामी  
 नैनां आँसू मर मर आए

ज्ञान प्यान जीवन के दाता,  
 मेरे स्वामी सखा पितृ माता ।

मैंने सब कुछ आपको पाए  
 दिल के दास का तो पार नहीं है  
 आशा कुछ भी न छप रही है

हमें अवशिष्ट गुरु क्षिप्र  
 गुणों के दरिया से अनुग्रह सिंधु  
 सबके हितकारी सबके बन्धु

हम भद्रा के पुण्य बढ़ाए  
 पावन धरना में बन्दन हमारा  
 पाए ससार सागर किनारा

‘मुनि पुष्कर’ बखिहारी आए

## वन्दन और क्रन्दन

तर्ज-ढोला ढोल मञ्जीरा—रचयिता—श्री मगनमुनिजी “रसिक”

गुरुवर गीत आप रा गाऊँ रे

चरणां मांही मुक-मुक म्हारो शीष मुकाऊँ रे....

मागीलालजी नाम आपको, सुणतां आनन्द आवे ।

गुण का सागर आप कहाया, नर नारी गुण गावे ॥ १ ॥

अमृत वाणी सुन सुन करके, जनता सब हर्षाती ।

मनमोहन सूरत देखीने, फूली नहीं समाती ॥ २ ॥

जन्मभूमि श्री “राजकरेडा” चोमासा की धारी ।

विनति मानी पोटनां, खुशिया छाई भारी ॥ ३ ॥

गाव सहाड़ा में आप पवारे, सुखशाता मे स्वामी ।

स्वर्ग पधार्या आप वहां पर, म्हारा अन्तर्यामी ॥ ४ ॥

मन की मनमें रह गई स्वामी, अब दर्शन कहा पावा ।

निराधार म्हा वेग्या गुरुवर, दौड दौड़ कहां जावां ॥ ५ ॥

आप बिना मारो सध सुनो, दिल में दुखड़ो छायो ।

“रसिक” चरण किकर गुरुवरको, शरण आनके आयो ॥ ६ ॥

## आरती

तर्ज - जय जगदीश हरे —रचयिता - भैरुलाल जैन

ॐ जय जय गुरु ज्ञानी, स्वामी जय जय गुरु ज्ञानी

मागीलालजी गुरुवर, भजलो सब प्राणी ॥ टेरे ॥

कौन अमृत बचन सुनाए  
 कौन स्नेह दे दे दुन्दिराए

हाय ! आज हृदय दुःख पाए  
 सब घना कर गए स्वामी  
 कौन पूरेगा अब यह स्वामी  
 नैनां व्यास मर मर आए  
 ज्ञान ध्यान जीवन के दाता,  
 मेरे स्वामी सखा पितृ माता ।

मैंने सब कुछ आपके पाए  
 दिल के दुःख का तो पार नहीं है  
 भाषा कुछ भी न शेष रही है

इमें अवबिष गुरु छिटकाए  
 गुणों के दरिया से अनुग्रह मिन्धु  
 सबके हितकारी सबके बंधु

हम भद्रा के पुष्प चढ़ाए  
 पावन चरना में भन्दन हमारा  
 पाए ससार सागर किनारा

‘मुनि पुष्कर’ बलिहारी घाए

## वन्दन और क्रन्दन

तर्ज-ढोला ढोल मञ्जीरा—रचयिता—श्री मगनमुनिजी “रसिक”

गुरुवर गीत आप रा गाऊँ रे

चरणां मांड़ी फुक-फुक म्हारो शीष फुकाऊँ रे ...

मागीलालजी नाम आपको, सुणतां आनन्द आवे ।

गुण का सागर आप कहाया, नर नारी गुण गावे ॥ १ ॥

अमृत वाणी सुन सुन करके, जनता सब हर्षाती ।

मनमोहन सूरत देखीने, फूली नहीं समाती ॥ २ ॥

जन्मभूमि श्री “राजकरेड़ा” चोमासा की धारी ।

विनति मानी पोटनां, खुशिया छाई भारी ॥ ३ ॥

गांव सहाड़ा में आप पधारे, सुखशाता में स्वामी ।

स्पर्ग पधार्या आप वहां पर, म्हारा अन्तर्यामी ॥ ४ ॥

मन की मतमें रह गई स्वामी, अब दर्शन कहा पावां ।

निराधार म्हा वेग्या गुरुवर, दौड दौड कहां जावां ॥ ५ ॥

आप बिना मारो सघ सूनो, दिल में दुखड़ो छायो ।

“रसिक” चरण किकर गुरुवरको, शरण आपके आयो ॥ ६ ॥

## आरती

तर्ज - जय जगदीश हरे —रचयिता - भैरुलाल जैन

ॐ जय जय गुरु ज्ञानी, स्वामी जय जय गुरु ज्ञानी

मागीलालजी गुरुवर, भजलो सघ प्राणी ॥ टेरे ॥

राज करेड़ा जन्मे, आरा बंरा पाया-स्वामी ।  
 "गम्भीर" पिता क प्यार, मात मगत काया — ॐ

सड़मट साल पोप माह में जन्म भाव धारा-स्वामी  
 कुल दापक कुल बग्दा, निह वंश उजियारा — ॐ ..

बचपन में सुमंगल कम्पी, लीनों प्रण धारी-स्वामी  
 "आचार्य एकस्त्रिग" गुरुने लिशो मंथन मारी-ॐ....

प्यारह माशकी समर मांही बोड़ दिया परको-स्वामी  
 ज्ञान ध्यान गुणबन्ता, वन्दन मुनिबर को — ॐ ...

बिभ्र निवारण भबोवपिनारण बीरधीर प्यार-स्वामी  
 छारे कई नर नारी, भव संकट छारे — ॐ

बिन्ता बुरण भाया पूरुष नाम है गुणधारा-स्वामी  
 जो नर तुमको ध्याये, पाये सुख मारी-ॐ....

प्राय बठ नित सुभिरण करता पूगे मम भासा-स्वामी  
 "भैरुलाल" गुण गाव हो पिवपुर बासा-ॐ ..

★

### गुरुवर छोड़ गए

तर्क-बाड़ बाबुल का घर-रक्षिवा:-श्री मगनमुनिजी "रसिक"  
 निराधार न्हान छोड़ हमसे मुख मोड़  
 गुरुवर बाण्ड गये ..

मात "मगम" के सख नगीना हुन्ही ।

पिता "गम्भीर" प्यारे सकीना सही ॥ ।

राज करेड़ा के भाय जन्म लीनों जो ध्यव....

उपकारी महा दीन बन्धु गुणी ।  
 प्रति पालक मत शिखर मुनि ॥  
 लीना समय भार, लीना गुरुवर वार ...

अल्प उम्र में समय धार लिया ।  
 जिन वचनों का पूर्ण पालन किया ॥  
 घूमे देश विदेश, दिया वर्म सदेश....

त्याग वैराग्य जीवन में पूरा भरा ।  
 सन्त रत्न गुणाकर "रसिक" खरा ॥  
 गए स्वर्ग मिथार, भूरे कई नर नार ..



भव्य विभूति खो गई जी ...

तर्ज-हेल्यारा रा बावजी—रचयिता—श्री पुष्करमुनिजी "ललित"

अहो गुरुजी छोड़ चले अब  
 किसका है आधार जी.

मोहक मूरत याद सताए,  
 हर घड़ी हर वार जी ..

"पुखा" "पुखा" कौने कहेगा,  
 वैटू किसके पास जी

मीठी मीठी अमृत वाणी,  
 देवे कुण विश्वास जी .

ऐसी लो नदी बायीं स्वामी  
 तत्र होगे इस ठौरकी ...  
 हा ! हा ! रे इस कान कर ने  
 दिया है पातक घोर की ...  
 क्या था भासा मुझको गुस्वर  
 भासा निष्फल हो गई की...  
 'पुष्कर' शोषन नीर बहाते  
 मध्य विमृति जो गईकी ...

★

अज्ञा—सुमन

तब - कन्याली - रचयिता - श्री मगनमुनिजी 'रसिक'  
 मांगीलालजी गुस्वर प्यारे  
 सबको छाड़के स्वर्ग भिभारे... टेर  
 गज करेका में जग्य जो पाया ॥  
 सर नारी सभी हुलियाया ॥  
 मात मगन के भाप दुश्कारे...  
 पूष्य पकलिंग नाम गुण्य भारी ।  
 गुरु भेष्या है नाम अज्ञाचारी ॥  
 जिन शासन क भाप भितारे...  
 गांध गजपुर में संयम लीना ।  
 बोटी बबमे जगत तत्र लीना ॥  
 पश्य पश्य नवम क ठारे...

गांव नगर में धर्म फैलाया ।  
 सत्य अहिंसा का पाठ पढाया ॥  
 भव्य जीवों के कारज सारे .

विचरत आप सहाड़ा में आया ।  
 स्वामी एक दम स्वर्ग सिधाया ॥  
 छोटे मांटे सब आंसू डारे ..

कैसा काल कराल कहाया ।  
 गुरुवरजी को ले के सिधाया ॥  
 भक्तजन के थे प्राण सहारे .

अहो ग्यारे गुरुवर कहा हो ।  
 मेलो वन्दन आप जहां हो ॥  
 दर्शन दुर्लभ आज तुम्हारे .

श्रद्धा पुष्प चरण में चढाए  
 जलसे “रसिक” नयनभर आए ॥  
 जीवन वन्य बनाके पधारे..



### पड़ासोली संघ की श्रद्धांजलि

तर्ज - मारवाडी

रचयिता - श्री सघ

अब हम किणारी करस्या सेव ।  
 म्हाने क्यों ओड्या गुरु देव ॥

बिलखे शिष्य और शिष्याए, बिलखे सब नरनार ।  
 याद सतावे गुरु तुम्हारी, छूटे आसू धार . . .



अनुकम्पा अनहद बी स्वामी, आपके हृदय मुम्भर ।  
 बन गए क्यों गुरु निर्मोही, बोध गये मन्मथार.... -  
 पाते आप विराज सुनाते, अमृत सम व्याख्यान ।  
 धनता सारी हर्षित रहती देते सच्चा ज्ञान.....  
 सहाहा प्राम में आप गुरुवर कीनों स्वर्ग निवास ।  
 बैठ सुखी गुरुवार चतुर्वशी, कीना हम निरुश... ..  
 इति मुनिभी पुष्कर मुमित्री तपस्वी कन्हैयालाल ।  
 मिनट एक की डील न करते (अथ) कौन करे संमाल ....  
 कौन मुने किस्त पास में जाये, किम्से करें निज बाध ।  
 दुष्ट अम्बायी काल ने मर लूट लिया सिर म्बाध ...  
 सुरत अधिक सुहावनी स्वामी, क्यों तारु में पद ।  
 सँपम पाली स्वर्ग सिंघाया, मात भगन के नद ...  
 पद्मसोली संघ की इच्छा स्वामी रह गई मन के माँस ।  
 टूटी नहीं अस्तगय हमारी, शरा न बीना नोम..... -  
 संघ पद्मसोली गुरु बिन तरसे, नेखा बरम नीर ।  
 बिन चैतायाँ बोध्या म्हाने ह बत्वा का पीर



### प्रेममगी भदीजलि

तर्ज-भ्तारी नगरी

रचयिता-श्रीलाल हीगम्(भरनोषा)

गुरुवर गुरुवर रोज पुकारू गुरुवर हमको बोध चले ।  
 हृदय तु ज से मर मर आता, ओ गुरुवर कहाँ बोध चले ॥

दर्शन करने जब मैं जाता, दर्शन कर सुख पाता था ।  
शब्द शब्द मैं अमृत करता, मिष्ट वचन सुन पाता था ॥

सुन सुन करके वाणी गुरु की,  
मानो मुरम्हे कुसुम खिले .

हा! हा! रे तूँ काल क्रूर ये, क्या अवमता तेने करी ।  
हृदय बल्लभ थे गुरुवर जी, जगमग ज्योति तेने हरी ॥

देवीलाल यों गुरु गुण गाता  
नयनों से आँसू मेरे ढले .



तर्ज-सेवो श्री रिष्टनेम— रचियता—कन्हैयालाल बम्ब (पढ़ासोली)

ऐसा ज्ञानी गुरु ओ ऐसा ज्ञानी गुरु,  
नित उठ के मैं तो ध्यान धरूँ  
सचेती कुल गभीर मलजी है तात,  
माता मगन का प्यारा अ गजात .

नाम आपको श्री मँगीलाल,  
छ' काया के आप हैं प्रतिपाल  
पच महाव्रत पालो गुरुगज,  
डम भव में मेरे हो सिरताज

छोड चले स्वामी मुनियों का साथ,  
तुम बिन चैन न आवे दिन रात ..

सात बीस में किया हमारा निराश,  
 लठ सुनी पचदस स्वर्ग विनाम.....  
 ऐस गुरुजी का जो जपे आप,  
 भव भव का भिटे कर्म संताप.....  
 बाल कन्हैया की यही भवनाम,  
 शिवपुर नगरी का हो मुझे वास.....



### गुरु गुणगान

वर्ष—देखा दन्तोत्री— रचयिता—सुबानसिंह जैन (इज्जत)  
 भाये, भाये, जी हौं, हौं आप भाए जी,  
 मुनि मांगीलान्ना मर मन भाये ॥१६॥

नगर राजकरका प्रथम मगन पुत्र कहलाए ।  
 सात हुए गम्भीर ठान के, अन-मन भक्ति दुससार —  
 पूज्य एफ्लिंग गुरु के कर से, मुनिवर का पद पाए ।  
 संसम शत को बार आपने, धर्म को लूब विपाए, ..  
 बीनागम तरवार्य प्रथम पद धर्म बोध बतलाए ।  
 श्री विष्य मुनि इस्लीमन का नगर नगर यज्ञ पाए.....  
 स्थान-स्थान पर ठहर मुनिवर, संन धर्म फैलाए ।  
 चारों ओर कति पैसी भव, मौ म एक कहाए —  
 पुण्य वर्ष से नयादूरा में गुरु बीनासा ठार ।  
 गुडवर क पावन चरणों में, शीप 'सुबान' सुभाए.....



वर्ज—तेरे पूजन को भगवान

रचयिता—सुजानसिंह सेठिया

खुशी का आता नहीं कुछ पार  
पधारे जैन मुनि अणगाग.. टेर

नगरी उज्जैनी के माय, कृपा कर आए दो मुनिराय ।  
सघ में छाया हर्ष अपार ...

मुनि श्री मांगीलालजी ज्ञानी, जिनकी अमृत जैसी वाणी ।  
श्रवण कर खुश होते नरनार

हुआ यहा चातुर्मास ये पहला, जिससे दयाधर्म बहु फैला ।  
गुरु के गुण गावो हर बार..

जैन बालकों की यह अर्जी, कृपा करके सुनिये गुरुवरजी ।  
हमारी नाव लगादो पार .

ईस्वी सन् पचास का आया, प्रेम से भजन 'सुजान' बनाया ।  
गुरु के चरण नमे हर बार

— ० —

कवितामयी श्रद्धांजलि

रचयिता—ख्यालीलाल जी बोलिया

बहुत दिनों से अभिलाषा थी ।

गुरु दर्शन की आशा थी ॥

हो न सकी अभिलाषा पूरी ।

रही अन्तराय कर्म से दूरी ॥

कहा किसी ने 'गुरु स्वर्ग सिंघार' ।  
बन्धा लगा हृदय पथराप ॥

अब इस जन्म दर्शन आपके पावेंगे कहीं ।  
वृद्धन बिन नैन तरसते रहेंगे यहीं ॥

कहीं अब आपके अमृत बचन घरमेंगी ।  
कैसे हमार दुष्क हृदय सरनेगी ॥

जीवन के आधार ज्ञान महार बे ।  
ज्ञासन के शृ गार तुम्ही हृदय के द्वार बे ॥

परम उदार परंपरा वालक मुनि पूर्ण करुणाकर बे ।  
संयम पब बिहारी बिन धर्म रत्नाकर बे ॥

जो थे गण्य जनमें और वृद्धि कर बालिषे ।  
फिर कबल ज्ञान प्राप्तकर मौढ़ पधा रये ॥

के पल की दुष्क अडांबली स्वीकारिबे ॥



### सन्तों में मन्त्र-रत्न

उर्ध्व-ब्रह्म त्रिपदी

इसी मुनि राजकरेबा

अब अयकागी, बाल ब्रह्मचारी सुख संजम धारी, परावता ।  
मात्र करि ध्यावे, अति मुख पावे मन हरपावे, स्तुति करेता ॥  
मिथम मीति उत्तम प्रीति, साधुपन रीति, हृदय धार ।  
ब्रह्मचर्य प्रति प लं, भाव दयालं, मुनि (गुरु) मांगीलाल अणुगार । १।

पंच महावरति, पांचों सुमति, तीनों गुप्ती, दिल ठानी ।  
समता सागर, दयानिधि आगर, ज्ञान उजागर गुणखानी ॥  
सप्तभय टारी, अष्टमद हारी, महिमा तुम्हागे, विस्तार ।  
छकाय प्रतिपाल, आप दयाल, मुनि (गुरु) मांगीलाल अणगार ।२।

आज्ञा आरात्रक, पूरण सावक, प्रतिज्ञा पात्रक अनुरागी ।  
श्रेष्ठ मतिदाता, शीश नगता, त्याग की बाता, उज्जागी ॥  
महा उपकारी, सहन शक्ति भागी, कौमलता सारी, वैशुमार ।  
छकाय प्रतिपाल, आपदयाल, मुनि (गुरु) मांगीलाल, अणगार ।३।

आगम के ज्ञान गुरु गम बाता, रहस्य बतलाना, हितकारी ।  
दयालु मुनिवर, शीतल सरवर, जपते जिनवर आलस टारी ॥  
गुरुमेवा किनी, यशकीर्ति लिनी, क्रिया जिणी, उरधार ।  
छकाय प्रतिपाल, आप दयाल मुनि (गुरु) मांगीलाल अणगार ।४।

प्रमन्ननाथी मनमें, आलस नहीं तनमें, निर्मल मुनिपन में, था उजेला ।  
अन्तसमै सयारा स्ववश दिन धारा चार शरण स्त्रीकारा अन्तमवेल ॥  
गये स्वर्ग पवारी, हजरों नरनारी, आखे आंसू डारी पुकार ।  
छकाय प्रतिपाल, आप दयाल, मुनि (गुरु) मांगीलाल अणगार ।५।

अरे! काल कराला, क्या कर डाला, गुण रत्नों की माना लूट गया ।  
सतों की जोड़ी, पलक में तोड़ी, हे गुरु-मुख मोड़ी, उठ गया ॥  
एक वार पधारो, हय को रखवारो, सेवक चरणारों अवधार ।  
छकाय प्रतिपाल, आप दयाल, मुनि (गुरु) मांगीलाल अणगार ।६।



## जीवन परिचय

तर्ज-पन्नत्री मुग्धे बोन

आनन्द पाषा रे-आनन्द पाषो रे,

मुनि माग लाबत्री को ध्यान लगाबो रे ॥ आनन्द ॥ ध्रुव ॥

॥१॥ अन्ममूमि है राजकरेबा, मेवाइ में ठाबो रे ॥  
प्राय न रचना इम नगरकी, इस्त्रन हुलापाषो रे ॥ आनन्द॥२॥ नगन्यबाई को पुत्र लाइलो अति हर्षे जमाबो रे ॥  
गभी मलत्री तात आरुध धरल स्वमाषो रे ॥ आनन्द -॥३॥ मइसठ वर्षे पीपी महिनो अन्मवा सुखी मन्यबो रे ॥  
अर्पान्तर परलोक पितात्री माता मनि फसाबो रे ॥ आनन्द -॥४॥ साग अठार संवम जिनो हुभो खूब उष्याबो रे ॥  
पूज्य एकलिगदास गरु का शिष्य बनाबो रे ॥ आनन्द ॥॥५॥ शास्त्र पढ़े है बित्तय भाग से लिषो खूब ही ज्ञाबो रे ॥  
अनि अमंगल गहसैबा कीनी बइता माबो रे ॥ आनन्द ॥॥६॥ बाज ब्रह्मचार सूर्य प्या । कीनि को नही जाबो रे ॥  
वव बिया अम संवम पारयो किनो भर्म बइाबो रे ॥ आनन्द॥७॥ सहाबा स प ने करी बिनति, मौंका गौंघ में आबो रे ॥  
वयाइ महर करो अब तो, हुक्म फरमाबो रे ॥ आनन्द---॥८॥ पन्व उवालो बेठी अठइहा, कीनो हर्षे बसाबो रे ॥  
मऊबनो पर वया करी ने, नैसा पार लगाबो रे ॥ आनन्द---

## गुरु-गुणसागर

हरीगीतिका (पचक)

स-वेग वरती हृदय जिनका था दया करुणा भरा ।  
 य-त्न पूर्वक सफल करणी जैन मारग में खरा ॥  
 म-धुर भाषी नित्य करते, धर्म की शुभ मण्डना ।  
 र-त्न मंजूषा मुनिगज को, हो हमारी वन्दना ॥१॥  
 क्ष-मा धारी ब्रह्मचारी, कष्ट सयम हित सहे ।  
 क-र्तव्य पानक दीनबन्धु, साम्य भावों में रहे ॥  
 द-र्श उनका था मगनमय कभी न करते खण्डना ।  
 या-द कर गुरुराज को, मैं नित्य करता वन्दना ॥२॥  
 लु-प्त कर सब पाप को, वे स्वच्छ मन गभीर थे ।  
 मु-ख्य उनकी शान्त मुद्रा धर्म के वे वीर थे ॥  
 नि-लिन किंचित् कषाय से, उत्कृष्ट करते मयना ।  
 मां-ग करते धर्म की वे, हो हमारी वन्दना ॥३॥  
 गि-रते हुए को साथ लेते दूरदर्शी थे सदा ।  
 ला-यक बनाते प्रेम से, वह दुःख नहीं पाता कदा ॥  
 ल-ग्न से वे रटन करते थे, श्री सिद्धार्थ नन्दना ।  
 जी-वन सफल उनका बना था, हो हमारी वन्दना ॥४॥  
 म-हिमा उन्हीं की अतुल है वे दीन के प्रतिपाल थे ।  
 हा-र्दिक हिताहित सोचते जैन शासन के ढाल थे ॥  
 रा-ही बने शिवधाम के, वे कर्म शत्रु निकन्दना ।  
 ज-गत में उन सत मुनि को हो हमारी वन्दना ॥५॥



## गुरुराज छोड़ चले

तर्क-मेरी जानकी

। डेर । गुरुवर गजब करी रे ।

परलोक पधारे उमंग बरी रे ॥  
 ११। युगल युग उम्बर पाकर, कैसी ममता मरी रे ।  
 भबसागर तिरख इच्छा से मजम भेष बरी रे ॥ गुरुवर ॥

१२। सर्वोत्तम तप बप निरंतर, विनय वृत्ति चढ़ी रे ॥  
 ज्ञान क्रिया की धून लगी घट भसा बट्ट खरी रे ॥ गुरुवर ॥

॥ ३ ॥ कपास रिपु को बूर हटाया समठा झील भरी रे ।  
 निमल नियम सबके द्विती की श्रेष्ठ ध्याता तुमरी रे ॥ गुरुवर ॥

॥ ४ ॥ महामुनि मांगीलाल बी, गुण रत्नो की लकी रे ।  
 वप चढबीम झरख गज प्रीति पलक मे हरी रे ॥ गुरुवर ॥



तर्ज - ख्याल की

लेखक:-मा. शोभालालजी महता, उदयपुर

आछो दीपायो मारग जैन को, मुनि मांगीलालजी-आछो-॥ध्रुव॥

मेदपाट में है मञ्जुल अति, राजकरेड़ा भारी ।

पिता आपके गम्भीरमलजी, मगनवाई महतारी ॥१॥ मुनि ॥

संवत् गुन्नी से साल सतेसठ, शुभ वेला शुभ वारी ।

जन्म लियो पोपी अमावस, आनन्द मंगलकारी ॥२॥ मुनि ॥

पूज्य श्री एकलिङ्गदासजी से, बोधामृत पाया ।

ऊँचे भाव से दीक्षा लीनी, मन वैराग्य समाया ॥३॥ मुनि ॥

शांत स्वभावी बड़े विचक्षण, ये गम्भीर महान ।

किस मुख से तारीफ करू में, जाणे सकल जहान ॥४॥ मुनि ॥

ग्राम नगर पुर पाटण विचरत, खूब ही धर्म दिपाया ।

जिन शासन की शान बढ़ाई, भव्य जीव समझाया ॥५॥ मुनि ॥

दो हजार इक्कीस साल में, गांव सहाड़े आया ।

जेठ सुदि चतुर्दशीदिन, मुनीजी स्वर्ग सिधाया ॥६॥ मुनि ॥

दो हजार बावीस सालमे, कार्तिक शुक्ला मांठी ।

त्रयोदशी मंगल के दिन, यह "शोभा" जोड़ बनाई ॥७॥ मुनि ॥

श्री

स्वर्गीय गुरुदेव श्री माँगीलालजी महाराजस्य

अष्टक

प्रेषक : मदन मुनि (पयिक)

शाबूल विष्ठीडित छम्बः

मेवाढे प्रयिसे शुभं गुणयुते, वशे च शौर्यान्विठे ।  
श्रायं राजकरुढ नामनि जनैः स्तुत्ये विशुद्धे कुले ॥  
ममा मातुरयो जनि सममवद् गम्भीरमल्लात् पितुः ।  
माँगीलाल इति प्रमोदमनसा तस्याभिधानं कृतम् ॥ १  
परिप्लु विपुवद् विहाय सिधुतां प्राप्तः स पौगण्डताम् ।  
विधाऽभ्यासपरायणोऽनुदिपसं जातो दशाम्बुः क्रमात् ॥  
पैराग्यान्वितमानसः सममवबैकादशाम्बुदे यदा ।  
तथाऽऽगाव् गुरुरेकस्मिन्गणिराह् ज्ञानादिरस्नाकरः ॥ २  
शुस्वाऽसौ गुरुसभिर्षो जिनगिर दीक्षां शुभामप्रहीव् ।  
शास्त्राणां पठने समुद्यतमतिर्जातो गुरुप्यासकः ॥  
वर्षं नेत्रयुगाधिकं व्रतमयो संपाल्य भावान्वितः ।  
संप्राप्त सुरलाकमथ सकलो लोको हि शोकाऽऽकुलः ॥ ३  
ज्ञानं यस्य तपश्च दर्शनयुतं चारिप्रमात्यन्तिकं ।  
नित्यं रत्नकतुष्टयी अश्लिक्ला मोहं प्रमार्तुं क्षमाः ॥  
तस्याऽऽस्मा सततं गतः परमधं शान्तिं परामाप्नुयात् ।  
मभ्यानां शुभमापना इदि सदा लोके समुजृम्भते ॥ ४

श्री  
बालब्रह्मचारी गुरुवर्यश्री मांगीलालजी म० श्री  
का

## यशोगान

\* हिन्दी हरिगीतिका \*

अतिशूर जग विख्यात श्री मेवाड देश प्रसिद्ध में ।  
राज करेढा ग्राम विच, गुण युक्त वंश विशुद्ध में ॥  
गम्भीरमल्ल पिता तथा मग्ना सुमाता के यहाँ ।  
शुभ काल में उत्पन्न "मांगीलाल" नाम रहे जहाँ ॥ १ ॥

वर्धिष्णु विधुवद् बालता को छोड़कर पौगण्ड में ।  
विद्याभ्यसन में निरत नित दशवर्षजात उमंग में ॥  
वैराग्य युत मानस हुये जब ही एकादश वर्ष में ।  
तब ही मिले गणिराज गुरुवर एकलिङ्ग सहर्ष में ॥ २ ॥

जिन वचन गुरु के निकट सुन दीक्षा ग्रहण कर आपने ।  
अंगादि शास्त्राध्ययन में मन को लगाया आपने ॥  
व्यालीस वर्षों से अधिक शुभ भाव से व्रत पालन कर ।  
इस लोक को व्याकुल किये सुरलोक आज सिधारकर ॥ ३ ॥

चारित्र दर्शन ज्ञान तप जिनका निरन्तर चन्द्र सम ।  
विख्यात था इस लोक में मोहान्धकार विनाश तम ॥  
पर लोक गत वे मुनि परम सुख शान्ति पामे सर्वदा ।  
यह भव्य जन के हृदय में शुभ भावना है सर्वदा ॥ ४ ॥

भासीह्योऋहिताय केवलमही यस्य प्रवृत्तिः शुभा ।  
 यस्यासीरप्रकृतिभिरन्तनमुने स्तुल्यैव निःसंशयम् ॥  
 य दृष्ट्वा समभूद् भृशं जनमनो मोदान्वितं सोऽधुना ।  
 शून्यं लोकमिम विषाय गतवान् तेनैव सिद्धामेह ॥ ५ ॥

\* \* \*

संसारस्य विनष्टरत्वमनिश्रं यच्चिन्तयन् सन्ततम् ।  
 स्वात्मानं च परं च शान्धतपद् नेतुं प्रयत्नान्वितः ॥  
 शुद्धाऽऽचारविचारवर्त्मनिरतो यो भाषनां भाषयम् ।  
 अस्माकं हृदयेऽपि बीजमवपत् सर्वं भगवत्परम् ॥ ६ ॥

\* \* \*

तस्मा मोहपद्ं च नश्वरमिदं त्यक्त्वा भगवत्पुत्रो ।  
 धर्मध्यानपरायणा मन्तरे ? ज्ञात्वा च मोक्षे सुतनम् ॥  
 सर्वां सृष्टिरियं च उत्तमतमना येऽन्ये महान्तः परे ।  
 ते धर्मेण तरन्ति पूर्वमतान् सर्वे तरिष्यन्ति च ॥ ७ ॥

\* \* \*

धर्माचार्यपदंगतस्य पुरतो मार्गं निर्मममहे ।  
 कारुण्याद्राह्वदः परोपकृतिमचित्तस्य हार्दं शुभम् ॥  
 शिष्येभ्यः स्वनेभ्य इभ्य अनता सषेभ्य इशोरिष ।  
 स्वप्ने बर्षनमस्तु सर्वमगतां भूयात् सदा मङ्गलम् ॥ ८ ॥

जिनकी प्रवृत्ति थी निरन्तर लोक हित के ही लिये ।  
 प्राचीन मुनि सम प्रकृति भी थी लोक हित के ही लिये ॥  
 थी देखती जनता जिन्हे आनन्द से निशदिन अहो ।  
 है आज उनके ही विरह में शोक से आकुल अहो ॥ ५ ॥

\*

\*

\*

संसार नश्वर भावना मय नित्य यतना वान थे ।  
 अपने पराये को परम सुख प्राप्ति हित यतना वान थे ॥  
 सबके मनोमय भूमि में संसार नश्वर भावना ।  
 शुभ बीज रोपित कर लगाई मुक्ति वल्लि कामना ॥ ६ ॥

\*

\*

\*

अतएव धर्म ध्यान रत इस मोह मय संसार को ।  
 अति दूर से ही त्याग दो अति दुःख पारा वार को ॥  
 संसार में सब तर गये, तरते तरंगे धर्म से ।  
 यह जान कर सब धर्म संचय ही करो शुभ कर्म से ॥ ७ ॥

\*

\*

\*

हम मांगते अति पूज्य धर्माचार्य करुणावान से ।  
 वरदान केवल एक अंजलि जोड़कर मतिमान से ॥  
 निज शिष्य गण अरु मित्र गण हित जो सदा ये चन्द्र सम ।  
 निज रूप का दर्शन करावे स्वप्न में कल्याण सम ॥ ८ ॥

## \* श्रद्धा पुष्प \*

रघयिताः—सौभाग्य मुनि

तर्जः बिल छुटन वाले

वे जैन जगत की दिव्य विभूति, समय पासक मुनिवर थे  
 "शत" कोटि नमन शतः कोटि नमन, पुरुषोत्तम गुण रत्नाकर थे ॥

मा "मग्न" कुंभर के लाल स्वरे, मिन शासन के उनियार प  
 "गौमीर" पिता के पुत्र रत्न गौमीर, भीर बिल वाले थे  
 सार्थक सचेती गौमर हुआ, अति समग सपेदा गुरुवर थे ॥१॥

जय "रामकरेड़ा" जन्मभूमि जहाँ गुरुवर ने अनठार लिया  
 संवत् उषीसो सड़सट्ट (६७) के, शुभ पौष मास को अमर किया  
 दक्षर्ष की कोमल सधु वय मे, वैराग्य मूर्ति मियकर थे ॥२॥

संवत् उषीसो अट्टोत्तर, अक्षय वृतिपा अबिस्पृत है  
 अक्षय निधि संयम पाये थे, क्या इस से बढ़कर अपृत है  
 आचार्य एकलिंग गुरु पाये, महामदिक गुण के सागर थे ॥३॥

है "रायपुर" भी धन्य धन्य जहाँ मुनिपद पर आसीन हुये  
 आरम्भ परिग्रह त्याग किया शिष्य मारग के शौकीन हुये  
 गुरु जोष मुनिवर सम मोक्तिक, गुरु आठा से समादर थे ॥४॥

गुजराठ मासका महाराष्ट्र, यू पी और मरु देश गय  
 भारत भूमि पर घूम घूम प्रसू, सन्मति के सन्दर्ष दिये  
 मिन पय पहरी आदर्श प्रचारक, मोहक सौम्य सपाकर थे ॥५॥

वह दिव्य विभूति लुप्त हुई, यह भाग्य मन्दता अपनी है  
गुरु देव स्वर्ग में मुस्काये, यह दुःखकी घड़ियां अपनी है  
संतोष सभी धारे मिल कर, वे अस्तंगामी दिनकर थे ॥६॥

है धन्य "हस्तीमलजी" मुनिवर, पुष्कर मुनि कन्हैया है  
सेवा सहायता देकर के, की पार संयम की नैया है  
युग युग तक अमर रहेगा यश, गुरु देव दयालु हितकर थे ॥७॥

है धन्य सहाड़ा संघ को भी, अन्तिम सेवा कर पाये हैं  
है कुछ "सौभाग्य" हमारा भी, जो चार घड़ी मिल पाये हैं  
अन्तिम सेवा अन्तिम झांकी, अहा ? क्षण वे कितने दुर्लभ थे ॥८॥

स्वामी तज हमको आप गये, हम तुच्छ क्या भेंट चढ़ा सकते  
तुम सब कुछ थे हम कुछ भी नहीं, हम क्या चरणों में देसकते  
यह हृदय "कुमुद" का अर्पण है, स्वीकारो नाथ क्षमाकर थे ॥९॥





# जिन्दगी जीत गये

[शोष]

आओ प्यारे भक्तगण ! करलें सफल जवान ।  
मांगीसाल महाराज के, गाकर के गुण गान ॥

मेवाड़ में ग्राम करेड़ा एक, रामाजी का कहलाता है ।  
मुनिवर का जन्म हुआ यहाँ पर, घुनकर जी आर्नेद पाता है ॥  
गंभीरमस्स फुल्लउजियारा मगना के भाणों का प्यारा ।  
भानन अबलोकन कर बोछे, हम सब की आँसों का तारा ॥  
शुभ आशीष बोछे मगन बहन, चिरंजीवी हो बालक तेरा ।  
गुरु बोछे यह बालक होगा, छः काया का बालक तेरा ॥  
बच्चे को खेलावे खातिर, सब मांग-मांग कर छेते हैं ।  
अतः पुत्र का नाम समी जन, मांगीसाल कह देते हैं ॥१॥

पाँच वर्ष का था तभी, मांगीसाल ललाम ।  
पिता निधनपर मगर का, था आराम हराम ॥

एकस्मिन्दास पूज्यराम भी, पावन कर्तौ यहाँ आये हैं ।  
दर्शन पाकर के नर-मारी, सब फूछे नहीं समाये हैं ॥  
मधुवीर की बाबी पूज्यभी, धारामबाद परमाते हैं ।  
भोठामन सारे मुद्रित हुए, पाह-बाह क्या समझाते हैं ॥  
जनता को सम्भाषन कर के, पूज्यपर न यों उपदेश दिया ।  
क्यों हाड़-मांस के पाछे में, सुष होते हो संकेत दिया ॥

भगवान् वीर फरमाते हैं, यह जन्म चिन्तामणि पाये हो ।  
यह नाशवान तन है प्यारो, क्यों भोगों में ललचाये हो ॥२॥

वानी सुन कहने लगा, यह दश वर्षी वाल ।

मुझको दीक्षा दीजिये, बोला मांगीलाल ॥

मुनिवर बोले यह होनहार, बालक मुझको दिखलाता है ।  
माता बोली गुरुदेव इसे तो, खेल कूद मन भाता है ॥  
माता से बोला हाथजोड़, मैं आजसे कभी न खेलूंगा ।  
महाराज यदि कृपा करदें, तो मैं तो संयम ले लूंगा ॥  
देखा बालक का दृढमन है, संसार से तिरना चाहता है ।  
जवरन फिर क्यों रक्खा जाये, यह रहना भी नहीं चाहता है ॥  
माता का मन भी ऊब चुका, झूठे जगके व्यवहारों से ।  
वैरागिन को अब क्या मतलब, इस दुनियाँ के व्यापारों से ॥३॥

मुनिवर ने तब कर दिया, रायपुर प्रस्थान ।

संघ विनन्ती कर रहा, आचारज भगवान ॥

वैरागी मांगीलालजी को, दीक्षित यहीं पर कर लीजै ।  
जो कुछ भी और इजाजत हो, यह आज्ञा हमको दे दीजै ॥  
पूज्यवर बोले वैरागी की, माता की जब आज्ञा होगी ।  
संघ के सम्मुख हाँ कहदेंगौ, तब ही इसकी दीक्षा होगी ॥  
माता बोली हर्षित होकर, गुरुवर इसको दीक्षा देदो ।  
और मैंभी दीक्षित होती हूँ, हे पूज्यवर जी कृपा करदो ॥  
श्रीपूज्य एकलिंगदासजी ने, समय दे शिष्य बनाया है ।  
श्रीमांगीलालजी साधु वन के, ज्ञान में ध्यान लगाया है ॥४॥

मांगीलाल महाराम अथ, हुए पूर्ण विद्वान् ।

युवाचार्य पद प्राप्त कर, किये हैं कार्य महान् ॥

गुरुकी सेवा तनमन से कर, आत्म की ज्योति जगाई थी ।

देवे करके सद्वोध प्रयाँ, खोटी दूर हटाई थी ॥

जो लड़ते थे आपस में ही, वहाँ प्रेम की बेल बढ़ाई थी ।

जहाँ खून बरसता था वहाँ पर, मुनि शान्ति सुधा बरसाई थी ॥

यों घूम-घूम कर देश-देश में, ज्ञान का सूरज धमकाया ।

जो पड़े हुए मिथ्यातम में, उनको सन्मार्ग बतलाया ॥

भारत भू—को पावन करते, आपस मेवाङ्ग पधार गये ।

सवारा करके स्वामीजी, सहाड़ा में स्वर्ग सिधार गये ॥५॥

प्रेम सहित गुरुदेवके, जो गुण गावे कोय ।

सुख सपति पावे सदा, आनन्द मगल होय ॥



## परम पूज्य गुरुदेव

### मेरा जीवन

जैन परिवार में जन्म लेने पर भी १४ वर्ष की अवस्था तक समुचित जैन संस्कृति के समर्थक संस्कारों के अभाव में मैं धार्मिक कृत्यों से वंचित ही रहा। बाल्य सुलभ चांचल्य में धर्म के संस्कार एकाएक न पड सके। वही धमा चौकड़ी का शिथु जीवन व्यतीत हो रहा था। इधर पिताश्री भी घरेलू व्यवसायों में फंसाना चाहते थे। इससे मन ऊब गया, विचार आया कि कहीं नौकरी ही क्यों न कर ली जाय? मन में कई सांसारिक मनोरथ थे, पर वे स्वप्न हो गये। साकार न हो पाये। सचमुच जीवन में मानव बहुत कुछ सोचता है, पर मनुष्यका सम्पूर्ण चिन्तन कभी भी साकार नहीं होता।

### धर्म पर विश्वास

एक समय उदास मन मुद्रा में जैन साध्वी इगाम कुँवरजी की सेवा में बैठा था। उनके तपोपूत वाक्यों का मुझपर गहरा प्रभाव पड़ा, उनकी संयमशील वृत्ति ने आकृष्ट किया। सांसारिक वासनाजन्य दुखों का वर्णन श्रवण कर हृदय में तीव्र भावना ने घर कर लिया। किसी ऐसी विषम विडंबना में अपने आपको नहीं फंसाना। धर्म के प्रति आस्था बलवती हुई। संसार विषवत् प्रतीत होने लगा।

## जैन संस्कारारोपण

यह सनातन सत्य है कि मानव जन्म बहुत ही दुर्लभ है परम पुण्यादय से ही सं प्राप्त होता है। जीवन के उदर यह यही एक माध्यम है। अतः "आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्" अर्थात् जीवन में साकार करना नितांत बांछनीय है। व्यर्थ के असत्य, चोरी, अनाचार, छस प्रपंच परनिंदा आदि से अपने को बचा कर सत्पथ में प्रवृत्त होकर कर्मबंध का मार्ग-अपनाना नहीं, यह भेषस्कर है। आत्मा तभी बलवती होती है जब दुष्कर्मों से बचा कर सत्कार्य में अर्थात् सद्बन्ध हो। विवेक वृत्ति का तभी तो आगरण होता है जो मानव जीवनोत्कर्ष का सोपान है। अतः मैंने गुरुदेव से, गुरु से, निम सके जैसे प्रती को अंगीकार किया।

## गुरुवर्य की शरण में

बिना पुण्यादय के सद्गुरु का संयोग भी प्राप्त नहीं होता। "बिन्दु सत्सग न हो हि विवेका" में सचाई है। वि स १९९६ के वर्ष के प्रारम्भ में दण्डगढ़ (जिला उदयपुर) में विरागित परमाराध्य गुरुदेव की पुनीत सेवा में पहुँचा उनकी समभाषमयी मुख-मुद्रा के दर्शनानन्तर आंतरिक अभिसन्धि व्यक्त की और निवेदन किया कि मैं अपने आपको आपके-परशों में समर्पित करना चाहता हूँ। भाव्य संस्कृति में आस्था-पान ममा कौन ऐसा होगा जो शरणगत की रक्षा नहीं

करे। मुझे उनके चरणों में रहने की आज्ञा मिल गई। संयम में साधक धार्मिक पाठ याद करने लगा और यथाशक्ति संयम में रहने का अभ्यास करने लगा। गार्हस्थिक वेशभूषा में रहकर भी सावध काम में कम ही प्रवृत्ति करता था, नंगे पैर चलना, किसी भी प्रकार के वाहन का उपयोग न करना और किसी की भी आत्मा को न सताना ऐसे कुछ नियम में भावी साधना के लिए निभा रहा था। मन वैराग्य की भावनाओं से परिपूर्ण था। वृत्ति आत्मलक्ष्यी हो चली थी।

### दीक्षा प्रसंग पर

मोह के बंधन बड़े विकट होते हैं। माहनीय कर्म की प्रकृतियाँ भी सापेक्षितः अधिक ही हैं। माता पिता और परिवार के बंधुजन सर्वप्रकार के संयम ग्रहण करने में बहुत सी बाधाएँ खड़ी कर रहे थे। यहाँ तक कि पूज्य गुरुदेव को भी परिवार की ओर से वाग्वाणों का सामना करना पड़ा, पर वह तो थे “संत हृदय नवनीत समाना”। परिवारिक सदृश्यों को गुरुदेव ने समझाया और समस्या को समाधान का रूप मिला। दीक्षा की आज्ञा कठिनाई से मिली और क्रमशः संयम ग्रहण किया। एवम् हस्ती मुनि के नाम से अभिहित किया गया।

### शिष्य में संयम रीति

परम पूज्य गुरुदेव ने संयम की साधना को सफल बनाने हेतु समुचित शिक्षा, संत सेवा, परदुःख कातरता आदि का

बोध दिया। पर प्रमादबल कमी बालबुद्धि कारण कई बार आपकी आज्ञातना हुई, पर बाह रे बाह ? दया के सिंधु आपने अपने मन में कमी मी मेरे प्रति दुर्भाव ज आने दिया यह भी आपकी अनुपम सहनशीलता और उदारता। समयानुसार मीठे-मीठे उपालंभो द्वारा आपने मुझे ज्ञान दान दिया, सत्य मार्ग प्रदर्शन करवाया और जिनाजा परियालन में और उत्साहित कर समय का मार्ग प्रशस्त किया। ऐसे परमाराध्य सत-शिरोमणि शान्ति के अवतार मुनिश्वर श्री मांगीलालजी महाराज के चरणों में मुझे आज हृदयोद्गार व्यक्त करने का स्वर्णवसर मिला है, मेरा जीवन आज धन्य है।

### २४ वर्ष पर्यंत सेवा में

गुरुदेव के उपकारों का सीमा में नहीं बांधा जा सकता। वर्षमासा के अन्तर उनके महत्ता प्रगट करने में व्यसम हैं। फिर भी शम्भुओं का सहारा खेना ही पड़ता है। प्रारंभ से २४ वर्ष तक मुझे आपकी सेवा में रहकर संपन्न, शिक्षा ज्ञान-ध्यान आदि के साधन का अवसर मिला, उनसे मुझे पिताका सा स्नेह मिला, माता सी ममता मिथी और गुरुदेव सा अपूर्व रस मिथा, इन बातों के यावजूद क्या ममान कि वह संपन्न विरुद्ध काम हो जाय और आप मौन रहें। संपन्न विरुद्ध आचरण न ठा स्वयं करते थे और न कमी शिष्य के जीवन में यह दृष्टान्तापन दते थे। इन वक्तियों के सेलक का 'हापी' 'हापी' कह कर संवाधित करन थ।

## छोड़ चले गुरुदेव

पूज्य गुरुदेव की शारीरिक संपदा अस्वस्थ के कारण दिनानुदिन कम होती जा रही थी, पर आत्मिक बल पूर्ववत् बनाही रहा। स्वाध्याय, आत्मचिंतन कभी नहीं रुका। तनयका पर मन और भी सुदृढ होता चला गया। “एगे आया” ही आपका आदर्श था। अज्ञाता वैदनीय कर्म का उदय होने पर भी आपने कभी उफ् नही किया, सहाड़ा आते हुए कष्ट बढ़ने पर भी आपने अपना नित्य क्रम न छोड़ा। अंतिम समय तक “अर्हम्” की ध्वनि मुख से गूंजती रही। ऊर्ध्व-गति प्राप्त की।

## भयंकर आघात

वर्षों से जिनके चरण कमल में बैठकर, लालित-पालित होकर सभी प्रकार की शिक्षा ग्रहण की, जिनने सयम पलवाने में मोह तक का परित्याग किया। ऐसे मेरे मार्गदर्शक गुरुदेव का ऋण मैं न उतार सका इसका मुझे हार्दिक दुःख है पर उनके प्रति मेरे मन में जो श्रद्धा के कुसुम संजोये हुए है उन्हें मैं इस प्रार्थना के साथ समर्पित करना चाहता हूँ कि भवोभव में मुझे ऐसे ही गुरुदेव की प्राप्ति हो मन तो चाहता है गुरुदेव का संयोग पुनः कभी प्राप्त हो? पर यह आशा ही है।

आपके वियोग से अभिभूत  
मुनि “हस्ति” (मेवाड़ी)



# श्रद्धापुष्पाञ्जलि

रचयिता "ललित"

य-क्ति पर्वत अटक रहत है, कितना मी हो पवन मन्त्र ।  
दि-गना नहीं मन्त्रस्त कार्य से, कष्टों के दस आवे अस्त्र से ।  
त-म का राज्य निकालन हेतु, भास्कर ही परगटता है ।  
शु-षि मानव की सत्संगत से, सौम्य जीवन बन जाता है ।  
रु-चि सत्त्व भूम भाव से हरदम, मन में स्मरें छाटा है ।  
दे-ह भारी से ऋषि पुकारे, सत्य धर्म का धरम गहो ।  
ष-न्दन चिन्तन मनम तीन य, उपा काल मे नियमित हो ॥  
भी-मिनरानी शिष सुख दानी, पूर्ण शान्ति का सागर है ।  
मां-दि हृदय के भाष शुद्ध हो, यही शान्ति का आगर है ॥  
गी-र मनु की उज्ज्वल हिम सम, उस को मन से नित सावे ।  
छा-ओ सद्गुरु जीवन में शुभ, सहनशील पथ प भाष ॥  
स-ज्जादयासे मानव बनता जैसा आगम में बरसाया ।  
जी-वन सफल उसी का होगा, सच्चे पथ को अपनाया ॥  
म-हिमा छासों क्यों तक की दुनिया में फिर आवगी ।  
की-र्ति वदेगी सब विश्व में आयणी टन्त्र जारहेगी ॥  
ज-गत्वासी जीवों पर करुणा, भाष सदा करत रहिए ।  
य-म की प्राप्त टमेगी पण्डित, मरण धरण को शुभ छहिए ॥  
ज्यों शरद काल का चान्द सितारा, प्रकार सत्य भाहित होना ।  
ज्यों "पुष्कर मुनि" गुरु गुणों का, धुमरण कर नित सुत होता ॥

श्रीः

श्रद्धाञ्जलि

वि  
भा  
ग

तीसरा

## ✽ संयम साधना के सफल साधक ✽

छे मदन मुनिजी "पयिक"

जिन्दगी ऐसी बना, जिन्दा रहे "दिल धाद" तू ।  
जब न हो दुनियाँ में तो, दुनियाँ की भाए याद दू ॥

यह संसार एक उद्यान के समान है जैसे उद्यानमें कई प्रकार के पुष्प हात है, उनमें कुछ तो सुगन्ध युक्त होते हैं, कुछ निर्गन्ध ।

सुगन्ध युक्त पुष्प समाहत होते है, वे अपनी महक छुटा कर जन जन को मफुद्विस्त कर मिट जाते हैं फिर भी सोम उनके छिये छुभाये रहते हैं ।

उसी प्रकार मानव भी जग उद्यान का एक पुष्प है । यदि उस में सद्गुण की सौरम होता है तो वह जन जन का प्यारा बन जाता है, उसके जाने पर भी जनता उन से याद करती रहती है ।

सद्गुण सौरम से हीन पुरुष पचास पुष्प के समान उपेक्षा का पात्र बनता है, उसके जाने पर भी लोगों में कोई खास प्रतिक्रिया नहीं होती, बनता उसे याद नहीं करती ।

मैं जिस महात्मा का परिचय देना चाहता हूँ उनका भीषण सषगुण सौरमी पुष्प के समान था, म कि निरर्थक पचास पुष्पवत्

सरल स्वभावी, तपो निधि, दीर्घ संयमी श्रद्धेय गुरुदेव श्री मांगीलालजी म. सा. उन महापुरुषों में से एक थे, जिन्होंने जन्म ले कर मानवता के लिये कुछ काम किया, न कि केवल धरा को भार दे कर ही चलते वने।

भीलवाड़ा जिलान्तर्गत "राजकरेड़ा" ग्राम में संचेती कुलमें जन्म ले कर भी गुरुदेव कार्य क्षेत्र केवल करेड़ा ही नहीं रहा ! आयु के बढ़ने के साथ ही कार्य और यश भी सीमाएँ तोड़ते बढ़ते गये।

यह माता मगनवाई के सुसंस्कारों का ही पवित्र फल था कि जब आपकी उम्र केवल १० वर्षकी थी; तभी माता के साथ खुद भी, परम प्रतापी चारीत्रचूडामणि पूज्य श्री एकलिंग-दासजी म. सा. के पास दीक्षित हो गए और सयम साधना के साथ संघसेवा का पवित्र संकल्प ग्रहण कर लिया।

म. श्री दीर्घकाल गुरु सेवा में रहे उसका महान फल निर्जरा तो मिलाही साथ ही शास्त्रज्ञान रूपी उत्तम धन भी प्राप्त हुआ।

अनुभवों, विचारों को प्रकट करना भी एक "कला" है, इस दृष्टि से भी आप पीछे नहीं थे। कहने का तात्पर्य यह कि आपके प्रवचन अक्सर "सरल" और मृदु होते थे, जिनको श्रोता सहज ही ग्रहण कर लेते थे, उनका असर भी बहुत अच्छा पड़ता था। आपके प्रवचनों द्वारा कई धार्मिक सामाजिक

आपका शुद्ध संयम से सजा हुआ जीवन हम सब क सिये आदर्श और प्रेरणादायक था। यही कारण है कि मैं भी की मधुर स्मृति रह रह कर हृदय पट पर विद्युत् की तरह चमक उठती है। समय समी को क्षीर्ण बनाता है इस सिद्धान्त के अनुसार समयके साथ यद्यपि स्मृतियाँ घूँघली पड़ती जाती हैं फिर भी हृदय उन्हें भूलना नहीं चाहता।

जिन लोगोंने मैं भी को निष्कट से देखा है उनके महान जीवन को परखा है वे गुरुदेव भी क साफोचर गुण, अद्भ्य साहस, इह स्नान और सेवा भावना को कभी भुला नहीं पाएँगे।

किसी मधुर स्मृति की माँति उनकी याद उभरती रहेगी।

“समर्प्य गोयमे मा पमायए”

यह महाशरीर ने फरमाया है इसका सीधा अर्थ है “सग माभ मी पमाव मत करो” यह छत्र स्व मैं भी के जीवन में अक्षरशः उतर चुका था। प्रतिक्षण कुछ करते रहने की प्रवृत्तिने आपको उच्च कोटि में पहुँचा दिया।

सयम पान्शने में आप मायः सजग रहते थे और उसी का यह पवित्र फल मिला कि अन्त समय में मैं त्याग प्रत्याग्न्याम कर पाएँ और समाधि मरण की प्राप्त हुए।

संसार में आपको अगणित जीवन ऐसे मिलेंगे जिनके समार स षष्ठ जाने क उपरान्त लोग निन्दाएं करते हैं। क्यों कि येमे जीवन मायः कई व्यक्तियों के कष्ट का कारण होते हैं।

इनके विरुद्ध कुछ ऐसे जीवन होते हैं जो चले तो जाते हैं किन्तु उनका जीना सम्बन्धित परिवार, समाज प्रान्त या राष्ट्र के लिये दुःख का विषय बन जाता है। स्व. महाराजश्री का जीवन भी इसी तरह का था, उनके चले जाने से समाज को खेदानुभव हो रहा रिक्तता-खल रही। यह उनके जीवन की महानता का ही परिणाम है। -

दिवंगत आत्मा को शान्ति प्राप्त हों यही शुभ कामना।

× × ×  
पं. प्रवर आचार्यश्री आनन्दऋषिजी म. सा. के

### श्रद्धा सुमन

सहाड़ा सच के पत्र द्वारा संयमनिष्ठ-तपोनिधि श्री मांगीलालजी म. सा. के स समाधि स्वर्गवास के समाचार जान कर खेद हुआ। मुनि संस्था में एक मुनिराज की स्वामी हुई। संसार अनित्य है, मानव जीवन क्षण भंगुर है, इस प्रकार जिनेश्वर देवकी वाणी है। उसे ध्यान में लाते हुए पं. मुनीश्री हस्तिमलजी म. आदि ठा अपने दिल को समाधान देवें।

पं. मुनि श्री मांगीलालजी म सा. के अन्तिम समय के प्रसंग पर श्री सौभाग्य मुनिजी उपस्थित हो गये थे, यह संतोष का विषय है। अपने पूर्ण विशुद्ध धर्म स्नेह की वृद्धि होती रहे ऐसा चाहते हैं।

प्रेषक

पं. विद्याभूषण मणि त्रिपाठी

पं प्रवर उपाध्याय श्री हस्तिमलजी म सा के

## श्रद्धा सुमन

जोधपुर भावक सघ के द्वारा ज्ञात कर उपाध्याय में समा  
का आयोजन किया, स्व मुनिश्री के गुणों पर प्रकाश डालते  
हुए परमपूज्य उपाध्यायश्रीने फरमाया कि—

मुनिश्री के दिल में भ्रमण संघ के लिय बड़ी भासा व  
उत्सुकता थी। उनके निधन से मेवाड़ी संप्रदाय की ही  
सति नहीं हुई है अपितु भ्रमण संघ में भी एक स्वामी अतुमव  
होती है। निष्कट मविष्य में पूर्ति होना असंभव है। उपाध्याय  
श्रीने आगे फरमाया कि, सतों का समाधि मरण धोषनीय  
नहीं होता है। काल की गति तो सब पर अयापित प्रभाव  
हासती है।

स्वर्गीय संत की स्मृति में सभी त्याग वैराग्य की इच्छि  
करें यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जली है।

मेपक

गोकुल चन्द

C/o श्री व त्या जैन भावक सघ

भूपाध्याय

पं. रत्न मन्त्री श्री पृथ्वीचन्द्रजी म. सा. व उपाध्याय  
श्री अमरचन्द्रजी म. सा. के

## श्रद्धा सुमन

श्रद्धेय तपोनिधि श्री १००८ श्री माँगीलालजी म. सा. के आकस्मिक स्वर्गवास के समाचार से शोक की लहर व्याप्त हो गई ।

श्रद्धाञ्जली अर्पण करते हुए म. सा. ने स्व. मुनिश्री के दिव्य जीवन पर प्रकाश डाला ।

जनता को परिचय देते हुए म. श्री ने फरमाया कि स्वर्गीय मुनिश्री बड़े शान्त व सरल एवं मधुर प्रकृति के सन्त थे । उनके मंगल मिलन से प्रायः सर्वत्र हर्ष और आनन्द का वातावरण उपस्थित हो जाता था । उन का आकस्मिक स्वर्गवास स्था जैन संसार के लिये एक बहुत बड़ी "क्षति" है जिसकी निकट भविष्य में पूर्ति होना असम्भव है । साथी मुनियों के प्रति समवेदना प्रकट करते हुए उपाध्याय श्री ने आशा प्रकट की है कि पं. मुनिश्री हस्तिमलजी म. अपने गुरुदेव के चरण चिह्नों पर चल कर दिवंगत गुरुदेव के तथा श्रमण संघ के गौरव को अधिकाधिक उंचाई पर ले जाएँगे । और जैन समाज में गुरुदेव को चिर यशस्वी बनाएँगे ।

प्रेषक :—

जैन संघ लोहामण्डी  
"आगरा"



पं प्रवर्तक श्री किस्तूर चन्द्रजी म सा के

## श्रद्धा सुमन

प रत्न श्री मांगीलालजी म सा के निधन के समाचार  
पुन कर बहुत दुःख पैदा हुआ ।

स्वर्गीय मुनिश्री परउपकारी मद्रिक स्वमाजी, बहुत प्रेमी  
और भूरागी थे । परन्तु काँस के सामने किसी का धोर  
नहीं चसता है । दिवंगत आत्मा को शान्ति मिछे ।

इस दिन पहले धर्म तपस्वी श्री भूरासासजी म सा  
देबलोक हो गये थे दूसरा बच्चापात श्री मांगीलालजी म सा  
के अपसान से मया । मेबाइ में दो रत्नों की स्वामी हो गई  
उसकी पूर्ति होना मुश्किल है ।

मेपक :-

टीकमचन्द्र (ब्याबर)

पं. प्रवर मन्त्री श्री अम्बालालजी म. सा. के

## श्रद्धा सुमन

परम श्रद्धेय श्री मांगीलालजी म. सा. के आकास्मिक स्वर्गवासने मेरे दिल को हिला दिया ।

यों तो “ जातिरैव ही भावानां विनाश हेतुरिश्यते ” इस सिद्धान्त के अनुसार सभी को लुप्त होना ही पडता है किन्तु उन जाने वाले पदार्थों में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते है जो हमेशा के लिये स्मृति पट पर अंकित रहते हैं ।

स्वर्गस्थ महात्माश्री मांगीलालजी म. सा. का जीवन भी वैसा ही था जो विस्मृति से आवृत नहीं हो सकता है ।

स्व. म. श्री से मेरा लम्बा सम्पर्क रहा कई तरह से मुझे उनके जीवन का परिचय मिला, अनुकूल प्रतिकूल सभी परिस्थितियों में उन्हें समझने का मौका मिला, उससे मैं इतना तो अवश्य कह सकता हूं कि म. श्री का हृदय भद्रिकता से ओत-प्रोत था. सरलता उनके जीवन का अग वन चुकी थी यही कारण था कि उनके जीवन में कोई उलझन स्थायी नहीं रही ।

इस वर्ष म श्री के सम्पर्क को प्राप्त करने का मैंने प्रयत्न अवश्य किया था किन्तु दैवयोग ही कहिये कि कुछ ऐसे कारण बने कि हम नहीं मिल सके ।

बिमारी के समाचार प्राप्त होने पर बिहार होमे बाम्बा या कि दिवंगत हमे के दर्दनाक समाचार मिल गए । मैं बरू सा रह गया । पार्ष्णिच दह स भले ही भिन्न रहे; मानसिक रूप से मैं म भी के पास था और म श्री मेरे पास ।

अन्त में हार्दिक भद्रा पुष्प अर्पित करता हूँ जो उनके अपने ही हैं ।

प्रेमक—

मन्मथलाल बडामा

देवप्रसाद

पं. प्रवर मन्त्री श्री हीरालालजी म. सा. के

## श्रद्धा सुमन

पं. रत्न श्री मांगीलालजी म. सा. के स्वर्गवास की बात  
जान कर बहुत दुःख हुआ ।

मन्त्रीजी म. सा. ने शोक समवेदना प्रकट करते हुए  
श्री. मुनिश्री हस्तिमलजी म. सा. आदि ठाणा ३ तीन को धैर्य  
प्रदर्शित करने का संदेश कहलाया है ।

प्रेषक:-

निर्मलकुमार लोढ़ा (निम्वाहेंड़ा)

प मन्त्र मन्त्री श्री पुष्कर मुनिजी म सा के

## श्रद्धा सुमन

त्र मुनिधी में सरलता नम्रता एव मिलनसारता  
अपूर्व गुण थे । वे कमी सुलाये नहीं जा सकते ।

स्व मांगीमासजी म सा की स्मृति स्वरूप निम्नप्रकार पड़िये:

मनहर छन्द

सांपरी घृत और मूरत मोहनि भति,

सुदुल व्यवहार और शुद्ध मन धारे थे ।

सीधे सावे भोले माछे, विनय धर्म पाछे,

मेदपाटी जनता के, सच्चे थे सिधारे थे ॥

कहु कोई लास फरे सुपचाप सह छेते,

कमी इस देते समा धर्म को धारे थे ।

ऐसे मुनि मांगीमास, 'जैनधर्म प्रतिपास,

स्वर्गको सिधार, "मन्त्री पुष्कर"को प्यारे थे ॥

आशीर

पं. रत्न बहुश्रुत श्री समर्थमलजी म. सा. के

## श्रद्धा सुमन

पं. मुनिश्री मांगीलालजी म. सा. के स्वर्गवास के समा-  
जान कर खेद हुआ ।

मुनिश्री ने लघुवय में दीक्षा ले कर ज्ञानाभ्यास किया,  
अन्तिम समय में संथारे पूर्वक समाधि मरण हुआ ।  
साधि मरण आत्म शुद्धि का प्रतीक है ।

आप चिर प्रवर्जित संत थे, आप के स्वर्गवास से जैन-  
जाज की महती क्षति हुई है किन्तु काल कराल की विचित्र  
ते समझ कर उन के शिष्य श्री हस्तिमलजी म. आदि सन्त  
धारण कर ज्ञान ध्यान बढ़ाते हुए जिन शासन को  
पावें ।

प्रेषक:-

तोलाराम हीराचन्द (देशनोक)

पंजाब के पं श्री सत्येन्द्र मुनिजी म के

### श्रद्धा सुमन

संरक्ष स्वमाषी ध्वान्त मूर्ति बाल ब्रह्मचारी भी मांगीलास  
म सा के अचानक स्वर्गवास के समाचार सुन कर गए  
आघात लगा ।

ऐसे महा पुरुष का इस समय देखलोक हो जाना अप-  
स्थित, समाप्त के लिये बहुत हानि कर हुआ ।

शुभ कामना करते हैं कि ऐसे महा पुरुष को फिर शान्ति  
प्राप्त हों । इस्तिमसजी म आदि सन्त वैर्यता धारण करें ।

“विप्रयनगर”

×

×

×

पं श्री समीरमुनिजी म सा के

### श्रद्धा सुमन

पं श्री मांगीलासजी म सा का स्वर्गवास के अचानक  
समाचार जान कर बहुत दुःख हुआ । मुनिभी के स्वर्गवास  
पं श्री इस्तिमसजी म आदि मुनिप्रिय को पासक की ए  
बहुत बड़ी कमी हुई । मुनिप्रिय का मुनिभी के वियोग दुःख  
यहां से मुनिभी समबदना भेजते हैं ।

वयोवृद्ध मुनिश्री गोकलचन्द्रजी म. सा. के

## श्रद्धा सुमन

पं. मुनिश्री मांगीलालजी म. सा. के स्वर्गवास के समाचार सुन कर बड़ा भारी आघात लगा। शासनदेव से प्रार्थना है कि स्वर्गस्थ आत्मा को शान्ति प्राप्त हो। काल कराल के सामने किसी का बश नहीं चलता। जैसे महापुरुष जाते हैं वैसे महापुरुषों की पूर्ति होना मुश्किल है।

प्रेषक:-

जैन श्रावक संघ

मांडलगढ

×

×

×

पं. प्रवर श्री हगामीलालजी म. सा. के

## श्रद्धा सुमन

मेवाड़ के प्रसिद्ध सन्त उग्र विहारी पं. रत्न श्री मांगीलालजी म. सा. के अचानक स्वर्गवास हो जाने के समाचार जान कर बड़ा खेद हुआ। असमय में ही मुनिश्री का वियोग हो जाना खटकने जैसी बात है।



मुनि भी शान्त प्रकृति के थे, मिसलनुसार अनुभवी थे।  
ऐसे सन्तों की क्षति पूर्ति होना असंभव है काल की गति  
विचित्र है।

स्वर्गीय मुनिभी का देवगढ़ चातुर्मास से ही अब तक  
काफी रूप से स्नेह सम्बन्ध बना आ रहा था अब सारा  
उधर दायिस्त्रोप रत्न मुनिभी इस्तिमसजी म सा पर आ  
गया है आशा है आप भी स्व मुनिभी की भाँति स्नेह सम्बन्ध  
बनाया रखेंगे।

मेपक-  
-

पूनमचन्द जैन (अममेर)

× × ×

बि महासतिजीभी सौभाग्यकुंवरजी म सा के

श्रद्धा सुमन

स्वर्गवास के समाचार जान कर महान खेद हुआ।  
स्व गुरुदेव भी सरस स्वभाषी मद्रिक आत्मार्थी थे महाराजभी  
का वियोग रह रह कर स्वकृता है।

मेपक-  
-

शान्तिवास जैन

विभिन्न श्रावक संघों के हार्दिक

## श्रद्धा सुमन

श्रद्धेय श्री मांगीलालजी म. सा. के स्वर्गवास होने के समाचार सुनते ही सारे गांव में सन्नाटा छा गया। मानों दुःख का वादल बरस पड़ा हो। सब के हृदय पर भारी चोट पहुंची, बाजार बन्द कर श्रद्धाञ्जली अर्पित की गई।

श्रावक संघ भादसोड़ा

x

x

x

स्वर्गवास के समाचारों से शोक छा गया बाजार बन्द रखा, दया उपवास आदि किये। पशु पक्षियों को दान दिया। श्रद्धाञ्जली अर्पित की।

श्रावक संघ कपासन

x

x

x

स्वर्गवास के समाचार पढ़ कर अत्यन्त दुःख हुआ कुछ दिन पहले गुरुदेव श्री भारमलजी म. सा. का स्वर्गवास हुआ उसे भूले ही नहीं फिर इस कालकराल ने समाज पर आफत पर आफत कर दी। हम स्व. आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जली अर्पण करते हैं।

धर्मदास जैन मित्र मण्डल रतलाम

C/o लखमीचन्द्र जैन

x

x

शोक समाचार सुन कर सब को खेद हुआ गुरुदेव के स्वर्गवास से सब में अघेरा छा गया। महान पुरुषों के दर्शनों का लाभ नहीं ले सके यह हमारे दुर्भाग्य की बात है।

जिनेन्द्र देव से प्रार्थना है कि स्व गुरुदेवभी का शान्ति प्रदान करें।

जैन भाषक संघ अजीतगढ़

× × ×

श्री मांगीलाक्ष्मी म सा के स्वर्गवास के समाचार सुन कर संघ को बड़ा खेद हुआ।

स्व मुनिभी जैन समाज की एक विभूति थी उनके स्वर्गवास से समाज की क्षति हुई है उसकी पूर्ति नितान्त असम्भव है। स्व आत्मा को चिर शान्ति प्राप्त हो।

यहां विराजित वि महा सतियांजी भी पद्मानी म मे मी सखेद भद्राक्षरी अर्पित की है।

मन्त्री श्री व स्या जैन भाषक संघ  
सनवाड़

× × ×

स्वर्गवास के समाचार मिलते ही भाषक आशिका अन्तिम दर्शन को पहुंचे।

शोकसमा का आयोजन किया।

यहां विराजित पं एरन भी कैपलमुनिभी म सा वि महा सतियांजी भी सुगम हंबरजी म सा व मत्सर व्याख्याता

वि. श्री प्रेमकुंवरजी म. सा. ने स्व. आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जली अर्पित की, नवकार मन्त्र का ध्यान कर शोक प्रस्ताव पारित किया ।

मुनिश्री ने प्रवचन में फरमाया कि इस असें में जो स्योद्ध, तपस्वी, शानी एवं प्रभावशाली मुनिराज व महा प्रतियांजी की क्षति हुई है उस की पूर्ति अभी नहीं हो पा रही है ।

मन्त्री सोहनसिंह

भीलवाड़ा ( मूवालगंज )

×

×

×

पं. मुनिश्री मांगीलालजी म. सा. के स्वर्गवास के आचार से संघ को भयकर चोट पहुंची ।

स्व. म. श्री ने सं. २००० में अरावली के घने जंगलों में पार कर एकान्त में बसनेवाले हमारे छोटे से क्षेत्र को खन किया । अमृतत्राणी का पान करा कर सद्वोध दिया । श्री ने वहां चातुर्मास भी किये, उन्हीं उपकार का यह हान फल है कि हम आज भी मुनिराजों के उपदेशों का अभ उठा पाते हैं । म. सा. सरल स्वभावी भद्रिक एवं प्रवान थे । वे आज हमारे बीच नहीं रहे फिर भी उनको न कभी भी नहीं भूल सकते ।

शासन देव से प्रार्थना है कि स्व. आत्मा को चिर शान्ति प्राप्त हो ।

पं मुनिभी इस्तीमलजी म सा आदि सतों के मा  
हमारी सद्भावना हैं और आशा करते हैं कि मुनि भी स  
म सा के बतमाए माग का अनुसरण कर हमें ज्ञान व  
लाभ देते हुए भगवान महावीर के शासन की सेवा कर  
रहेंगे ।

कनैयालाल कोठारी  
भी व स्या जैन भावक सं  
भागपुरा

×

×

×

म्यर्गवास के समाचार मिलते ही नगर में सभाटा छा गया  
मानों दुःखपूर्ण बादल परस पड़ा हृदय पर मारी चाट पडुची  
बाजार बन्द रक्खा । अगता पलाया व शोक समा मायोमित  
कर अज्ञानली अर्पित की गई ।

मोहनलाल चौहान एवम  
भी व स्या जैन भावक सं  
पलाया कर्सा

×

×

×

बाल ब्रह्मचारी पं मबर अद्वेय एवदेवभी के म्यर्गवास के  
समाचार से सभाटा व्याप्त हो गया । धर्म स्थान में अज्ञानली  
अर्पित की ।

एवदेवभी मद्रिक मकूनि के एवं सोम्य स्वभाव के थे ।  
उनकी बाणी में मधुरता थी । एवदेवभी का स्वर्गवास हो

ये किन्तु इनकी शिक्षाएं तथा वाणी हर समय याद आती है।

जैन श्रावक संघ पड़ासोली

x

x

x

वाल ब्रह्मचारी पं. रत्न श्रद्धेय गुरुदेव श्री मांगीलालजी  
I. सा. के स्वर्गवास के समाचार अचानक सुने। खबर सुनते ही सारे गांव में यकायक दुःखमय सन्नाटा छा गया।

अन्तिम दर्शन हेतु श्रावक श्राविका सहाड़ा की ओर उमह पड़े।

गुरुदेवश्री कोमल शुद्ध स्वभावी एवं आदर्श धर्म प्रचारक थे जिनकी वाणी अमृतमय तथा हृदय लुभाने वाली थी।

स्वर्गस्थ आत्मा को चिर शान्ति मिले।

श्री व. स्था. जैन श्रावक संघ  
कुंआरिया

x

x

x

स्वर्गवास के समाचार सुन कर खेद हुआ। बाजार बन्द रक्खा। स्वर्गीय आत्मा को शान्ति प्राप्त हो।

जैन श्रावक संघ धारड़ी

x

x

x

## भक्तिवान् भावकों के हार्दिक

### श्रद्धा सुमन

पूर्व अविश्वास के साथ गुरुदेव भी मांगीलाक्ष्मी म सा के स्वर्गवास के समाचार अफवाह के रूप में सुने, किन्तु अविश्वास को विश्वास के रूप में परिणत होते देर न स्मिी ।

म सा के स्वर्गवास से उनके भक्तों को खेद हुआ यह घर्षणाधीन है क्यों कि वे समदृष्टि थे और सब पर उनका समान प्रेम था । इस कर मिलना सब की कुशल पूछना उनकी स्वामयिक बात थी वे बड़े धीर और गमीर थे । यह मेरा निज अनुभव है क्यों कि हम घण्टा एकान्त में बैठ अध्यात्मिक धर्म चर्चा किया करते थे ।

हमारी पारस्परिक चर्चा में हो सकता है कभी मेरे द्वारा कटु शब्दों का प्रयोग हुआ हो किन्तु म सा की ओर से कभी भी कटु प्रतिक्रिया नहीं हुई जिस से मेरे हृदय को ठेस लगे ।

शुभ व किस स्नेहिल दृष्टि से निहारते थे और मेरे प्रिय उनके अन्तःकरणों में कितनी जगह थी, यह तो बड़ी व्यक्ति अनुमान लगा सकता है मिठोंम हम दानों का एकान्त विचार विमर्श दया है ।

पर जैसे अनभिन्न और अयोग्य के प्रति भी म सा के

कैसे उंचे भाव थे, यह समय समय पर उनके मुखारविन्द से प्रकट हुआ करते थे ।

ऐसी पवित्र आत्मा का यकायक उठ जाना हमारे लिये असह्य हो रहा है । किन्तु क्या किया जाए, कालकराल का कार्य अपरिहार्य है ।

मैं श्रद्धेय श्री हस्तिमलजी म. सा. से आशा करता हूँ कि वे धैर्यता धारण करेंगे और अपने भक्तों पर वैसा ही अनुराग रखेंगे जैसा कि दिवंगत म. सा. रखते थे ।

डा० पन्नालाल लोढा  
उदयपुर

×

×

×

एक आकस्मिक झटके के साथ पं. मुनिश्री मांगीलालजी म. सा. के स्वर्गवास के समाचार सुने । हमारे सम्पूर्ण परिवार को बहुत खेद हुआ स्व. महाराज सा. जैन जगत की महान निधि थे । उनके जाने से जो महान क्षति हुई है, उसकी पूर्ति नितान्त असंभव है ।

भावी को मंजूर था उसके आगे किसी की नहीं चल सकती है ।

प्यारचन्द जैन  
काँकरवा

×

×

×



समाचार सुने कर बहुत रंम हुआ । क्या करे इसमें  
 किसी का जोर नहीं चल सकता है मेरा तो गुरुदेव से २३  
 वर्ष का पुराना सम्बन्ध था ।

गुरुदेवभी बड़े कृपालु और सयमी महा पुरुष थे । उन्हें  
 चिर शान्ति प्राप्त हो ।

मांगीसाह जैन  
 कालादेह

x

x

x

समाचार सुन कर शोक की लहर दौड़ गई । आप का  
 जीवन एक महान ज्ञानवेत्ता व विद्वता से परिपूर्ण था ।  
 आप का धर्म भेद और शिक्षाएं आदर्श रहे हैं । जो भी एक  
 बार आप का संपर्क या खेता वह आप के गुणों व वाणी से  
 प्रभावित हो जाता था । आप महान उच्च कोटि के सतों में  
 से एक थे । आप का त्रियोग सुझाया नहीं जा सकता है ।  
 कास की गति विचित्र है ।

उनके निधन पर हम शोक प्रदर्शित करते हुए चिर  
 शान्ति की कामना करते हैं ।

स्व श्री कन्हैयालालजी म सा के स्वर्गवास का खेद  
 तो अभी सुझा ही नहीं पाए कि यह दूसरा बच्चा और  
 रूग गया ।

मुनित्रय धैर्यता धारण करें ।

नेमीचन्द भंवरलाल रूपावत  
मनासा (म. प्र.)

x

x

x

स्वर्गवास के समाचार सुन कर हम को बहुत ही बड़ा खेद हुआ । हम को गुरुदेव के दर्शन नहीं हो सके, कितने अभाग्य हैं ।

इस वार तो हमारा अनुमान था कि निकट चातुर्मास है अतः दर्शनलाभ मिल सकेगा किन्तु.. ।

मुनिराज धैर्यता धारण करने का कष्ट करें ।

जवाहरलाल गान्धा  
“भीम”

x

x

x

अति ही खेद का विषय है कि पं. रत्न श्री मांगीलालजी म. सा. आज हमारे सामने नहीं रहे हैं । मुनिश्री की सेवा का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ ।

वे अति ही सरल, शान्त, व शीतल स्वभाव के थे । वे सागर के समान थे सर्वगुण संपन्न हृदय को लुभाने वाले महापुरुष थे ।

यह हमारे पुण्यों की कसर है कि, एक एक कर के ऊंचे से ऊंचे महापुरुष संत रत्न, हम से विदा होते जा रहे हैं.

मानों संसार की पाप प्रगति को वे नहीं देखना चाहते हैं।  
 स्व महात्मा को चिर शान्ति प्राप्त हों।

ओंकारलाल बेसमी  
 गागेड़ा (विजयनगर)

x

x

x

स्वर्गवास के समाचार सुन कर सभाटा छा गया।  
 बामार बड़ कर, शोक मनाया। शासन देव से प्रार्थना है कि  
 स्वर्गीय आत्मा को चिर शान्ति प्राप्त हो।

छीतरमल गोखर  
 राजाजी का करेड़ा

x

x

x

मुनिवर श्री मांगीलासजी महा सा स मिलन का  
 सुम्बसर मुझे उदयपुर में प्राप्त हुआ था, अधिक सानिध्य तो  
 प्राप्त न हो सका पर जो स्वल्प क्षण उन के साथ व्यतित  
 किये वे अपिस्मरणीय रहेंगे। सयम मार्ग में उन की प्रवृत्ति  
 इतनी उदात्त थी कि कितनी भी आपसिये-द्विपसिये क्यों  
 न उठानी पड़े—कमी विबलित न होते थे। रोगप्रस्त वेह होते  
 हुए भी कमी उन मे चिकित्सा की पर्याह न की। यरिक वे  
 इतने सकोचि थे कि अपनी पीड़ा व्यक्त ही न करते थे।  
 ऐसे मुनियों से ही महावीर का मार्ग यम्ता है। उन की

वैयक्तिक वृत्ति और सरलता ने मुझे प्रभावित किया। उनकी आत्माको शान्ति मिले यही अभ्यर्थना।

उदयपुर

मुनि कान्तिसागर

४-६-६४

×

×

×

॥ श्री ॥

दुःख ? दुःख ? ? घोर दुःख ? ? ?

परम श्रेष्ठ शास्त्रवेत्ता वीर शासन प्रदीप बाल ब्रह्मचारी पं. गुरुवर्य मुनिश्री मांगीलालजी महाराज आज इस ससार में नहीं है। जैन शासन का चमकता चांद अस्त हो गया। आप के भव्य लिलाट पर ज्ञान और वैराग्य दमकता हुआ नजर आता था। शांतता, सहनशीलता, दयालुता, धीरता, वीरता, तो आप में कूट-कूट भरी थी। आप का व्याख्यान जनता को अतीव प्रिय था। आप महोपकारी, क्रांतीकारी महापुरुष थे। गुरुदेव, मेवाड़ी मुनिश्री रचित ज्ञान खजाने का प्रचुर प्रचार कर के भारत के कोने २ में आप ही ने पहुंचाया है। आप के आकस्मिक वियोग से सारा जैन समाज अत्यन्त क्षुब्ध है। मानो—एक रंक के हाथ से अन्मोल हीरा खो गया है। गुरुदेव ? आपको स्वर्ग की अप्सराओं ने खेंच लिया।

तड़फते हुए चतुर्बिध सघ को निराधार छोड़ कर चले गये ।  
 क्याल्लु घेस ? आपकी आत्मा को अखंड शान्ति प्राप्त हो,  
 यही कृपा पाम शिष्य की भद्राञ्जली है ।

घरण मेवक-

कन्दैयासासु सिंगधी

मइलों की पीपली (राम)

॥ दोहा ॥

गमीर पुत्र गमीर ये, चचस नही तिल मात ।

रात दिवस रहते मगन, मगन मात अंग जात ॥



श्री

## शुद्धाशुद्ध निर्णय पत्र

पृष्ठ लाइन	असुद्ध	सुद्ध
७ १९	धर्म	धर्म
९ २६	काधा	कीधा
११ १६	पौर	और
१७ १	भविष्य	भविष्य
१७ ६	भांगीलाल	मागीलाल
१८ १२	वनाने	वनाने
१९ २५	परवार	परिवार
२४ १४	वहे	वड़े
२६ १	तेजस्वी	तेजस्वी
३१ १९	धम	धर्म
३१ २५	दापक	दीपक
३४ २३	अयन्न	अयन्त
३८ २१	प्रगजित	प्राजित
३९ ११	सध	सप
४० ११	गुग्दरी	गुग्दरी

४० — १९, नीलाहन के नीचे । वि. सं. १९०९ टका चौनामा शुद्धाशुद्ध

शुभ	मास	अक्षय	शुभ
१०	१७	निन्दी	निन्दी
४०	२	वर्षा	वर्षा
४३	१०	परिप्लव	परिप्लव
४४	२०	वर्षा	वर्षा
"	"	वर्षा	वर्षा
४६	१८	दुर्गा	दुर्गा
४७	५	परिप्लव	परिप्लव
"	८	वर्षा	वर्षा
"	१८	दुर्गा	दुर्गा
४९	११	विश्वकर्मा	विश्वकर्मा
"	२५	वर्षा	वर्षा
५०	७	वर्षा	वर्षा
"	१६	वर्षा	वर्षा
५४	५	मोक्षदा	मोक्षदा
"	९	वर्षा	वर्षा
५७	२४	वि	वि
६४	२०	वर्षा	वर्षा
७१	१८	वर्षा	वर्षा
७७	१	वर्षा	वर्षा
८४	१३	निर्वाण	निर्वाण
८६	१४	वर्षा	वर्षा

पृष्ठ लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
८६ २४	ग्रीष्य	ग्रीष्म
८६ २६	सयभी	संयमी
९० १	निवृत	निवृत्त
” २	संध	सघ
” १०	पघारे	पधारे
९१ १२	भवन	भवन
९३ ८	२॥ सेर	२॥-२॥सेर
९५ ८	समीदल	समीदल
९५ १०	नहो	हो
९६ २०	श्रमणी	श्रमण १
९७ २०	साथा	साथी
९८ २	मी	भी
९८ १५	आरि	आदि
९८ १८	प्रयक्	प्रयक्
९९ २	कानपुर-	कनकपुर
१०० १६	अनावस्था	अनावस्था
१०१ २५	की	गी
१०३ १८	ना	सा
१०५ १०	पुन्ने	पुन्ने
१०७ ५	पुटनी	पुटनी
१०७ ८	नय	नंद



पृष्ठ	कारण	अध्याय	शुद्ध
११०	२७	दगा	दूगा
१२६	९	कर	होकर
१२७	२३	खूंगा	खालूंगा
१३०	७	कति	बत्ति
१३२	६	चिते	चिते
१४९	४	दमछं	दमालं
१५०	६	प्राचाम	प्राचीन
१५	१६	सबम	संबम
१५४	१९	क्षमा	क्षमा
१५४	४	मेह	महे
१५६	१५	इम्य	इम्य
१६५	१	माहनीम्य	मोहनीम्य

इसके असावा और भी गलतियाँ रह गईं हो तो पाठक सुध कर के पढ़ें ।

